पौष माह, कृष्ण पक्ष 21 वर्ष, अंक 1 पृष्ठ 8 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज रविवार 23 जनवरी 2022 विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

गतिरोधक की बजाय गतिवर्धक बन रहे हैं आकांक्षी जिले: मोदी

नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश को नया लक्ष्य देते हुये कहा कि सरकार ने 22 राज्यों के 142 जिलों की पहचान की है, जो सिर्फ एक या दो मानकों पर पिछड़ रहे हैं। उन्होंने केंद्र और राज्य सरकारों से इन जिलों को सभी मानकों पर अग्रणी बनाने की चुनौती के लिये एकजुट होकर काम करने का आह्वान किया। प्रधानमंत्री ने स्पष्ट किया कि वे आकांक्षी जिले नहीं हैं, बल्कि विकास की दौड़ में काफी आगे निकले हुये हैं। प्रधानमंत्री मोदी शनिवार को प्रमुख सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन पर देश के विभिन्न जिलों के जिलाधिकारियों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बातचीत कर रहे थे। प्रधानमंत्री ने इस दौरान जिलाधिकारियों के कार्यों की सराहना करते हुये कहा कि आप सबके प्रयासों से आकांक्षी जिल आज देश के विकास में गतिरोधक के बजाय गतिवर्धक बन रहे हैं। उन्होंने कहा कि केंद्र, राज्यों और स्थानीय प्रशासन के टीम वर्क के कारण आकांक्षी जिलों में अच्छे परिणाम मिल रहे हैं। पहले हमने देखा था कि कई जिले बढ़े हुये बजट के बावजूद पिछड़े हुये हैं। हमने ऐसे जिलों को महत्व दिया है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि हमारे आकांक्षी जिलों ने हमें दिखाया है कि अगर हम 'सुशासन' का पालन करते हैं तो हमें बेहतर परिणाम मिलेंगे। प्रधानमंत्री ने जिलाधिकारियों से 'ऊपर से नीचे' के साथ-साथ 'नीचे से ऊपर' शासन प्रवाह सुनिश्चित करने के लिये प्रशासन और जनता के बीच सीधे, भावनात्मक जुड़ाव का आह्वान किया। उन्होंने जिलाधिकारियों से अपने-अपने जिलों को वैश्विक मंच पर दृश्यमान बनाने के मिशन के रूप में लेने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि आपके पास 'वोकल फॉर लोकल' के माध्यम से अपने जिले को राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर उपस्थिति दर्ज कराने के लिये एक 'मिशन' होना चाहिए। आगे उन्होंने कहा, हमारा देश 'डिजिटल इंडिया' के रूप में एक मौन क्रांति का साक्षी बन रहा है। हमारा कोई भी जिला इसमें पीछे नहीं रहना चाहिए। यह हर गांव तक पहुंचनी चाहिए। डिजिटल इनफ्रास्ट्रक्चर हमारे हर गांव तक पहुंचे, सेवाओं और सुविधाओं की डोर स्टेप डिलिवरी का जरिया बने यह बहुत जरूरी है। प्रधानमंत्री ने कहा कि हर जिले को दूसरों की सफलता से सीखने और उनकी चुनौतियों का मूल्यांकन करने की जरूरत है। उन्होंने डीएम से अपने जिलों के प्रत्येक नागरिक को विभिन्न सरकारी लाभ समयबद्ध तरीके से लेने की योजना बनाने को कहा। प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले 4 सालों में देश के लगभग हर आकांक्षी जिले में जन-धन खातों में 4 से 5 गुना की वृद्धि हुई है। लगभग हर परिवार को शौचालय मिला है, हर गांव तक बिजली पहुंची है और बिजली सिर्फ गरीब के घर में नहीं पहुंची है, बल्कि लोगों के जीवन में ऊर्जा का संचार हुआ है।

कैराना की गलियों में शाह, मिलेगी जीत की राह!

डोर टू डोर प्रचार, विरोधियों पर वार- कैराना में शाह ने किया घर-घर जनसंपर्क, लगे जय श्रीराम के नारे, गृहमंत्री शाह ने की भाजपा को प्रचंड बहुमत से जिताने की अपील

कैराना/शामली

केंद्रीय गृहमंत्री एवं भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह शनिवार को शामली जिले के कैराना पहुंचे, जहां उन्होंने घर-घर जनसंपर्क अभियान में भाग लिया। खराब मौसम के बावजूद अमित शाह को अपने बीच देखकर लोगों में गजब का उत्साह दिखाई दिया। उत्साहित लोगों ने जय श्रीराम के नारे लगाए। अमित शाह ने कहा कि कैराना से पलायन कराने वाले अब खुद पलायन कर गए हैं। कैराना में अब सुशासन दिखाई दे रहा है। उत्तर प्रदेश में पहले चरण का विधानसभा चुनाव शामली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, बागपत, मेरठ, हापुड़, गाजियाबाद, बुलंदशहर, मथुरा, आगरा और अलीगढ़ जिलों में होगा। इन 11 जिलों की कुल 58 सीटों के लिए 10 फरवरी को मतदान होगा। इसके लिए 21 जनवरी को नामांकन पत्र दाखिल करने की अंतिम तारीख थी। अब भाजपा के दिग्गज नेता चुनाव प्रचार करने और संगठन को मजबूती देने के लिए निकल पड़े हैं। शनिवार को केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कैराना आकर घर-घर जनसंपर्क अभियान चलाया। बारिश के बीच कैराना आए अमित शाह ने लोगों से घर-घर जाकर जनसंपर्क किया और भाजपा को प्रचंड बहुमत से जिताने की अपील की। अमित शाह ने कहा कि कैराना में अब सुशासन दिखाई दे रहा है। कैराना से पलायन कराने वाले अब खुद पलायन कर गए हैं। लोगों ने कहा है कि मोदीजी की कृपा हुई है।

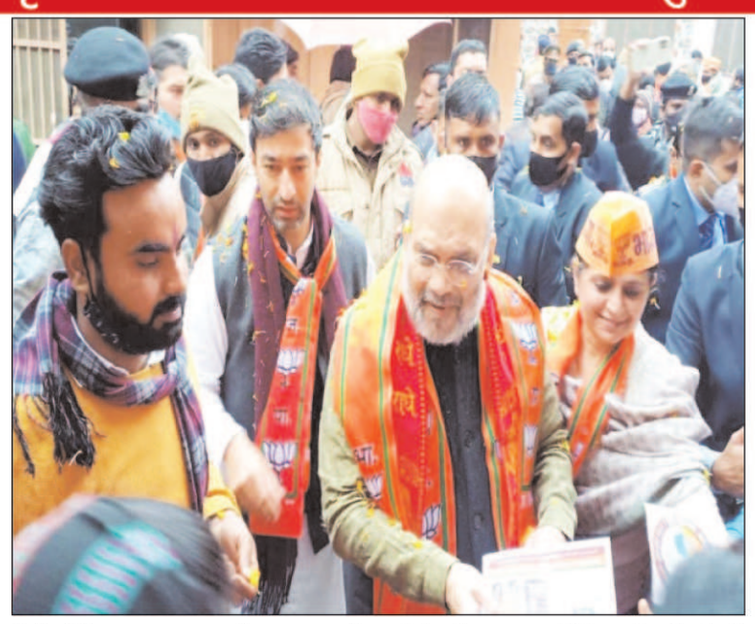

योगी जी ने कानून व्यवस्था को सुधारा। आने वाले दिनों में उप्र भारत का सबसे विकसित राज्य बनने जा रहा है। कभी व्यापारी परिवारों को पलायन करना पड़ा था। अब वह वापस आ गए हैं। उप्र में कानून व्यवस्था की स्थिति बरकरार रखना, तुष्टीकरण खत्म करना, 01 जाति के लिए काम करने वाली सरकारों की प्रथा को खत्म करना है। इसलिए एक बार फिर योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में भाजपा की सरकार प्रचंड बहुतम से बनेगी। अमित शाह ने सभी मतदाताओं से अनुरोध किया कि कोरोना के कारण पार्टी के कार्यकर्ता भले ही ना पहुंच पाएं, लेकिन 10 फरवरी को आप सुबह-सुबह ही कमल का बटन दबाकर प्रचंड बहुत से भाजपा सरकार बनाएं। उप्र के सभी वर्गों की एक ही आवाज सुनाई पड़ रही है- इस बार भाजपा 300 पार। अमित शाह को अपने बीच देखकर लोग गदगद हो गए और जय श्रीराम के नारे लगाए। कैराना में टीचर्स कॉलोनी में अमित शाह ने जनसंपर्क किया। व्यापारी राकेश गर्ग के प्रतिष्ठान साधु स्वीट्स पर पहुंचे और उनका हालचाल लिया। उल्लेखनीय है कि साधु स्वीट्स 70 साल पुरानी दुकान थी। 2014 में बदमाशों के डर से साधु पलायन करके अंबाला चले गए थे। उस दौरान बदमाशों ने उनसे 20 लाख रुपये की रंगदारी मांगी थी।

भाजपा सरकार बनने पर वह कैराना वापस लौटे। इस दौरान अमित शाह ने व्यापारी को सुरक्षा का भरोसा दिलाया और कहा कि अब कैराना को विकसित किया जाएगा। इसके साथ ही कई अन्य परिवारों से भी मुलाकात की। उनके साथ प्रदेश के पंचायती राज मंत्री भूपेंद्र चौधरी, कैराना के सांसद प्रदीप चौधरी, भाजपा के क्षेत्रीय अध्यक्ष मोहित बेनीवाल, जिलाध्यक्ष सत्येंद्र तोमर आदि उपस्थित रहे।

कैराना में जोर-शोर से उठा था पलायन का मुद्दा

कैराना शामली जिले का यह बड़ा कस्बा पिछली राज्य सरकार के कार्यकाल के दौरान रंगदारों, गुंडों और बदमाशों के लिए स्वर्ग बन गया था। इनकी दहशत से लोग यहां से पलायन कर रहे थे। तब भाजपा नेता बाबू हुकुम सिंह ने पलायन मुद्दे को जोर शोर से उठाया था। सन 2017 में योगी की भाजपा सरकार बनने पर यहां कानून का राज स्थापित हुआ और पलायन कर गए लोग धीरे धीरे लौटने लगे। भाजपा पलायन के मुद्दे पर हमेशा सपा को घेरती रही है।

सरकार ने 36 हजार करोड़ का किसानों का कर्ज माफ किया: योगी

बुलंदशहर

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शनिवार को बुलंदशहर पहुंचे। नगर के निकुंज हाल में एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार ने 36 हजार करोड़ का किसानों का कर्ज माफ किया है। सूबे में बेटियों को सुरक्षा दी है। उन्होंने कोरोना वायरस के खात्मे के लिए सभी से कोरोना वैक्सीन लगवाने की अपील की। उन्होंने नगर में जनसंपर्क भी किया।

प्रबुद्ध नागरिकों को किया संबोधित: निकुंज हाल में प्रबुद्ध नागरिकों को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में सरकार आते ही अवैध बूचड़खाने को बंद कराया गया। आमजन को सुरक्षा के साथ-साथ भयमुक्त माहौल दिया। मुख्यमंत्री कर्ज माफी योजना के अंतर्गत प्रदेश के 36 हजार करोड रुपये किसानों का कर्ज माफ किया। उन्होंने कहा कि कैराना में बैठकर जो कश्मीर का सपना देखते थे। ऐसे अराजक तत्वों पर लगाम कसने का काम प्रदेश में भाजपा सरकार ने किया।

सपा पर साधा निशाना: उन्होंने समाजवादी पार्टी पर तंज कसा और कहा कि विधानसभा चुनाव में सपा ने ऐसे उम्मीदवारों को चुनाव मैदान में उतारा है जो आपराधिक गतिविधियों में लिप्त रहे हैं। सपा के प्रत्याशियों के नाम से ही समाजवादी पार्टी के नेतृत्व पर सवाल उठते हैं।

उप्र: 30 जनवरी तक स्कूल-कॉलेज बंद करने के आदेश

लखनऊ

उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार ने 30 जनवरी तक सभी स्कूल एवं कॉलेज बंद करने के निर्देश दिए हैं। कोरोना वायरस के बढ़ते संक्रमण को देखते हुए राज्य सरकार ने 23 जनवरी तक प्रदेश के सभी शिक्षण संस्थानों को बंद करने के निर्देश दिए थे। राज्य सरकार ने शनिवार को एक बार फिर स्कूल एवं कॉलेजों को 30 जनवरी तक बंद करने का आदेश जारी किया। इस दौरान ऑनलाइन कक्षाएं चलती रहेंगी। सरकार का यह आदेश सभी सरकारी और निजी शिक्षण संस्थानों पर लागू होगा।

जम्मू-कश्मीर में परिसीमन शुरू, जल्द होंगे चुनाव: शाह

नई दिल्ली

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को कहा कि जम्मू-कश्मीर में डिलिमिटेशन (परिसीमन) का कार्य शुरू हो गया है और जल्द ही राज्य में चुनाव कराये जाएंगे। उन्होंने कहा कि जैसे ही राज्य में स्थिति में सुधार होगा, जम्मू-कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा दिया जाएगा। शाह ने शनिवार को वर्चुअल माध्यम से केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर के 20 जिलों के लिये जिला सुशासन सूचकांक जारी किया। इसके साथ ही जम्मू-कश्मीर सुशासन सूचकांक वाला देश का पहला केंद्र शासित प्रदेश बन गया। कार्यक्रम का आयोजन भारत सरकार के प्रशासनिक सुधार और लोक शिकायत विभाग (डीएआरपीजी) तथा जम्मू और कश्मीर प्रबंधन, लोक प्रशासन एवं ग्रामीण विकास संस्थान एवं हैदराबाद के सुशासन केंद्र के सहयोग से संयुक्त रूप से किया गया। इस अवसर पर शाह ने कहा कि आज जो सुशासन सूचकांक शुरू हुआ है, इससे जिले के तंत्र को सुधारने, परिणाम लक्ष्य बनाने और डिलीवरी देने वाला तंत्र बनाने के लिए बहुत बड़ा फायदा जम्मू-कश्मीर के लोगों को होगा। सूचकांक में केंद्र और राज्य सरकार की नीतियां, योजनाएं और कार्यक्रम की निगरानी जिला स्तर किया गया है। केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में परिसीमन का कार्य शुरू हो गया है और जल्द ही वे चुनाव कराएंगे।

देशभर में खोले जाएंगे 100 सैनिक स्कूल, 194 ने पंजीकरण कराया

नई दिल्ली

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) के अनुरूप बच्चों को मूल्य आधारित शिक्षा देने के लिए देशभर में 100 सैनिक स्कूल खोले जाने की योजना के तहत अब तक 194 विद्यालय पंजीकृत हुए हैं। यह सभी स्कूल रक्षा मंत्रालय के मौजूदा सैनिक स्कूलों से सम्बद्ध होंगे। पहले चरण में 100 स्कूलों को खोलने में राज्यों, एनजीओ और निजी भागीदारों की मदद ली जा रही है। स्वीकृत स्कूल अगले शैक्षणिक वर्ष से सैनिक स्कूल पाठ्यक्रम लागू करेंगे। भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) के अनुरूप बच्चों को राष्ट्र की समृद्ध संस्कृति और विरासत, चरित्र, अनुशासन, भावना के साथ राष्ट्रीय कर्तव्य और देशभक्ति की भावना विकसित करने के लिए देशभर में 100 सैनिक स्कूल खोले जाने का फैसला लिया है। केंद्रीय कैबिनेट ने भी रक्षा मंत्रालय की सैनिक स्कूल समिति से संबद्ध सैनिक स्कूलों को शुरू करने के प्रस्ताव को स्वीकृति दी है। यह स्कूल रक्षा मंत्रालय के मौजूदा सैनिक स्कूलों से भिन्नता एवं विविधता लिए हुए होंगे।

एनसीसी कैडेट्स बड़े सपने देखकर देश को नई ऊंचाइयों पर ले जाएं : राजनाथ

नई दिल्ली

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने गणतंत्र दिवस शिविर-2022 में भाग लेने वाले एनसीसी कैडेट्स के साथ शनिवार को वर्चुअली बातचीत कर-के उन्हें बड़े सपने देखने और देश को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) युवाओं को एकजुट और अनुशासित बल में तब्दील करके जनसेवा कर रहा है। उन्होंने एनसीसी की सराहना करते हुए कहा कि यह संगठन अपने कैडेट्स को सैनिक, कलाकार, संगीतकार और अच्छे इंसान के रूप में ढाल रहा है। शिविर में भाग ले रहे एनसीसी कैडेट्स राजपथ पर गणतंत्र दिवस परेड में हिस्सा लेंगे। रक्षा मंत्री ने कहा कि वे अभी भी कोरोना पॉजिटिव हैं, इसलिए कैडेटों से वर्चुअली बातचीत करने का फैसला किया, वरना गणतंत्र दिवस शिविर में आकर बातचीत करते। उन्होंने एनसीसी कैडेटों से जीवन में उद्देश्य खोजने और कई एनसीसी पूर्व छात्रों से प्रेरणा लेने का आग्रह किया, जिन्होंने संगठन में सिखाए गए एकता, अनुशासन, सच्चाई, साहस, सद्भाव और नेतृत्व के गुणों को अपनाकर समाज में अपनी पहचान बनाई। उन्होंने कहा कि एनसीसी युवाओं को एकजुट और अनुशासित बल में बदलकर राष्ट्र के लिए एक महत्वपूर्ण सेवा कर रहा है।

'अवैध रेत खनन का हिस्सा हैं सीएम चन्नी'

चंडीगढ़

पंजाब के पूर्व सीएम कैप्टन अमरिंदर सिंह ने शनिवार को मुख्यमंत्री चरणजीत चन्नी पर बड़ा आरोप लगाया। मीडिया से बातचीत में कैप्टन ने कहा कि सीएम चन्नी अवैध रेत खनन में हिस्सेदार हैं। साथ ही उन्होंने पीपीसीसी प्रधान नवजोत सिद्धू के बारे में कहा कि उनमें सोचने की भी ताकत नहीं है। पंजाब लोक कांग्रेस (पीएलसी) के प्रमुख कैप्टन अमरिंदर सिंह ने दावा किया कि कांग्रेस डरी हुई है। उन्होंने कहा कि सिद्धू असंतुलित व्यक्ति हैं। कौन किसको घर बैठाता है, सिद्धू को ये बात वक्त बताएगा। उन्होंने कहा कि सिद्धू और चन्नी पंजाब के लिए सही नहीं हैं। वहीं अरविंद केजरीवाल के पास विकास का कोई मॉडल नहीं है। आप के सीएम चेहरे भगवंत मान के बारे में कैप्टन ने कहा कि वे कॉमेडियन हैं। पंजाब को कॉमेडी नहीं, गंभीरता की जरूरत है।

पीएम की सुरक्षा में लापरवाही की गई: कैप्टन ने मुख्यमंत्री चन्नी पर आरोप लगाया था कि उनकी सरकार ने स्पष्ट रूप से प्रधानमंत्री के काफिले की नाकाबंदी की योजना बनाई थी, जिसके कारण प्रधानमंत्री की सुरक्षा में गंभीर लापरवाही हुई। उन्होंने आरोप लगाया कि जाहिर तौर पर चन्नी सरकार ने पुलिस को निर्देश दिया था कि किसानों को वहां से न हटाया जाए, जो भाजपा की बसों को वहां से निकलने से रोक रहे थे। उक्त घटना को सुरक्षा की बड़ी कमी बताते हुए पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि किसी भी संवैधानिक प्रमुख को ऐसी घटना का सामना नहीं करना चाहिए था जो अंतरराष्ट्रीय सीमा से निकटता के कारण प्रधानमंत्री के जीवन के लिए खतरा हो सकती थी। कैप्टन ने कहा कि चन्नी एक अविश्वसनीय व्यक्ति के रूप में उभरे हैं, जिन्होंने पिछले तीन महीनों में पंजाब में तबादलों और नियुक्तियों को एक उद्योग बना दिया है। कैप्टन ने चन्नी सरकार को सूटकेस सरकार बताया।

केजरीवाल सरकार स्कूल वैक्सीनेशन में अव्वल

नई दिल्ली

दिल्ली के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए और कोरोना से बचाव के लिए केजरीवाल सरकार द्वारा बड़े स्तर पर वैक्सीनेशन अभियान चलाया गया है, जिसका नतीजा यह है कि 3 हफ्ते से भी कम समय में दिल्ली के सरकारी स्कूलों में 15-18 आयु वर्ग के लगभग 85 फीसद बच्चों को 21 जनवरी तक वैक्सीन लगाई जा चुकी है। शिक्षा निदेशालय ने 30 जनवरी तक 100 फीसदी वैक्सीनेशन का लक्ष्य रखा है जो पूरा होता दिख रहा है। इस मौके पर उपमुख्यमंत्री व शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा कि वैक्सीनेशन कोरोना से बचाव का सबसे कारगर उपाय है। इसलिए यह बेहद जरुरी है कि जो भी स्टूडेंट्स वैक्सीनेशन के लिए एलिजिबल है, वे टीकाकरण अवश्य करवाएं। उन्होंने साझा किया दिल्ली के 15 में से 12 एजुकेशन डिस्ट्रिक्ट के सरकारी स्कूलों में 85 फीसद बच्चों को टीके लग चुके हैं ।

खबर संक्षेप

हावड़ा रूट पर सफर होगा आसान, छिवकी-नैनी के बीच तीसरी लाइन तैयार

प्रयागराज। हावड़ा और मुंबई रूट का सफर थोड़ा आसान होने जा रहा है। छिवकी से नैनी के बीच तीसरी लाइन का काम पूरा हो गया है। इस लाइन के चालू हो जाने से जंक्शन से छिवकी के बीच में गाड़ियां सीधे निकल सकेंगी। किसी दूसरी ट्रेन के लिए रोकना नहीं पड़ेगा। इसके अलावा ट्रेनों की औसत रफ्तार में भी सुधार की बात कही जा रही है।छिवनी से नैनी के बीच 1.45 किमी की दूरी तक तीसरी लाइन का काम काफी समय से चल रहा था। इसके इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम के साथ इंटरलॉक करने का काम 17 जनवरी को ही पूरा हो चुका है। नैनी यार्ड में भी सुविधाएं बढ़ाई गई हैं।रेलवे के अफसरों का कहना है कि तीसरी लाइन के चालू होने से नैनी जंक्शन के डाउन लूप लाइन में खड़ी गाड़ी छिवकी के डाउन लूप लाइन में सीधे जा सकेगी। इससे डाउन मेन लाइन से चलने वाली गाड़ियां प्रभावित नहीं होंगी। दोनों स्टेशनों के बीच तथा यार्ड में कई अन्य तकनीकी बदलाव भी किए गए हैं। इससे गाड़ियों की औसत गति में सुधार होगा।

चुनाव में शराब का इस्तेमाल रोकने के लिए आबकारी विभाग हुआ सतर्क

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। चुनाव शांतिपूर्ण के साथ ही निष्पक्ष तरीके से संपन्न हों, इसके लिए तमाम कवायदें की जा रही हैं। इसी के तहत जिला आबकारी विभाग भी जद्दोजहद में जुटा हुआ है। उसकी ओर से जिले भर में स्थित दुकान से बिकने वाली शराब की एक-एक बोतल का हिसाब लिया जा रहा है।रोजाना दुकानों की बिक्री और शेष स्टॉक का मिलान किया जा रहा है। साथ ही इसकी रिपोर्ट मुख्यालय को भेजी जा रही है। अफसरों का कहना है कि इस कवायद का मकसद यही है कि चुनाव को प्रभावित करने के लिए शराब का इस्तेमाल न हो।आमतौर पर शराब की बिक्री का रिकॉर्ड माह के अंत में तैयार होता है। अनुज्ञापी माह के अंत में अपनी बिक्री व शेष स्टॉक का रिकॉर्ड भेजते हैं और फिर जिला स्तर से समग्र रिपोर्ट बनकर मुख्यालय तक भेजी जाती है।हालांकि चुनाव में इस बात की प्रबल आशंका होती है कि वोटरों को प्रभावित करने के लिए प्रत्याशियों या उनके समर्थकों की ओर से शराब का इस्तेमाल किया जा सकता है। इसी पर रोक लगाने के लिए आबकारी विभाग की ओर से कमर कस ली गई है।इसके तहत विभाग ने जिले में बिकने वाली शराब की एक-एक बोतल का हिसाब लेना शुरू कर दिया है। आचार संहिता लगने के बाद से ही शराब की बिक्री की रिपोर्ट रोजाना प्रत्येक अनुज्ञापी से लेना शुरू कर दिया गया है। इसके साथ ही बिक्री के बाद उपलब्ध शेष स्टॉक की जानकारी भी प्रतिदिन एकत्र कर इसकी रिपोर्ट तैयार की जा रही है। जिला स्तर पर समग्र रिपोर्ट तैयार होने के बाद से मुख्यालय को भेजा जा रहा है।

20 फीसदी से ज्यादा वृद्धि पर होगी जांच

आबकारी विभाग के अफसरों का कहना है कि रोजाना तैयार हो रही रिपोर्ट के जरिए इसकी निगरानी की जा रही है कि शराब की बिक्री में कहीं अप्रत्याशित उछाल तो नहीं आई। इसके लिए औसत बिक्री को आधार बनाया जा रहा है। 20 फीसदी से ज्यादा उछाल आने की स्थिति में जांच कराई जाएगी। जिसमें बिक्री में उछाल आने का कारण पूछा जाएगा। जवाब संतोषजनक न होने की स्थिति में यह मान लिया जाएगा कि कहीं न कहीं इसके पीछे चुनाव को प्रभावित करने की मंशा है। जिस पर कार्रवाई की जाएगी।

औचक निरीक्षण के लिए बनीं संयुक्त टीमें

अफसरों ने बताया कि बिक्री के रिकॉर्ड की नियमित मॉनिटरिंग के साथ ही अन्य उपाय भी किए गए हैं। आबकारी, जिला प्रशासन व पुलिस की संयुक्त टीमें बनाई गई हैं। यह टीमें अलग-अलग क्षेत्रों में लगातार भ्रमणशील रहकर दुकानों पर औचक निरीक्षण के लिए पहुंच रही हैं। इस दौरान रोजाना तैयार होने वाली रिपोर्ट और दुकान में उपलब्ध स्टॉक का भौतिक सत्यापन भी कराया जा रहा है। अनियमितता मिलने पर संबंधित से स्पष्टीकरण मांगा जा रहा है।

न्यूज झरोखा

सपा ने चुनाव आयोग को लिखा पत्र, अफसरों पर भाजपा नेताओं के समर्थन का आरोप, सौंपा ज्ञापन

प्रयागराज। विधानसभा चुनाव 2022 के मद्देनजर प्रयागराज जिले में लंबे समय से तैनात रहे एडीजी, आईजी, जिला विद्यालय निरीक्षक व सहायक निबंधक सहकारी को तत्काल प्रभाव से हटाने की मांग की गई है। चुनाव आयोग को लिखे पत्र में समाजवादी पार्टी ने कहा है कि यह अधिकारी लंबे समय से जिले में तैनात हैं लिहाजा चुनाव को प्रभावित कर सकते हैं। समाजवादी पार्टी के प्रयागराज जिला अध्यक्ष योगेश चंद्र यादव की अगुवाई में शुक्रवार को कलेक्ट्रेट पहुंचे सपा कार्यकर्ताओं ने निर्वाचन आयोग के नाम ज्ञापन सौंपा है। सपा नेताओं का कहना था कि चारों अधिकारी लंबे समय से प्रयागराज में डटे हैं, लिहाजा इन्हें तत्काल यहां से हटाया जाए। सपा को आशंका है कि ये अधिकारी चुनाव में अपने पद के प्रभाव से चुनाव प्रभावित कर सकते हैं। योगेश चंद यादव ने अफसरों पर भाजपा नेताओं के समर्थन का आरोप लगाया है। उनका कहना था कि इन अफसरों के यहां रहने से विधानसभा चुनाव प्रभावित होने की पूरी संभावना है। लिहाजा इन अफसरों का यहां से कहीं और तबादला किया जाए। ज्ञापन सौंपने वालों में जिला सचिव विजय मुन्ना, नाटे चौधरी, कुलदीप यादव, आशुतोष तिवारी, कृपाशंकर बिंद, सोएब बच्चा, मुजीद फारुखी आदि शामिल रहे।

समाज सेवी रिटायर्ड लेखपाल ने गरीबों को बाँटा कम्बल

लालापुर। क्षेत्र के डेराबारी गांव निवासी रिटायर्ड लेखपाल रामबाबू ने गांव के गरीबों को कम्बल वितरण किया।उन्होंने कहा कि ठंड के मौसम में वैसे जरूरतमंदों के बीच कंबल वितरण किया गया,जिन्हें इसकी बहुत जरूरत है। इनके पास इस ठिठुरती ठंड में कोई सहारा नहीं है।इस मौके पर शेर सिंह,जगतराज सिंह,नंदलाल पाल,अमर सिंह सहित दर्जनों लोग मौजूद रहे।

सर्वजन हिताय व सर्वजन सुखाय के तर्ज पर होगा क्षेत्र का विकास

लेडियारी। विधानसभा चुनाव की तिथियां घोषित हो जाने के बाद से ही प्रत्याशियों द्वारा जनसंपर्क तेज कर दिया गया है' अपनी अपनी बातों को बड़ी ही सरलता और सहजता से जनता तक पहुंचाने का कार्य कैसे किया जा रहा हैं । इसी क्रम में आज जिला पंचायत सदस्य राजेश पटेल द्वारा बहुजन समाज पार्टी कोरांव से पूर्व विधायक एवं विधायक पद प्रत्याशी राजबली जैसल के साथ जनसंपर्क किया गया'जनसंपर्क के दौरान राजेश पटेल ने बताया कि राजबली जैसल द्वारा जो भी विकास कार्य विधानसभा कोरांव में पूर्व में कराए गए थे उसकी बराबरी आज तक किसी भी विधायक द्वारा नही किया जा सका' संपूर्ण विधानसभा में जो भी कार्य कराए गए वह सर्वजन हिताय एवं सर्वजन सुखाय के तर्ज पर कराए गए थे संपूर्ण विधानसभा कोरांव में सड़कों की जाल बिछाने का कार्य विकास पुरुष राजबली जैसल द्वारा ही कराया गया था। जनसंपर्क के दौरान प्रत्याशी राजबली जैसल ने लोगों से निवेदन किया कि एक बार फिर से सेवा का मौका प्रदान करें और इस बार जो विकास की गंगा रुक गई थी वह एक बार फिर से मिलकर बहाने का कार्य किया जाएगा । इस मौके पर मुख्य रूप से जंगी लाल गुप्ता, सुरेश पांडे, शिवकुमार पयासी, राजीव गौतम, कुटकुट तिवारी, विनोद तिवारी, संजय कुशवाहा, नरेश वर्मा, रामेश्वर कुशवाहा, रामकुमार कुशवाहा, ज्ञान चंद्र पटेल, राजेश्वरी जैसल, अरुणेश जैसल, बनवारी लाल, त्रिलोक नाथ सहित दर्जनों की संख्या में लोग मौजूद रहे ।

शिलापट्ट तोड़ने से हम नहीं टूटेंगे : त्रिवेणी पांडेय

राजनैतिक द्वेष समाज केलिए घातक होगा ऐसे लोग सफल प्राणी नहीं बन सकते

अखंड भारत संदेश

करछना। सामाजिक सरोकार रखने वाले लोग दिलों में बसते है, उन्हे लाख चाहें दूसरों से अलग नहीं कर सकते, तथा कोशिश करके देख लो हम आपके कल भी थे और आज भी, क्योकि हमने जो भी कार्य किया राजनैतिक जीवन में वह जनता व समाज के लिए सेवा भाव के चलते किया गया, जब हमें लोगों के दिलों से नहीं तोड़ सकते है तो शिलापट तोडने से हम नहीं टूटेंगे उक्त विचार भाजपा जिला उपाध्यक्ष एवं पूर्व जिला पंचायत सदस्य त्रिवेणी प्रसाद पाण्डेय ग्राम पंचायत डीहा करछना नें पत्रकार वार्ता के दौरान वयक्त किया । उन्होंने कहा कि जिला पंचायत सदस्य के दौरान दर्जनो कार्य सड़क मार्ग से लेकर जनता के विकास के लिए गांवो में विकास कार्य को अमलीजामा पहनाया हैं ।जो आज भी लोग उस सडक मार्ग पर चलते आ रहें हैं ।उन्होंने बताया कि गांव के विकास के लिए डीहा गांव में राज्य वित्त योजना अंतर्गत विकास खंड करछना के ग्राम पंचायत डीहा में मुख्य मार्ग से होते हुए मिश्रान बस्ती के लिए कबरा संपर्क मार्ग के लिए 800, मीटर पीसी सडक मार्ग का निर्माण कार्य कराया था, जिसका सांसद डाक्टर रीता बहुगुणा जोशी बतौर मुख्य अतिथि और उस समय पद पर आशीन जिला पंचायत अध्यक्ष रेखा सिंह ने उक्त मार्ग का एक वर्ष पहले शिलान्यास किया था, बनने के बाद उक्त मार्ग पर शिलापट लगाया गया था, जिसको कुछ राजनैतिक प्रतिद्वंदिता के चलते तुच्छ लोग शिलापट तोड़ दिया है, यह एक गांव में टकराव की स्थिति पैदा कर रहे हैं ऐसे लोगों का कभी भी राजनैतिक भविष्य उत्कृष्ट प्रविष्टी में सफल नहीं हो सकते।

टूटा हुआ शिलापट डीहा गांव में

स्कूल में बनाये गये वैक्सीनेशन कैम्प में टीका लगवाते छात्र

जीवन ज्योति पब्लिक स्कूल घोडेडीह भीरपुर में बच्चों ने वैक्सीनेसन कैम्प में लिया बढ़ चढ़कर लिया हिस्सा

करछना। जीवन ज्योति पब्लिक स्कूल घोडेडीह भीरपुर करछना प्रयागराज में कोविड 19 की रोकथाम के लिए निःशुल्क मेगा टीकाकरण कैम्प का आयोजन दिनांक 21 व 22 जनवरी 2022 किया गया जिसमें 15 से 18 आयु वर्ग के 60 % बच्चों ने टीकाकरण कराया। विद्यालय में पढ़ रहे छात्र/छात्राओं एवं आसपास के लोग अपना आधार कार्ड व मोबाइल नम्बर के साथ टीका लगवाया। इस कैम्प का आयोजन करछना ब्लॉक के सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी श्री विनोद यादव द्वारा किया गया। इस कैम्प में डॉ0 आर0 पी0 पाण्डेय, निदेशक श्रीमती कुसुम पाण्डेय डॉ.के के शुक्ला प्रधानाचार्या श्रीमती पूनम भारशिव, साधना राय, अर्चना गुप्ता,शालिनी यादव,अर्चना प्रजापति,निधि पांडेय,अमित विश्वकर्मा,अमित गुप्ता डी के शुक्ला,संजय तिवारी,रवि भूषण राय,विनोद कुमार प्रजापति,व अन्य शिक्षक मौजूद रहे।

छात्रसंघ भवन गेट को लाल पद्मधर द्वार करने की छात्रों ने उठाई मांग

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में छात्रसंघ भवन पर छात्रसंघ बहाली की मांग को लेकर चल रहा अनशन 549 दिन से जारी रहा। अनशनकारियों ने छात्रसंघ भवन के निमार्णाधीन गेट को शहीद लाल पदमधर के नाम से करने की मांग उठाई।

विश्वविद्यालय प्रशासन को सौंपेंगे ज्ञापन

छात्र नेता अजय यादव सम्राट के अगुवाई में छात्रसंघ बहाली का आंदोलन पिछले 549 दिन से जारी है। अजय ने शुक्रवार को अनशन स्थल पर छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि शहीद लाल पद्मधर छात्र आंदोलन के प्रतीक रहे हैं। वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पुरा छात्र भी रहे हैं। छात्रसंघ भवन के गेट का नाम शहीद लाल पद्मधर द्वारा रखना चाहिए। इसके लिए कुलपति को जल्द ही ज्ञापन सौंपा जाएगा। विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं के लिए यही शहीदों के प्रति सच्ची श्रधांजलि होगी। यदि विश्वविद्यालय प्रशासन लाल पदमधर द्वार नाम से गेट का नामकरण नहीं करता है तो यह सरासर इस देश के शहीदों का और हमारे शहीदों का अपमान होगा और इनका अपमान विश्वविद्यालय का छात्र कतई बर्दास्त नहीं करेगा।इस मौके पर छात्र नेता हरेंद्र यादव, मसूद अंसारी, अभिषेक यादव, सुधीर कुमार, चंदन यादव, ललित सिंह, आदित्य कुमार, नितिन यादव ,अभिषेक सिंह ,नवनीत यादव, मनजीत पटेल, संदीप विश्वकर्मा, शिव शंकर सरोज, सलमान इलाहाबादी, आदि लोग रहे।

अपनी मांगों को लेकर विरोध जताते छात्र

तीन घंटे में 20 हजार ने लगवाया टीका

प्रयागराज। कोरोना संक्रमण को हराने के लिए प्रयागराजवासियों में गजब का उत्साह है। कड़ाके की सर्दी के बावजूद शनिवार को टीकाकरण को लेकर सुबह से लाइन लगी रही। शहर से लेकर गांव तक अस्पताल व सेंटर पर सुबह 10 बजे से लेकर दोपहर एक बजे तक तीन घंटे में करीब 20 हजार लोगों को टीका लग चुका था। 15 से 17 वर्ष आयु के किशोरों ने भी गजब का उत्साह दिखाते हुए सहभागिता निभाई। प्रयागराज अब कुल टीकाकरण में लखनऊ से कुछ ही टीकों की संख्या से पीछे है।

चुनाव में नहीं लगेगी नगर निगम स्टाफ की ड्यूटी

प्रयागराज। नगर निगम के अधिकारियों और कर्मचारियों को विधानसभा चुनाव की ड्यूटी से मुक्त रखने के लिए प्रदेश सरकार के मुख्य सचिव दुगार्शंकर मिश्र ने जिला निर्वाचन अधिकारियों को पत्र भेजा है। मुख्य सचिव ने शहर में कोरोना के बढ़ते कहर को देखते हुए नगर निगम के अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ वाहनों को भी चुनावी ड्यूटी में नहीं लगाने का निर्देश दिया है। मुख्य सचिव का पत्र शुक्रवार को जिला निर्वाचन अधिकारी और नगर निगम में पहुंचा। पत्र में लिखा है कि नगर निगम के अधिकारी और कर्मचारी इस समय कोरोना का संक्रमण रोकने की कोशिश में लगे हैं।

प्रतिज्ञा चौपाल माध्यम से कांग्रेसियों ने की जन संवाद

जनसंवाद में शामिल कांग्रेसी

भाजपा जिला अध्यक्ष विभव नाथ भारती जन सम्पर्क करते हुए

अखंड भारत संदेश

सहसों। कांग्रेस पार्टी के पूर्व जिला उपाध्यक्ष अशफाक अहमद के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी की नीतियों को जन जन तक पहुंचने के लिए पार्टी कार्यकताओं के साथ ग्रामसभा थानापुर,मलावां, हबीबपुर आदि गांव में जाकर घर-घर जनसंपर्क किया। जनसंपर्क के दौरान कांग्रेस प्रतिज्ञा चौपाल के अंतर्गत भर्ती विधान युवा घोषणा पत्र कार्यक्रम के बारे में जन-जन से मिलकर जनसंवाद किया। कांग्रेस पार्टी के कार्यक्रम के बारे में जनता को अवगत कराया। जनसंपर्क के दौरान भाजपा सरकार की नाकामियों को भी उजागर किया गया। गुंडागर्दी महंगाई बेरोजगारी पर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया गया और शिक्षा के गिरते हुए स्तर पर चिंता जाहिर की गई। ग्रामीण क्षेत्रों में फैली हुई संक्रामक बीमारियों का सुचारू रूप से इलाज ना कर पाने के कारण मौजूदा सरकार को दोषी ठहराया गया। मौजूदा सरकार से सरकारी स्वास्थ्य केंद्रों पर मुफ्त में उपलब्ध दवाइयों को सुलभ कराने की मांग की गई। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से एडवोकेट देवराज उपाध्याय, गोविंद सिंह, सलीम टाइगर, बबलू प्रधान, सफीक हाफिज, मोहम्मद आलम, राकेश शुक्ला, जीशान अहमद, मोहम्मद सलीम आदि लोग उपस्थित रहे।

सोच ईमानदार, काम दमदार" यूपी फिर मांगें भाजपा सरकार के नारें बुलंद

पांच-पाचं के भाजपाई टोलियों ने किया घर-घर सम्पर्क

घूरपुर। भारतीय जनता पार्टी यमुनापार जिलाध्यक्ष विभव नाथ भारती ने शीर्ष नेतृत्व के आह्वान पर पूरे यमुनापार मे पांच-पांच लोगों की टीम गठित कर स्यमं शनिवार को घूरपुर-गौहनिया मे घर-घर प्रचार प्रसार के अभियान का शुभारंभ किया। जिलाध्यक्ष के निर्देश मे दर्जनों की संख्या में टीमें गठित कर सरकार की योजनाओं को घर-घर बताकर "सोच ईमानदार,काम दमदार" यूपी फिर मांगें भाजपा सरकार के नारों संग कमल खिलाने कार्यकर्ता निकल पड़े। जिसमें प्रमुख रूप से जिला मीडिया प्रभारी दिलीप कुमार चतुर्वेदी, जिला सह-मीडिया प्रभारी आरके शर्मा,राम सिंह, राजकुमार मिश्रा आदि रहे।

छात्रों के सिर मुंडवाने का मामला पहुंचा मानवाधिकार

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। अपनी मांगों के समर्थन में गुरुवार को संगम पर सिर मुंडवाने व सरकार का प्रतीकात्मक पिंडदान करने गए प्रतियोगी छात्रों की गिरफ्तारी व उनके मानसिक उत्पीड़न का मामला मानवाधिकार आयोग तक पहुंच गया है। एडवोकेट केके राय ने इस मामले की शिकायत मानवाधिकार से की है तथा दोषी पुलिसकर्मियों पर कार्रवाई की मांग की है।

मानवाधिकार आयोग में तीन अधिवक्ताओं ने की शिकायत

इलाहाबाद विश्वविद्यालय छात्र संघ के पूर्व अध्यक्ष व अधिवक्ता केके राय, अधिवक्ता रमेश कुमार व प्रबल प्रताप द्वारा संगम क्षेत्र में शांतिपूर्ण ढंग से रोजगार के सवाल पर विरोध स्वरूप प्रतीकात्मक रूप ने अपना मुंडन कराने वाले विद्यार्थियों पर लाठी भांजने और उनके साथ अपराधियों जैसा सलूक करने व गिरफ्तार कर उन्हें थाने ले जाने की शिकायत राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग में की गई है इसके लिए बाकायदा एक याचिका दायर की गई है। याचिका में कहा गया है कि 20 जनवरी को शांतिपूर्ण और अहिंसक ढंग से विरोध कर रहे प्रतियोगियों पर लाठी भांजने और हिरासत में लिये जाने की कार्यवाही निंदनीय है। यह शांतिपूर्ण ढंग से विरोध करने के मौलिक अधिकार और उनके मानवाधिकार का हनन है । गिरफ्तारी और मारपीट की पुलिसिया कार्यवाही भारतीय दण्ड संहिता के प्राविधानों के विपरीत है । छात्र किसी सरकारी काम काज या सार्वजनिक क्रिया कलाप में कोई बाधा भी नहीं पहुंचा रहे थे। याचिकाकर्ता गण ने आयोग से दोषी पुलिसकर्मियों को दंडित करने और गैर कानूनी हिरासत के लिए विद्यार्थियों को मुआवजा देने की मांग की है।

आधा सिर मुंडाए प्रतियोगियों को पुलिस ने कर लिया था गिरफ्तार

संगम पर पूर्व घोषित कार्यक्रम के अनुसार मुंडन कराने और सरकार का पिंडदान करने पहुंचे एक दर्जन प्रतियागियों को पुलिस ने गुरुवार को हिरासत में ले लिया है। प्रतियोगियों ने जैसे ही संगम किराने मुंडन शुरू किया पुलिस को इस बात की भनक लग गई और बलपूर्वक मुंडन रोक दिया। प्रतियोगियों ने इसे सरकार का दमनकारी रवैया करार दिया है तो पुलिस प्रशासन का कहना है कि प्रतियोगी बिना किसी अनुमति के माघ मेला क्षेत्र में प्रदर्शन कर रहे थे।सरकार की संवेदनहीनता और लोक सेवा आयोग की उइकजांच में सरकार के असहयोग से क्षुब्ध प्रतियोगी आज यानी, 20 जनवरी को खुद का मुंडकर कराकर सत्ता का पिंडदान करने की घोषणा की थी। यही नहीं सरकार से प्रतियोगियों ने इच्छामृत्यु की भी मांग की थी। प्रतियोगी छात्र संघर्ष समिति के अध्यक्ष अवनीश पांडेय का कहना है कि सरकार की संवेदनहीनता के कारण प्रतियोगीयो को ऐसा कदम उठाना पड़ रहा है। सरकार सहानुभूतिपूर्वक प्रातियोगियों की मांगों पर विचार करने की बजाय उनका दमन करने पर उतारू है।पुलिस प्रतियोगियों को शांतिपूर्ण तरीके से अपना विरोध-प्रदर्शन नहीं करने दे रही है। आज प्रतियोगी जब विरोध-प्रदर्शन के लिए मुंडन शुरू कराए तो पुलिस ने दमनात्मक रवैया अपनाते हुए सभी को गिरफ्तार कर लिया। योगी सरकार में क्या मानसिक अवसाद से गुजर रहे प्रतियोगी क्या अपनी मांगों के समर्थन में धरना-प्रदर्शन भी नहीं कर सकते। सरकार का ये तानाशाही रवैया नहीं चलेगा।

जिला स्तरीय टास्क फोर्स की बैठक में सख्त दिखे डीएम संजय कुमार खत्री

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। संजय कुमार खत्री ने जिले के संबंधित अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए हैं कि कोविड ड्यूटी में किसी तरह की लापरवाही क्षम्य नहीं होगी। कलेक्ट्रेट स्थित संगम सभागार में जिलास्तरीय टास्क फोर्स की बैठक में जिलाधिकारी ने यह निर्देश दिए। बैठक में कोविड-19 संवेदीकरण, नियंत्रण तथा कोविड-19 के लक्षण युक्त व्यक्तियों, नियमित टीकाकरण से छूटे बच्चों, व 60 वर्ष के अधिक आयु के कोविड-19 टीके की पहली खुराक ना प्राप्त करने वालों के चिह्नीकरण करने पर जोर दिया।

डोर-टू-डोर सर्वे करे टीम

डीएम ने टास्क फोर्स को निर्देशित किया कि माइक्रोप्लान के अनुसार जनपद में टीमों का गठन किया जाए तथा ग्रामीण क्षेत्रों में टीम में आशा एवं आंगनबाड़ी कार्यकताओं को अनिवार्य रूप से रखा जाए। डोर टू डोर सर्वे में उन्होंने जनपद स्तरीय अधिकारियों डीपीआरओ एवं डीपीओ को निर्देशित किया है कि डीपीओ अपने सारे सीडीपीओ के साथ बैठक करके माइक्रो प्लान बनवा लें तथा प्रत्येक टीम में एक आशा एवं एक आंगनबाड़ी कार्यकत्री रहेगी। यह सभी सीडीपीओ सुनिश्चित करेंगे।

छूटे लोगों का तेजी से कराएं टीकाकरण

डीएम ने जिला पंचायत राज अधिकारी को निर्देशित किया है कि डोर-टू-डोर सर्वे में सहायक पंचायत राज अधिकारी एवं रोजगार सेवक सहयोग करेंगे, जो भी डाटा आयेगा सर्वे के दौरान जो लक्षणयुक्त पाये जायेंगे, उन्हें मेडिकल किट उपलब्ध करायी जायेगी तथा जो मरीज गम्भीर रूप से पीड़ित होंगे, उन्हें सम्बंधित टीम अपने अधीक्षक को सूचित करेगी और अधीक्षक उन्हें आगे के लिए रेफर करेंगे। डोर-टू-डोर सर्वे में जो भी अभी तक किन्हीं कारणों से छूटे है, उन्हें चिह्नित कर टीकाकरण सुनिश्चित किया जायेगा। कोविड-19 के लक्षण वाले व्यक्तियों को टीम के द्वारा मेडिकल किट उपलब्ध कराई जाए एवं कोविड-19 केंद्र में सूचीबद्ध निकटवर्ती जांच केंद्रों के बारे में बताया जाए।

खबर संक्षेप

कड़ी सुरक्षा में टीईटी की परीक्षा आज , 21.65 लाख अभ्यर्थी होंगे शामिल

प्रयागराज। कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच आज दो पालियों में उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा (यूपी-टीईटी) 2021 कराई जाएगी। प्रदेश के सभी 75 जिलों में बनाए गए केंद्रों पर कुल 21,65,181 अभ्यर्थी परीक्षा में सम्मिलित होंगे। पेपर लीक के कारण 28 नवंबर को निरस्त होने के बाद दोबारा से नकलविहीन परीक्षा कराने के लिए एसटीएफ और एलआईयू की टीमें लगाई गई हैं। अभ्यर्थियों को केंद्रों पर परीक्षा शुरू होने के आधे घंटे पहले तक ही प्रवेश मिलेगा। उसके बाद किसी परिस्थिति में प्रवेश की अनुमति नहीं मिलेगी। कोरोना के बढ़ते मामलों को देखते हुए परीक्षा केंद्रों के दरवाजे डेढ़ घंटे पहले ही खोल दिए जाएंगे, ताकि केंद्रों पर भीड़ एकत्रित न हो और सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए अभ्यर्थियों को परीक्षा कक्ष में प्रवेश करने में कठिनाई का सामना न करना पड़े। सुबह 10 से 12:30 बजे की पहली पाली में 2532 केंद्रों पर प्राथमिक स्तर की परीक्षा के लिए 1291628 अभ्यर्थी पंजीकृत हैं। दोपहर 2:30 से 5 बजे की दूसरी पाली में 1733 केन्द्रों पर 873553 परीक्षार्थी उच्च प्राथमिक स्तर की परीक्षा में सम्मिलित होंगे।

हंडिया के बासुपुर में कार में विस्फोट एक की मौत, तीन की हालत नाजुक

हादसे से क्षतिग्रस्त कार के दो हिस्से में बंट गई, घायलों को इलाज के लिए ले जाया गया

अखंड भारत संदेश

हंडिया। थाना अंतर्गत बासुपुर गांव के पास नेशनल हाईवे पर तेज रफ्तार जा रही कार में अचानक विस्फोट हो गया। इससे कार पूरी तरह क्षतिग्रस्त होकर दो भागों में बंट गई। हादसे में एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई जबकि 3 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। धमाके की आवाजह सुनकर आसपास के लोग मौके पर पहुंच गए। हादसे की जानकारी पुलिस को दी। मौके पर पुलिस पहुंच कर सभी .घायलों को पास के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ऊपरदहा इलाज के लिए भेजा। पुलिस मौके पर पहुंच कर हुए हादसे की जांच पड़ताल में लगी है कि कार में धमाका हुआ है या

हादसे के बाद क्षतिग्रस्त कार का दृश्य

किसी वाहन की चपेट में आने से हादसा हुआ है। कार सवार कानपुर से गोपीगंज भदोही बारात में शामिल होने जा रहे थे। कार सवार बासुपुर के पास जैसे पहुंचे वैसे ही कार में अचानक विस्फोट हो गया। इससे कार दो भागों में अलग हो गई । वहीं कार पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई ।जिसमें कार सवार आदित्य तिवारी उम्र लगभग 35 वर्ष की मौके पर ही मौत हो गई। तथा पारुल राजपूत, सौरभ सिंह चौहान और अमरेश कुमार गंभीर रूप से घायल हो गए। वही हादसे के बाद आसपास के लोग मौके पर पहुंचकर इसकी जानकारी हंडिया थाना इंचार्ज केशवदास वर्मा को दिया मौके पर पुलिस फोर्स पहुंचकर सभी घायलों को 108 एंबुलेंस से भेजा।

कोराव में ज्वेलर्स पर कातिलाना हमला,लूट

घायल आभूषण विक्रेता

कोरांव। थाना कोराव के हनुमानगंज से घर वापिस आ रहे एक आभूषण व्यवसाई विवेक सोनी ग्राम महुली को बुरी तरह तमंचे की नोक पर मारा पीटा और हमला कताओं ने स्कूटी में रखे करीब छः लाख के सोने चांदी के आभूषण लूट लिए। थाना कोराव में तहरीर दी गई। आरोप है की पुलिस ने अपने हिसाब से तहरीर दबाव डालकर लिखवा लिया,जिससे केस की रूप रेखा दूसरी बने। भुक्त भोगी ने हमला कर लूट करने वालों को गिरफ्तार कर आभूषण की बरामदगी किए जाने की मांग की है। समाचार लिखे जाने तक गिरफ्तारी बरामदगी की कोई सूचना नहीं मिली।

न्यूज झरोखा

कोरोना महामारी से निपटने के लिए शत प्रतिशत वैक्सीनेशन जरूरी : डा० राकेश केसरवानी

फूलपुर। कोरोना महामारी से बचने के लिए शत प्रतिशत वैक्सीनेशन बहुत ही जरूरी है। बच्चे हमारे देश का भविष्य है। उनका जीवन संकट में न पड़ें इसलिए अभिवावकों को चाहिए की 15 वर्ष की उम्र पूरी कर चुके बच्चों को वैक्सीन जरूर लगवा देना चाहिए। यह बातें शनिवार को बाबूगंज स्थिति मां शान्ति प्रा० आई० टी ०आई० कालेज में लगे कोविड टीकाकरण कैम्प में टीकाकरण के लिए प्रेरित करते हुए संस्थान के प्रबंधक डा० राकेश केसरवानी ने कही। टीकाकरण कैम्प में 15 वर्ष से 18 वर्ष के बच्चों को कोरोना वैक्सीन की डोज दी गई। टीकाकरण कैम्प में आस-पास के ग्रामीणों के साथ ही कुल 270 लोगों का टीकाकरण हुआ। मौके पर स्वास्थ्य कर्मी एएनएम नीतू सिंह,आशा, विनीता, रीता के साथ ही संस्थान के निदेशक ई० योगेश केसरवानी,गौरव जायसवाल, पूर्व प्रधान राम लखन पटेल,अख्तर मसूद,जग नारायण,शनि , सिद्दीकी के साथ ही अन्य ग्रामीण मौजूद रहे।

मांडा पुलिस ने एक अभियुक्त को नाजायज मादक पदार्थ के साथ किया गिरफ्तार

मेजा रोड। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रयागराज अजय कुमार पांडेय के द्वारा मादक पदार्थो की विक्री के विरुद्ध चलाये गये अभियान के अन्तर्गत पुलिस अधीक्षक यमुनापार सौरभ दीक्षित के कड़े निर्देश के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक/ क्षेत्राधिकारी मेजा अमिता सिंह के निर्देशन में थानाध्यक्ष माण्डा महेश कुमार मिश्र के कुशल नेतृत्व में उपनिरीक्षक/चौकी प्रभारी भारतगंज आशीष कुमार राय व उनके हमराही द्वारा अभियुक्त कमलेश कुमार सोनकर पुत्र स्व0 लल्लू सोनकर निवासी वार्ड नं03 खटीकान मोहल्ला कस्बा भारतगंज थाना माण्डा जनपद प्रयागराज को गिरफ्तार कर कब्जे से 1300 ग्राम अवैध नाजायज गांजा बरामद कर आवश्यकविधिक कार्यवाही किया गया।

जंघई में आधा दर्जन दुकानों का ताला तोड़कर चोरों ने लाखों का किया चोरी

जंघई। सरायममरेज थानांतर्गत जंघई बाजार मे बीती रात चोरों ने 6 दुकानों का ताला तोड़कर लाखों का माल चोरी कर लिया।लगातार चोरी होने पर व्यापारियों मे पुलिस के प्रति नाराजगी बढ़ गयी है। जंघई बाजार में शुक्रवार की रात चोरों ने नन्हकूं हार्डवेयर की दुकान का ताला तोड़कर उसमे रख्खा पचास हजार नगद, तीन पानी की मोटर, लोहे की पाइप चुरा लिया विशाल गुप्ता के सरार्फा की दुकान का ताला तोड़कर हजारों का सामान चुरा लिया शिवम यादव, कन्हैया यादव, संतोष चौरसिया की गोमती का ताला तोड़कर हजारों का सामान नगदी चुरा ले गए। राजेश जायसवाल के किराना की दुकान ताला भी ताला तोड़कर सामान चुरा ले गये। सब दुकानें जंघई पुलिस चौकी से महज दो सौ मीटर दूरी पर है।

जंघई जंक्शन पर अज्ञात शव मिलने से हड़कंप

जंघई। जंघई जंक्शन रेलवे स्टेशन के टिकट काउंटर के समीप शनिवार को एक अज्ञात का शव मिलने पर हड़कंप मच गया।शव मिलने की सूचना पर जीआरपी जंघई व मीरगंज पुलिस मे सीमा विवाद को लेकर कई घंटो तक बात होती रही एक बार सिविल पुलिस शव उठाने को लेकर तैयार भी हुई पर उच्च अधिकारियों से बात होने के सिविल पुलिस शव छोड़ कर चली गयी।जंघई जीआरपी इंचार्ज सूर्यकान्त पंडित का कहना है पहले सिविल पुलिस शव ले जाना चाह रही थी बाद मे मना कर दिया तो जीआरपी ने शव को कब्जे मे लेकर पहचान कराने मे जुटी है शव की शिनाख्त नहीं हुई है।

बंगाली बाबू कि वह रोचक घटना से ट्रेनों के कोचों में टॉयलेट का हुआ था इंतजाम

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। माघ मेला क्षेत्र में लगे रेलवे के प्रदर्शनी में रेलवे विभाग ने एक पत्र प्रदर्शनी के रूप में लगाया है जो रेलवे विभाग ने यात्रियों के सुझाव के रूप में पत्र को संज्ञान लेते हुए रेलवे ने अपने सभी पैसेंजर कोच में टॉयलेट का इंतजाम करना शुरू किया था। आपको बता दें कि आज भले ही ट्रेनों में तमाम तरह की सुविधाएं मिल रही हों लेकिन सच यह है कि शुरूआत में भारतीय ट्रेनों में टायलेट यानी शौचालय नहीं हुआ करते थे ' यात्रियों को शौच के लिए ट्रेन से उतरकर खुले में जाना पड़ता था। 16 अप्रैल 1853 को मुंबई से ठाणे के बीच पहली ट्रेन चली थी। 34 किमी का सफर था और 400 यात्री थे। इस ट्रेन में भी शौचालय नहीं था। 1891 में केवल फर्स्ट क्लास के डिब्बों में शौचालय लगे, लेकिन अन्य श्रेणियों में नहीं। 56 साल तक ऐसी ही स्थिति बनी रही। लेकिन, साल 1909 में बंगाल के एक यात्री ओखिल चंद सेन के साथ ऐसी घटना हुई, जिसने ट्रेनों में शौचालय लगाने की शुरूआत की।

1909 में नहीं थे ट्रेनों के डब्बे में टॉयलेट के इंतजाम एक पैसेंजर ने रेलवे को भेजा था पत्र, टॉयलेट लगवाने का किया था आग्रह

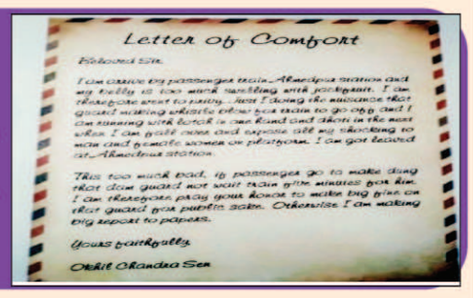

Letter of Comfort

Beloved Sir.

I am arrive by passenger train Ahmedpur station and my belly is too much swelling with jackfruit. I am therefore went to privy. Just I doing the nuisance that guard making whistle blow for train to go off and I am running with lotah in one hand and dhoti in the next when I am fall over and expose all my shocking to man and female women on platform. I am got leaved at Ahmedpur station.

This too much bad, if passenger go to make dung that dam guard not wait train five minutes for him. I am therefore pray your honor to make big fine on that guard for public sake. Otherwise I am making big report to papers.

Yours faithfully

Okhil Chandra Sen

बंगाली बाबू लोटा लेकर बैठे तभी चल दी ट्रेन

बंगाली बाबू के नाम से मशहूर ओखिल चंद्र ट्रेन से यात्रा कर रहे थे। अहमदपुर रेलवे स्टेशन पर ओखिल चंद शौच करने के लिए लोटा लेकर बाहर गए थे, तभी ट्रेन ने हार्न दिया और ट्रेन चल पड़ी। ओखिल चंद एक हाथ में धोती, दूसरे हाथ में लोटा लेकर दौड़े, लेकिन गिर पड़े। यात्री ओखिल चंद की इस स्थिति पर हस रहे थे। इसी घटना को लेकर ओखिल चंद्र ने धमकी भरे लहजे में साहेबगंज डिविजनल कार्यालय को एक पत्र भेजा। इस पत्र में लिखा कि मैं पैसेंजर ट्रेन से अहमदपुर स्टेशन पहुंचा। कटहल खाने से मेरे पेट में बहुत सूजन हो जाने की वजह से शौच गया था, तभी ट्रेन चल पड़ी। मुझे अहमदपुर स्टेशन पर छोड़ दिया गया। यह बहुत बुरा है। यदि यात्री शौच जाता है तो ट्रेन गार्ड उसके लिए पांच मिनट ट्रेन का इंतजार नहीं करता। इसलिए मैं आपसे सार्वजनिक रूप से उस गार्ड पर बड़ा जुमार्ना लगाने के लिए प्रार्थना करता हूं। नहीं तो मैं अखबारों के लिए बड़ी रिपोर्ट बना रहा हूं। इसी पत्र को ब्रिटिश रेलवे ने सुझाव की तरह अमल में लिया और प्रत्येक कोच में शौचालय लगाने की शुरूआत की। रेलवे इस पत्र की कापी माघ मेला में प्रदर्शनी में लगाई है। एनसीआर के सीपीआरओ डा. शिवम शर्मा ने बताया कि रेलवे यात्रियों के प्रत्येक सुझाव को अमल में लाता हैं और यह पत्र उसका उदाहरण है।

पुण्यतिथि पर याद किए गए जनेश्वर

अखंड भारत संदेश

छोटे लोहिया के कृतित्व का कोई सानी नहीं : अशोक

करछना। अपने अनूठे कृतित्व और व्यक्तित्व के चलते देश के राजनयिकों में एक अलग छवि रखने वाले छोटे लोहिया जनेश्वर मिश्र से आज के दौर में राजनीति करने वाले नए लोगों को प्रेरणा लेने की जरूरत है। सामाजिक समरसता की अपनी अद्भुत सोच और चिंतन को लेकर सदैव गरीबों, मजलूमों, जरूरतमंदों समाज के उपेक्षित वर्गों, और गांधी लोहिया के अंतिम व्यक्ति के लिए संघर्षरत रहे। जनेश्वर के राजनीति में आने से उनकी नहीं बल्कि राजनीतिक की ही शोभा बढी।यह बातें छोटेलोहिया की पुण्यतिथि पर चर्चित हास्य कवि अशोक बेशरम ने कही। भीरपुर में आयोजित एक स्मृति सभा के दौरान उन्होंने जननायक को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा की महलों से हंसी ठिठोली कर जब झोपड़ियां बतलाएंगी,सच कहता हूं छोटे लोहिया तब याद तुम्हारी आएगी।स्मृति सभा में मौजूद लोगों ने श्रद्धा सुमन अर्पित

करते हुए कहा कि वह सदैव वाद और वर्ग के अपवादों से ऊपर उठकर कई बार केंद्रीय मंत्री रहने के बावजूद किसी भी तरह के स्वार्थ,दम्भऔर द्वेष से दूर रहे।वर्तमान में भटकते राजनैतिक संदर्भों को लेकर राजनीति में आए नए लोगों को ऐसे नेता से कई सबक और प्रेरणा लेने की जरूरत है। इस दौरान कई क्षेत्रीय प्रबुद्धजन और समाजसेवी मौजूद रहे।

सपा के संभावित उम्मीदवार के दौड़ में चांद मोहम्मद चंदू

अखंड भारत संदेश

सिरसा मेजा। मेजा विधानसभा क्षेत्र से चुनाव को लेकर समाजवादी पार्टी ने अब तक मेजा विधानसभा के प्रत्याशियों के नाम की घोषणा अभी नहीं कर पाई है ' यूपी में सभी पार्टियां अपनी-अपनी जीत की दावेदारी हर सीट पर मजबूती से कर रही है इसी क्रम में मेजा विधानसभा से भी जीत की दावेदारी पक्की करने के लिए कैंडिडेट पर पार्टी के शीर्ष नेताओं की बैठक में अभी तक विधानसभा मेंजा से प्रत्याशी की घोषणा पर काफी मंथन चल रहा है मगर मेजा विधानसभा क्षेत्र से चांद मोहम्मद चंदू अपनी दावेदारी कर रहे तथा उच्च नेताओं के संपर्क में भी बने हैं ' वही टिकट के लिए काफी नेताओं की इस सीट से लाइन लगी हुई है, वही सपा के ऑपोजिट पार्टी भी कहीं से कम नजर नहीं आ रही फिलहाल विधायक नीलम करवरिया भाजपा से चुनाव लड़ने की संभावना है तथा बसपा से सर्वेश उर्फ बाबा तिवारी मैदान में हैं ' गांव मोहल्लों

मेजा विधानसभा से मिल सकता है सपा से टिकट

के चाय की दुकानों पर चर्चा का विषय बना हुआ है कि इस बार का चुनाव तीनों पार्टियां में टक्कर है पलड़ा किस ओर भारी होगा यह जातीय समीकरण पर निर्भर करता है इस तरह की चचाएं लोगों में बनी हुई है ' तथा लोगों का यह भी कहना है कि मेजा विधानसभा क्षेत्र से सपा अगर किसी मुस्लिम कैंडिडेट को चुनाव में उतार देती है तो चुनाव और दिलचस्प हो जाएगा।

पीठ पर धान की बोरी गिरने से पल्लेदार की मौत

आश्वासन मिलने पर दस घंटे बाद पुलिस को सौंपा

अखंड भारत संदेश

नैनी। औद्योगिक थाना क्षेत्र के लवायन कला मोड़ पर स्थित राज्य भंडारण निगम के गोदाम में पल्लेदारी करते समय गुरुवार की शाम एक मजदूर पर धान की बोरी गिर गई थी, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया था। इलाज के दौरान शनिवार की भोर में उसकी मौत हो गई। शव लेकर स्वजन गांव चले गए। मौके पर पहुंची पुलिस को लोगों ने शव नहीं उठाने दिया। मौके पर पहुंचे ठेकेदार ने घंटों चली पंचायत के बाद दस हजार रुपए अंतिम संस्कार के लिए दिया। साथ ही बाद में दो लाख रुपए देने के आश्वासन के बाद परिजन माने। तब पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर शाम करीब तीन बजे पोस्टमार्टम के लिए भेजा। औद्योगिक थाना क्षेत्र के मुंगारी गांव निवासी पंचू वर्मा 35 पुत्र स्व. मोहनलाल वर्मा ट्रकों पर पल्लेदारी करके परिवार का खर्च चलाता था। गुरुवार की शाम 5:00 बजे वह

हादसे के बाद लोगों की उमड़ी भीड़

ट्रक से बोरी उतार रहा था। उसी दौरान एक बोरी उसकी पीठ पर गिर गया, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया था। उसे एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया था, जहां उसकी शनिवार की भोर में इलाज के दौरान मौत हो गई। स्वजन उसका शव लेकर घर चले गए थे। मौके पर पहुंची पुलिस से ग्रामीणो ने मुआवजा दिलाने की मांग की। इसे लेकर घंटों पंचायत चली। बाद में आश्वासन मिलने पर शव पुलिस को उठाने दिया गया। पुलिस का कहना है कि ठेकेदार ने दस हजार रुपए अंतिम संस्कार के लिए दिया और बाद में दो लाख रुपए देने की बात कही है। फिलहाल कोई विरोध मौके पर नहीं हुआ है।

बच्ची को परिजनों से मिलवाने पर एसपी ने दिया प्रशस्ति पत्र

प्रयागराज। श्रद्धालुओं की सेवा में लगी माघ मेला पुलिस के सेवाभाव को देखकर पुलिस अफसर उनको सम्मानित करने लगे हैं। एसपी माघ मेला डॉ. राजीव नारायण मिश्रा ने चौकी प्रभारी धीरेंद्र कुमार को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया है। मेला पुलिस ने बताया कि 20 जनवरी को पांटून पुल नंबर 5 के पास 8 वर्ष की एक बच्ची भटकते हुए मिली। वह रो रही थी। सूचना पर चौकी इंचार्ज धीरेंद्र कुमार ने बच्ची को साथ लेकर छानबीन की। अनाउंस करवाया। कुछ देर बाद ही पुलिस की मदद से बच्ची के घरवाले मिल गए और उन्हें सुपुर्द कर दिया गया। पुलिस ने बताया कि मध्य प्रदेश के रहने वाले संतोष गुप्ता अपने परिवार के साथ माघ मेला आए हैं। उनकी 8 वर्षीय बेटी अनन्या भटक गई थी। उन्होंने पुलिस के इस प्रयास को भी सराहा और कोटि-कोटि धन्यवाद ज्ञापित किया।

हर पोलिंग बूथ जीतकर बसपा को सत्ता में लाने का लिया संकल्प

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। बहुजन समाज पार्टी के पूर्व मण्डल सेक्टर प्रभारी उच्च न्यायालय के अधिवक्ता रंग निर्देशक रामबृज गौतम ने बहुजन बाहुल्य बस्ती भगवतपुर में मतदाता जागरूगता अभियान के तहत कोविड-19 की गाईड लाईन का पालन करते हुये एक बैठक आयोजित किये।

बैठक को सम्बोधित करते हुये रामबृज गौतम ने बताया कि डा. अम्बेडकर बड़ी ही कठिनाइयों, संघर्षो, कष्टों यहां तक की अपने चार चार बच्चों को कुर्बान कर बहुजनों को एक वोट का अधिकार दिलाया। यह वोट दोधारी तलवार के समान है। यदि वोट का सही प्रयोग कर दिए तो दुश्मन का सफाया हो जाएगा और गलत प्रायोग किया तो खुद का सफाया हो सकता है। गौतम ने आगे बताया की मतदान को हमे एक त्योहार के रूप में लेना चाहिये क्योकि मतदान लोकतंत्र का सबसे बड़ा त्योहार है। सब काम छोड़कर हमे मतदान करना है बाकी काम बाद में करना है। समाजसेवी हीरालाल बौद्ध ने दलित मतदाताओं से वोट की टोह ली तो उपस्थित मतदाताओं ने एक स्वर में गरीब किसानों, बेरोजगार की मची है

बहुजन बाहुल्य बस्ती में मतदाता जागरूकता अभियान को संचालित करते रामबृज गौतम

हाहाकार, मायावती के नेतृत्व में बनेगी, बसपा की सरकार। समाजसेवी रामलाल बौद्ध ने बताया कि अगर कोई सरकार जनता को उसके बुनियादी अधिकारों से वंचित रखती है तो जनता का यह अधीकार ही नहीं बल्कि आवश्यक कर्तब्य बन जाता है कि ऐसी सरकार को बदल दे या समाप्त कर दे। बैठक में हुबलाल, रामनरेश, भोला, किशन, लालचन्द्र, पवन कुमार, भोला प्रसाद, गीता, निर्मला, आरती, संगीता, कलावती सुमन, प्रेमा, विमला आदि उपस्थित रहे।

मृत्युदंड व तिहरी उम्रकैद के अभियुक्त का फिर से ट्रायल का निर्देश

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने एक ही परिवार के तीन लोगों की हत्या व नाबालिग से रेप करने के आरोपी को मृत्युदंड और तिहरी उम्रकैद की सजा का फैसला पुनर्विचारण के लिए ट्रायल कोर्ट को वापस भेज दिया है। कोर्ट ने कहा कि विचारण न्यायालय ने फैसला सुनाने से पूर्व अभियोजन और बचाव पक्ष को पर्याप्त समय नहीं दिया। कई महत्वपूर्ण साक्ष्यों पर ठीक से विचार किए बगैर फैसला सुनाया गया है। जबकि ट्रायल का अर्थ होता है सत्य तक पहुंचना। इसमें किसी निर्दोष को सजा नहीं होनी चाहिए और न ही कोई दोषी बचना चाहिए। इसके लिए जरूरी है ?कि अभियोजन और बचाव पक्ष दोनों को अपना पक्ष रखने के लिए पर्याप्त समय दिया जाए। यह निर्णय न्यायमूर्ति मनोज मिश्र एवं न्यायमूर्ति समीर जैन की खंडपीठ ने फांसी की सजा के खिलाफ आजमगढ़ के नजीरुदद्दीन की अपील और फांसी के रिफरेंस पर एकसाथ सुनवाई करते हुए दिया है। नजीरुद्दीन के खिलाफ पीड़ित परिवार के गृह स्वामी, उनकी पत्नी व तीन माह के मासूम बच्चे की हत्या करने और आठ वर्ष की बच्ची को रेप कर गंभीर घायल करने तथा छह साल के मासूम को मरणासन्न कर देने का मुकदमा दर्ज कराया था। पुलिस और फोरेंसिक यूनिट ने घटना में प्रयुक्त ?हथियार, खून से सने कपड़े, घटनास्थल से वैज्ञानिक साक्ष्य एकत्र किए थे। साक्ष्यों को डीएनए ?टेस्टिंग और फिंगर प्रिंट मैचिंग के लिए फोरेंसिक लैब भेजा गया।

लक्ष्मण रेखा से बाहर नहीं जा पाएंगे कोरोना के मरीजः प्राचार्य

जिला अस्पताल का सैम्पल कलेक्शन बूथ ट्राई एरिया घोषित, मेडिकल कालेज प्रशासन की अच्छी पहल

वार्ड का निरीक्षण करते मेडिकल कालेज के प्राचार्य डा0 आर्य देश दीपक।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। कोरोना पॉजिटिव घूमकर संक्रमण नहीं फैला पायेंगे। वे घर या फिर कोविड अस्पताल में भर्ती नजर आयेंगे। मरीजों को चिन्हित करने के लिए मेडिकल कालेज प्रशासन ने पुरुष अस्पताल में ट्राईज एरिया बना दिया है, जिसमें बुजुर्ग और इमरजेंसी वाले कोरोना टेस्ट के लिये आये मरीज रखे जायेंगे। जिनकी रिपोर्ट पॉजिटिव आयेगी उनको ट्राईज दायरे से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी। उनको इलाज के लिए रखा जाएगा। मेडिकल कालेज प्राचार्य आर्य देश दीपक ने ट्राई एरिया वार्ड का निरीक्षण कर जांच कर रहे कर्मचारियों को हिदायत दी है।

कोरोना से मरीजों के साथ समाज की सेहत सुधारने के लिए मेडिकल कालेज प्रशासन ने एक अच्छी पहल की है। बुजुर्गों और इमरजेंसी केस वाले मरीजों की कोरोना टेस्ट की जांच के लिए जिला अस्पताल में स्ट्रैटिक बूथ के बगल ही ट्राईज एरिया बनाया गया है। जिसमें 10 बेड का वार्ड है। बूथ पर कोरोना का सैम्पल देने आये मरीज को उसी वार्ड में तब तक रखा जायेगा जब तक कि उसकी कोरोना की रिपोर्ट नहीं आ जाती है। रिपोर्ट की तीन कटेगरी बनाई गई है। पहली, मरीज पॉजिटिव है तो उसे एलटू अधिक गंभीर है तो एलथ्री अस्पताल भेजा जायेगा। अगर हल्के फुल्के लक्षण हैं तो वह आइसोलेट होने के लिए घर भेज दिया जाएगा। क्योंकि मरीजों को तीनों कैटेगरी यहीं से निर्धारित होगी। इसलिए इसको ट्राईज एरिया नाम दिया गया है। इसके बन जाने से दो फायदे हुये। एक मरीजों को रिपोर्ट के लिए भटकना नहीं पड़ेगा यही से बेहतर इलाज शुरू हो जायेगा। दूसरा उसके द्वारा समाज, परिवार के बाकी लोग संक्रमित नहीं हो सकेंगे। प्राचार्य डॉक्टर आर्य देश दीपक ने एरिया का निरीक्षण किया। एलटी सौरभ से सैम्पलिंग की जानकारी ली। उन्होंने बताया कि बुजुर्ग और सीरियस केस में ट्राईज एरिया वार्ड में मरीज रिपोर्ट आने तक रखे जाएंगे। उसके बाद उनको दूसरी जगह शिफ्ट किया जायेगा।

स्वास्थ्य विभाग का दस्तक अभियान 24 को

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। पोलियो की तर्ज पर कोरोना संक्रमितों और टीका से वंचित बुजुर्ग, बच्चे और गंभीर रोगियों की तलाश करने के लिए स्वास्थ्य विभाग की तरफ से जिले में 24 से 29 जनवरी तक दस्तक अभियान चलाया जाना है इसके लिए स्वास्थ्य विभाग की टीमें घर घर जाकर जानकारी लेंगी। इस कार्य के लिए एएनएम, आशा और आंगनबाड़ी कार्यकताओं को प्रशिक्षित किया गया है। उनको इसकी गाइड लाइन बता दी गई है। जो भी लापरवाही करेगा उसको दंडित किया जायेगा। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर एके श्रीवास्तव ने शनिवार को प्रेस वार्ता में यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि 60 साल से ऊपर के बुजुर्ग को कोरोना रोधी टीका, बुस्टर डोज लगा है कि नहीं, दो साल के बच्चे को पोलियो इत्यादि का टीका लगा है कि नहीं साथ ही घर में गंभीर रोग से ग्रसित मरीज का पता लगाने के लिए स्वास्थ्य विभाग की टीम गली,मोहल्ले में घर घर जायेगी। जिनको टीका नहीं लगा होगा उनको लगाया जायेगा। गंभीर रोगियों का यथोचित इलाज किया जायेगा। इसके लिए माइक्रोप्लान बनाया गया है।

सई नदी घाट पर आरती करते गंगा समग्र टीम के पदाधिकारी।

आदि गंगा सैनदिका की दशा बदलेगी : प्रभात

गंगा समग्र की टीम ने घाट पर की आरती

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। विनायक चतुर्थी के अवसर पर गंगा समग्र प्रतापगढ़ टीम की ओर से आज कड़ाके की ठंड के बावजूद पवित्र सई नदी तट मां बेल्हा देवी घाट पर आरती का आयोजन किया गया। इस पवित्र आयोजन में में प्रतिभाग करते हुए कार्यक्रम को एक नया आयाम गंगा वाहिनी श्लोक मिश्र और सह नदी प्रमुख आलोक सिंह, संयोजक प्रभात मिश्र द्वारा मनोनीत किया गया। संयोजक प्रभात मिश्र ने कहा कि गंगा समग्र के राष्ट्रीय नेतृत्व द्वारा माँ सैनदिका की साफ सफाई एवं नदी में गिरने वाले नाले की रोकथाम हेतु टॉस्क फोर्स गठित करने का निर्देश प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर प्रमुख रूप से साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शशिभाल त्रिपाठी, डॉ चक्रपाणि उपाध्याय, घाट प्रमुख विनय सिंह, पंडित निशा कांत मिश्रा, अखिलेश निगम, सभासद अनिल सिंह, डॉक्टर आस्था भजन चैनल के विनय मधुकर, अमर पति, विनय सहित भारी संख्या में श्रद्धालु गण उपस्थित रहे। आरती प्रमुख राम उजागिर ने सभी का आभार व्यक्त किया।

टीईटी परीक्षा को लेकर परीक्षा केन्द्र के आसपास निषेधाज्ञा लागू

अखंड भारत संदेश

अपर जिला मजिस्ट्रेट ने लगाई धारा-144

प्रतापगढ़। उ0प्र0 शिक्षक पात्रता परीक्षा (यूपी-टीईटी) 2021 की परीक्षा 23 जनवरी रविवार को प्राथमिक स्तर की प्रातः 10 बजे से दोपहर 12.30 बजे तथा उच्च प्राथमिक स्तर की परीक्षा अपरान्ह 2.30 बजे से अपरान्ह 5 बजे तक आयोजित होगी। परीक्षा की संवदेनशीलता के दृष्टिगत इसकी शुचिता एवं निष्पक्षता बनाये रखने के उद्देश्य से अपर जिला मजिस्टेज्ट सुनील कुमार शुक्ल ने परीक्षा केन्द्रों के आस-पास दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा-144 के अन्तर्गत निषेधाज्ञा लागू कर दिया है।

उन्होंने बताया है कि परीक्षा से सम्बन्धित क्षेत्र में समस्त स्टाफ/अधिकारी/परीक्षार्थी/मजिस्टेज्ट एवं सुरक्षा बल के अतिरिक्त कोई भी व्यक्ति अथवा समूह परीक्षा केन्द्रों के 200 मीटर की परिधि में प्रवेश नहीं करेगा। परीक्षा केन्द्र के आस-पास एक किमी0 की परिधि में फोटो कापियर एवं स्कैनर का संचालन परीक्षा अवधि में पूर्णतया प्रतिबन्धित रहेगा। परीक्षा केन्द्रों के भीतर अभ्यर्थियों को परीक्षा हाल/कक्ष के भीतर प्रवेश पत्र तथा काले बॉल प्वाइंट पेन के अलावा किसी भी प्रकार की पाठ्य-सामग्री, कैलकुलेटर, स्लाइड रूलर, लॉग टेबल तथा कैलकुलेटर की सुविधा वाली इलेक्ट्रानिक घड़िया, मुद्रित अथवा लिखित सामग्री, कागज के टुकड़े, मोबाइल फोन, पेजर अथवा किसी अन्य प्रकार का उपकरण लाना पूर्णतया प्रतिबन्धित रहेगा। कोई भी परीक्षार्थी बिना परीक्षा सम्पन्न हुये सक्षम अधिकारी की अनुमति के बिना परीक्षा कक्ष से बाहर नहीं जायेगा और न ही उत्तर पुस्तिका बाहर ले जायेगा। परीक्षा की समाप्ति तक किसी भी अभ्यर्थी अथवा प्रश्न पत्र को परीक्षा केन्द्र से बाहर नही लाने दिया जायेगा। कोविड-19 के प्रोटोकाल का कदापि उल्लंघन नही किया जायेगा। धारा-144 जनपद के उ0प्र0 शिक्षक पात्रता परीक्षा से सम्बन्धित परीक्षा केन्द्रों पर 22 जनवरी चली गई थी। यह जानकारी देते हुए नगर पालिका के सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह ने बताया कि जिलाधिकारी डा0 नितिन बसंल के आदेश पर नगर पालिका के अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह, स्वच्छ भारत मिशन के वरुण कुमार सिंह, आरआई लाल बहादुर सिंह, राजेश बिंद, सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह, टीसी वीरेन्द्र कुमार सिंह, अनिल शुक्ला तथा दहिलामऊ चैकी प्रभारी मिथिलेश चैरसिया आदि की मौजूदगी में कम्पनी गार्डेन के सामने की सब्जी मण्डी खाली करा ली गई। उसके बाद नगर पालिका के अधिकारी व कर्मचारी सिटी रोड पर सगरा ढलान भी गए जहां दुकानें लगाई जा रही थी। नगर पालिका ने चेतावनी दी है कि भविष्य में कोई दुकानदार अब कम्पनी गार्डेन के आगे सब्जी की दुकान नहीं लगाएगा।

दो आरोपियों के खिलाफ पीड़िता के साथ मारपीट का मुकदमा

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने दो आरोपियो के खिलाफ पीड़िता के साथ मारपीट तथा तोडफोड को लेकर केस दर्ज किया है। कोतवाली के कान का पुरवा बेलहा निवासी रामपदारथ की पत्नी अनारा देवी ने दी गई तहरीर मे कहा है कि नौ जनवरी को गांव के आरोपी जीतलाल व सहदेव ने रंजिशन उसे गाली देते हुए मारापीटा। आरोपियो ने विरोध करने पर पीड़िता का मोबाइल तोडकर नष्ट कर दिया। तहरीर के आधार पर शुक्रवार की रात पुलिस ने जीतलाल समेत दो के खिलाफ केस दर्ज किया है।

डा0 आरके वर्मा का इस बार सपा से लड़ना लगभग तय

दो बार भाजपा के सहयोग से अद (एस) से बने थे विधायक

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। समाजवादी पार्टी व भारतीय जनता पार्टी ने अभी तक अपने पत्ते यहां नहीं खोले हैं, लेकिन कुछ नेता अपने आला कमान से हरी झण्डी मिलने पर अपने क्षेत्र में काम करना शुरू कर दिये हैं। सबसे दिलचस्प मुकाबला इस बार विश्वनाथगंज में देखने को मिलेगा।

दो बार अपना दल (एस) से टिकट पाकर भाजपा के गठबंधन से डा0 आरके वर्मा विधायक बने थे लेकिन इस बार चुनाव घोषणा के पहले उन्होंने अपना दल (एस) से इस्तीफा देकर समाजवादी पार्टी का दामन थाम लिया है। उनके

डा0 आरके वर्मा।

टिकट मिलने से क्षेत्र में लगातार समाजवादी पार्टी का झण्डा फहराने वाले पूर्व मंत्री राजाराम पाण्डेय के पुत्र संजय पाण्डेय असहज हो गये हैं। अभी वह भी एड़ी चोटी का जोर लगाए हुए हैं लेकिन जानकार सूत्रों का कहना है कि सपा डा0 आरके वर्मा को ही इस क्षेत्र से अजमाएगी। डा0 आरके वर्मा को भी विश्वास है कि समाजवादी पार्टी की घोषणा होने पर उन्हें इस क्षेत्र से टिकट अवश्य मिलेगा। इस क्षेत्र से बसपा ने अशफाक अहमद को चुनाव मैदान में उतारा है। अपना दल (एस) और भाजपा गठबंधन से अभी प्रत्याशी घोषित नहीं हुआ है। इसका प्रत्याशी घोषित होने पर ही स्थिति साफ होगी, लेकिन इतना तय है कि जो भी प्रत्याशी होंगे, वह सपा के डा0 आरके वर्मा से ही लडेंगे।

विश्वनाथगंज व सदर सीट पर अपना दल (एस) का दावा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिले के सात सीटों में दो सीटों सदर व विश्वनाथगंज पर अपना दल (एस) अपना दावा ठोंक रही है। सन 2017 के चुनाव में विश्वनाथगंज से डा0 आरके वर्मा चुने गये थे और सदर से संगम लाल गुप्ता चुने गये थे। संगम लाल गुप्ता के सांसद बनने पर भाजपा कार्यकर्ता राजकुमार पाल को अपना दल (एस) का टिकट देकर विधायक बना दिया गया था। इस बार सदर सीट पर भाजपा के कई दावेदार इन दिनों जोर आजमाइश कर रहे हैं। इनमें पूर्व विधायक हरिप्रताप सिंह व वरिष्ठ भाजपा नेता राजा अनिल प्रताप सिंह सहित कई नेता इन दिनों लखनऊ व दिल्ली की दौड़ लगा रहे हैं।

कम्पनी गार्डेन के सामने से हटाई गई सब्जी मण्डी

अखंड भारत संदेश

हीला-हवाली करने वाले दुकानदारों पर नपा ने ठोंका जुमार्ना

कम्पनी गार्डेन के सामने अतिक्रमण हटाने के दौरान लगी भीड़।

प्रतापगढ़। नगर के कम्पनी गार्डेन के सामने लगने वाली सब्जी मण्डी आज शनिवार को हटा दी गई। कुछ दुकानदार तो स्वतः अपनी दुकान मीरा भवन के आगे सिटी रोड पर सगरा ढलान पर लेकर चले गये जहां नगर पालिका ने एक दुकान के लिए आठ फिट की जगह आवंटित की है।

जो दुकानदार अपनी दुकानों को ले जाने में हीला-हवाली कर रहे थे, उनके लिये नगर पालिका के अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह ने सख्त कदम उठाते हुए तीन दुकानदारों पर एक-एक हजार का जुमार्ना ठोंक दिया तथा कुछ दुकानदारों को जेसीबी से हाने का प्रयास किया गया तो दुकानदार अपनी दुकानों को हटाने लगे। इस प्रकार अपरान्ह तक सभी दुकानों कम्पनी गार्डेन से सगरा ढलान पर

पुलिस ने शुरू की सख्ती, बड़ी संख्या मे पाबन्दी के साथ गुण्डा एक्ट की कार्रवाई से खलबली

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। विधानसभा चुनाव को लेकर पुलिस ने सख्ती तेज कर दी है। चिन्हित शरारती तत्वों के खिलाफ जहां रिकार्ड पाबंदी शुरू की गई है। वहीं बड़ी संख्या मे गुण्डा तथा मिनी गुण्डा एक्ट की भी कार्रवाई की गयी है। लालगंज कोतवाली पुलिस ने अब तक साठ मिनी गुण्डा एक्ट तथा आठ के खिलाफ गुण्डा एक्ट की कार्रवाई की है। वहीं पुलिस ने अब तक पैतालिस सौ लोगों को चिन्हित कर चुनाव के लिए पांबदी सूची भेजी है। इसमें सात सौ पुलिस द्वारा पाबन्द कराये जा चुके है। पुलिस की इस कार्रवाई से इलाके मे हडकंप का माहौल भी देखा जा रहा है। वहीं कोतवाल कमलेश पाल ने बताया कि अभी और लोगों को चिन्हित कर उनके खिलाफ गुण्डा एक्ट तथा मिनी गुण्डा एक्ट व पाबंदी की कार्रवाई तेजी से की जाएगी। वहीं उन्होने कहा कि जिन लोगों ने शस्त्र नही जमा किया है उन्हें भी सूचीबद्ध किया जा रहा है। सार्वजनिक मुनादी कराकर ऐसे लाइसेंसियों को आगाज किया जाएगा। इसके बाद इनके शस्त्र निरस्तीकरण की संस्तुति कर दी जाएगी।

आज पहाड़पुर आयेंगे अरूणांचल के राज्यपाल

लालगंज, प्रतापगढ़। अरूणांचल प्रदेश के राज्यपाल ब्रिगेडियर बी.डी. मिश्र रविवार की सुबह संक्षिप्त दौरे पर पहाड़पुर आयेंगे। अरूणांचल के राज्यपाल प्रातः दस बजे पहाड़पुर स्थित अपनी ससुराल मे संक्षिप्त निजी कार्यक्रम मे शामिल होगें। अरूणांचल के राज्यपाल के दौरे को लेकर शनिवार को पुलिस व प्रशासनिक अफसरो ने सांगीपुर थाना क्षेत्र के पहाडपुर मे उनकी सुरक्षा सम्बन्धी व्यवस्थाओं का जायजा लिया। सीओ लालगंज रामसूरत सोनकर तथा लालगंज कोतवाल कमलेश कुमार पाल एवं सांगीपुर एसओ जीतेन्द्र सिंह ने पुलिस व प्रशासनिक प्रबन्धों को लेकर मंथन मे जुटे दिखे।

एक लाख की नकदी समेत आभूषण चोरी पर केस

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने एक लाख नकदी समेत महिलाओं के सोने चांदी के कीमती आभूषण की चोरी को लेकर केस दर्ज किया है। देल्हूपुर के मनोज गौड पुत्र रामसुमेर ने दी गई तहरीर मे कहा है कि बीती ग्यारह जनवरी की रात अज्ञात चोर कमरे से चोरी कर लाखों के जेवरात उड़ा ले गये। बदमाशों ने आलमारी मे रखे एक लाख रुपए नकदी पर भी हाथ साफ कर दिया।

बाइक सवार युवक को अज्ञात लोगों ने मारी गोली, प्रयागराज रेफर, पुलिस जांच में जुटी

अखंड भारत संदेश

बाघराय, प्रतापगढ़। जिले के बाघराय थाना क्षेत्र के धमांवा गांव निवासी नीरज (22) वर्ष पुत्र लालजी बीते शुक्रवार की देर शाम भाव चैराहे से अपने घर लौट रहा था। करीब 10 बजे के करीब लाला का पुरवा मोड़ के पास पीछे से आए बाइक सवार बदमाशों ने उसे गोली मारकर भाग निकले। गोली नीरज के बाएं हाथ में गांठ की बांह में लगी है जिससे वह बाइक लेकर गिर पड़ा। राहगीरों की सूचना पर पुलिस व परिजन उसे उपचार के लिए सीएचसी बाघराय ले आए जहां डॉक्टरों ने प्रारंभिक उपचार के बाद यह आर यन प्रयागराज रेफर कर दिया। बाघराय थाना अध्यक्ष अखिलेश कुमार का कहना है कि युवक को इलाज हेतु रेफर किया गया है मामले की जांच की जा रही है अभी तक कोई तहरीर नहीं मिली है। उनका कहना है कि घटना संदिग्ध प्रतीत होती है। मामला स्पेस बंदी का लगता है। फील्ड यूनिट घटना की बारीकी से जांच कर रही है फिलहाल तहरीर नहीं मिली है। मामले की जांच की जा रही है घटना की सच्चाई जल्द ही सामने आ जाएगी।

कार व बाइक में आमने सामने भिड़ंत, छह घायल

प्रतापगढ़। अंतू इलाके के पूरे अंती गांव के पास शनिवार को कार व बाइक में आमने-सामने भिड़त होने पर अर्टिका कार में सवार चार लोग घायल हो गये, वहीं बाइक पर सवार दो लोगों को भी चोटें लगी है। बता दें कि घटना स्थल के पास पिकेट से पुलिस नदारद थी। घटना की जानकारी होने पर मौके पर पहुंचे एसओ अर्जुन सिंह यादव ने जीप से घायलों को मेडिकल कालेज भेजा, जहां घायलों का इलाज चल रहा है।

टीईटी परीक्षा को लेकर तैयारियों मे मशक्कत करता दिखा प्रशासन

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। टीईटी की रविवार को होने वाली परीक्षा को लेकर प्रशासन को शनिवार को तैयारियों को लेकर मशक्कत मे देखा गया। वहीं परीक्षा केन्द्रो पर परीक्षार्थियों के सीटिंग प्लान व कोरोना से बचाव को लेकर प्रबंधन मे शिक्षको को भी हलाकान होते देखा गया। नगर के रामअंजोर मिश्र इण्टर कालेज, रामस्वरूप रामआधीन गुप्ता इण्टर कालेज, अवधेश विद्या निकेतन इण्टर कालेज, सरस्वती विद्या मंदिर इण्टर कालेज व बालिका विद्यालय तथा हेमवती नंदन बहुगुणा पीजी कालेज मे बने परीक्षा केन्द्रों पर पुलिस ने सुरक्षा के एहतियातन प्लान तैयार किये है। वहीं टीईटी परीक्षा को लेकर नगरीय क्षेत्र मे होने वाली भीड़ को भी नियंत्रित करने के लिए विभिन्न चैराहों व तिराहो पर अतिरिक्त फोर्स की भी तैनाती नजर आयेगी।

दोपहर तक होती रही रिमझिम वर्षा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। पश्चिमी क्षोभ ने आज मौसम बदल दिया। सुबह से ही बादल छाए हुए थे और रिमझिम वर्षा भी हुई। इससे दोपहर के बाद ठंड व गलन से लोग घरों में दुबके रहे लेकिन अपरान्ह दो बजे के बाद धूप निकली तो लोगों ने राहत महसूस किया। मौसम विभाग की मानें तो शनिवार को 2 मिमी वर्षा रिकार्ड की गई। इससे न्यूनतम तापमान घटकर आठ डिग्री सेल्सियस हो गया। बताया गया कि पूर्वी हवा चल रही है। ठंड व गलन का प्रभाव बना हुआ है। वर्षा होने से किसान सहमे हुए हैं। आलू, मटर, चना आदि को नुकसान हो रहा है। अभी ज्यादा वर्षा नहीं हुई, नहीं तो आलू, मटर, चना की फसल बर्बाद हो सकती है। उधर ठंड के प्रकोप से जानवरों का भी बुरा हाल है। अलाव के पास गाय, बछड़ा ठंड से बचने के लिये अलाव तापते रहे। नगर के विभिन्न चैराहों पर जल रहे अलाव से राहगीर भी आग तापते रहे।

अपरान्ह में खिली धूप तो मिली राहत

ठंड से बचने के लिये अलाव तापते आवारा पशु।

मौसम ने बदला करवट, अलाव से मिली राहत

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। शनिवार को सुबह से ही अचानक मौसम ने फिर करवट बदल लिया। हल्की बूंदाबांदी के साथ सर्द हवाओं मे लोग ठिठुरते दिखे। मौसम मे नमी के कारण तहसील तथा अन्य सरकारी संस्थानों पर भीड़ अपेक्षा से कम दिखी। वहीं नगर पंचायत की कार्यदायी संस्था अलाव के प्रबन्धों मे जुटी देखी गयी। अधिशाषी अधिकारी सुभाषचंद्र सिंह ने नगर की बाजार समेत वार्डो मे भ्रमण कर सार्वजनिक स्थानों पर अलाव के प्रबन्धों का जायजा लिया। वहीं लोगों को ठिठुरते मौसम मे अलाव के प्रबन्धों को लेकर राहत मे देखा गया। लोग चैराहे व तिराहे अलाव मे हाथ सेंक कर ठण्ड से बचाव करते भी देखे गये।

कार्डधारकों का खाद्यान्न वितरण वितरण शुरू

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिला पूर्ति अधिकारी रीना कुमारी ने बताया कि माह जनवरी, 2022 के द्वितीय चरण में प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजनान्तर्गत अन्त्योदय व पात्र गृहस्थी कार्डधारक को शनिवार से से 31 जनवरी तक निःशुल्क खाद्यान्न का वितरण उचित दर विक्रेताओं द्वारा ई-पॉस मशींन के माध्यम से किया जा रहा है। वितरण की अन्तिम तिथि 31 जनवरी निर्धारित है।

इस अवधि में अन्त्योदय एवं पात्र गृहस्थी कार्डधारक, सम्बद्ध यूनिटों पर 05 किग्रा0 खाद्यान्न (03 किग्रा0 गेहूँ व 02 किग्रा0 चावल) प्रति यूनिट के आधार पर निःशुल्क प्राप्त कर सकते है। आधार प्रमाणीकरण के माध्यम से खाद्यान्न प्राप्त न होने की स्थिति में कार्डधारक मोबाइल ओ0टी0पी0 वेरीफिकेशन के माध्यम से वितरण की अन्तिम तिथि अर्थात 31 जनवरी को खाद्यान्न प्राप्त कर सकते हैं। न्होने बताया है कि राशनकार्ड धारकों को पोर्टेबिलिटी के अन्तर्गत खाद्यान्न प्राप्त करने की सुविधा उपलब्ध रहेगी तथा पोर्टेबिलिटी चालान जारी करने की सुविधा 26 जनवरी तथा 27 जनवरी को उपलब्ध रहेगी। वितरण से सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधान हेतु अपने पूर्ति निरीक्षक, क्षेत्रीय खाद्य अधिकारी, उपजिलाधिकारी व जिला पूर्ति अधिकारी से सम्पर्क कर सकते है। समस्त उचित दर विक्रेता कोविड प्रोटोकाल का पालन करते हुए नियमानुसार वितरण करना सुनिश्चित करेंगे।

खबर संक्षेप

शराब के साथ अभियुक्त को किया गिरफ्तार

कौशाम्बी। जिले में चलाए जा रहे अवैध शराब के निर्माण एंव तस्करी के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना मंझनपुर पुलिस बल द्वारा अभियुक्त सम्पत धोबी पुत्र मध्धू निवासी लौचना थाना मंझनपुर को गिरफ्तार कर कब्जे से 20 लीटर अवैध शराब बरामद होने पर अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है।

वांछित अभियुक्त किया गया गिरफ्तार

कौशाम्बी। जिले में अलग अलग थानों द्वारा दो वांछित अभियुक्तो को गिरफ्तार कर उनको न्यायालय भेज दिया है जानकारी के मुताबिक थाना मंझनपर पुलिस बल द्वारा पॉक्सो एक्ट का वाछित अभियुक्त मो० फैजान उर्फ सेबू पुत्र हबीब अहमद निवासी मंसूर नगर कस्बा व थाना मंझनपुर को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है। इसी प्रकार थाना पश्चिम शरीरा पुलिस बल द्वारा वांछित अभियुक्त राम लखन लोधी पुत्र राधेश्याम निवासी लोधौरा कायमपुर थाना पश्चिम शरीरा को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

कोरोना के दृष्टिगत पुलिस ने की कार्यवाही

कौशाम्बी। जनपद मे लाकडाउन के दृष्टिगत सरकार द्वारा निर्गत निदेर्शों के अनुपालन के क्रम में पुलिस अधीक्षक के निदेर्शानुसार जनपद स्तर पर विभिन्न थानों द्वारा अनावश्यक रूप से बाहर घूमने मास्क न लगाने एवं सोशल डिस्टेसिंग का पालन करने वालों के विरुद्ध सघन चेकिंग की गई एंव चेकिंग के दौरान दो पहिया व चार पहिया वाहनों को चेक किया गया, जिनमें 129 वाहनों का ई चालान किया गया एवं 01 वाहन का चालान कर 500 रुपए सम्मन शुल्क वसूला गया।

हटाए गए पुलिस अधीक्षक

कौशाम्बी। चुनाव आयोग ने विधानसभा चुनाव को देखते हुए पुलिस अधीक्षक कौशाम्बी राधेश्याम विश्वकर्मा का ट्रान्सफर कर दिया है। एसटीएफ में तैनात आईपीएस हेमराज मीणा कौशाम्बी एसपी बनाये गए।

कौशाम्बी की तीनों सीट सहित 300 का आंकड़ा पार करेगी बीजेपी : केशव प्रसाद मौर्य

सिराथू प्रत्यासी की घोषणा के प्रथम आगमन पर डिप्टी सीएम का हुआ जगह जगह भव्य स्वागत

2012 के विधानसभा चुनाव में जनता ने उन्हें 10,000 अधिक वोटों से विजई बनाया था इस बार प्रदेश की भाजपा सरकार में उन्होंने आम जनमानस के हित के लिए तमाम योजनाएं संचालित की हैं आम जनमानस का उन्हें समर्थन प्राप्त है सिराथू विधानसभा ऐतिहासिक जीत होगी

मां का आशीर्वाद लेते डिप्टी सीएम

शीतला माता का दर्शन करते डिप्टी सीएम उपस्थित अन्य

अखंड भारत संदेश

अझुवा कौशाम्बी। भारतीय जनता पार्टी द्वारा प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य को सिराथू विधान सभा से प्रत्यासी घोषित किया गया प्रत्यासी घोषित होने पर पहली बार जनपद आगमन पर कार्यकताओं,पदाधिकारियों आमजनमानस ने जगह जगह डिप्टी सीएम का जोरदार स्वागत किया है सर्वप्रथम डिप्टी सीएम ने शक्ति पीठ कड़ाधाम में माँ शीतला का परिवार सहित दर्शन कर प्रदेश वासियों की खुशहाली की कामना की है इसके बाद दारानगर में पार्टी पदाधिकारी आद्याप्रसाद पांडेय के घर आयोजित शादी समारोह में शामिल होकर शुभकामनाएं दी है फरीदागंज पार्टी कार्यकर्ता दिरगज के छोटे भाई के निधन की सूचना पर उनके आवास पहुंचकर उन्होंने शोक संवेदना व्यक्त किया हैं 3 दिन पहले लापता भारतीय जनता पार्टी के जिला पंचायत सदस्य प्रतिनिधि राजीव मौर्य के घर पहुंचकर जानकारी ली है एवम पुलिस प्रसाशन से अलग टीम बनाकर शीघ्र लापता राजीव मौर्य को सकुशल बरामद करने का निर्देश दिया है लापता राजीव मौर्या के परिजनों से मिलने के बाद जैसे ही डिप्टी सीएम का काफिला बाहर निकला कुछ विरोधी खेमे के लोगों ने डिप्टी सीएम के प्रति अभद्र नारेबाजी की हैं नारेबाजी करने में विरोधी खेमे की साजिश समझ में आ रही है।

इसके बाद डिप्टी सीएम का काफिला पैतृक घर सिराथू पहुंचा वहां पत्रकार वार्ता कर सरकार द्वारा जनहितकारी योजनाओं को साझा किया है पत्रकार वार्ता में उपमुख्यमंत्री ने कहा कि पार्टी ने हमे जन्म भूमि को कर्मभूमि में लाने को कार्य सौंपा है जिसमे हमे आशा ही नही पूर्ण विश्वास है सिराथू विधानसभा सहित जनपद की सभी सीटों एवम प्रदेश में 300 से अधिक सीटें जीतकर पार्टी सरकार बनाएगी पत्रकारों के सवाल पर जनअधिकार एआइएम सहित छोटी पार्टियों के गठबंधन के सवाल पर उन्होंने कहा कि 2019 में विपक्षी पार्टियों ने सबसे बड़ा गठबंधन किया था क्या हुआ वही इस बार होगा डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि डबल इंजन की सरकार प्रदेश एवम देश हित के लिए काम कर रही है सरकार की योजनाओं का बखान करते हुए उन्होंने कहा कि गरीबों को आवास, शौचालय बिजली की उपलब्धता सौभाग्य योजना,गैस कनेक्शन आयुष्मान योजना गरीब परिवारों को कोरोना के डेढ़ वर्ष तक 15 करोड़ लाभार्थियों को निशुल्क

लापता राजीव मौर्य के परिजनो से मिलते डिप्टी सीएम

दाल तेल नमक गेंहू चावल वितरण किया जा रहा है गरीबों को समर्पित भाजपा सरकार ने किसान सम्मान निधि से किसानों को नवाजा है इसके बाद सिराथू गेस्ट हाउस में आयोजित पार्टी कार्यकताओं पदाधिकारी से मिल कर उन्होंने स्थितियों पर गहन मंत्रणा की है इस दौरान उन्होंने कहा कि वर्ष 2012 के विधानसभा चुनाव में जनता ने उन्हें 10,000 अधिक वोटों से विजई बनाया था इस बार प्रदेश की भाजपा सरकार में उन्होंने आम जनमानस के हित के लिए तमाम योजनाएं संचालित की हैं आम जनमानस का उन्हें समर्थन प्राप्त है सिराथू विधानसभा ऐतिहासिक जीत होगी।

मानवाधिकार के राष्ट्रीय अध्यक्ष से मिले जितेंद्र शर्मा

कौशाम्बी। कांग्रेस मानवाधिकार जिला अध्यक्ष जितेंद्र शर्मा ने कांग्रेस संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष मानवाधिकार आरटीआई, विधि,विभाग कांग्रेस राज्यसभा सांसद मध्यप्रदेश उहउ सदस्य वरिष्ठ अधिवक्ता प्रसिद्ध कानूनविद माननीय विवेक कृष्ण तंखा से दिल्ली मे मुलाकात कर नववर्ष की शुभकामनाएँ दी व आशीर्वाद प्राप्त किया जितेंद्र शर्मा के अचानक दिल्ली पहुंच जाने और मुलाकात करने के बाद सांसद ने खुशी व्यक्त की उन्होंने कहा कि हमें अच्छा लगा जब कोई जमीनी नेता उनसे मुलाकात करने आता है साथ मे उत्तर प्रदेश मे राजनीति पर भी प्रकाश डाला उन्होंने कहा कि प्रियंका के साथ मिलकर काम करिए यह परीक्षा की घडी है संगठन की ऊर्जा लगाइए मेहनत करिए समय आने पर आपको व आपकी टीम को सम्मानजनक जगह रखा जाएगा यह आश्वासन दिया गया इस मौके पर ब्लाक अध्यक्ष मंझनपुर दीपक राजपूत उपस्थित रहें।

राष्ट्रीय अध्यक्ष से मिलते जितेन्द्र शर्मा

मतदाता जागरूकता के सम्बन्ध में रंगोली एवं स्लोगन कार्यक्रमों का आयोजन

कौशाम्बी। उप जिला निर्वाचन अधिकारी जयचन्द्र पाण्डेय ने मतदाता दिवस के अवसर पर 25 जनवरी 2022 को मतदाता दिवस के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन के सम्बन्ध में जिला विद्यालय निरीक्षक जिला बेसिक शिक्षाधिकारी एवं स्कूल संचालकों के साथ बैठक की बैठक में उप जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि कोविड-19 गाइडलाइन का अनुपालन करते हुए मतदाता जागरूकता के सम्बन्ध में रंगोली एवं स्लोगन आदि प्रतियोगिता तथा अन्य कार्यक्रमों का आयोजन कराया जाय। उन्होंने कहा कि आदर्श आचार संहिता का अनुपालन किया जाय एवं कार्यक्रम में किसी भी राजनैतिक व्यक्ति को आमन्त्रित न किया जाय और न ही राजनैतिक चर्चा, परिचर्चा आदि किया जाय।

रासपा ने सिराथू से शत्रुजीत को बनाया उम्मीदवार

कौशाम्बी। राष्ट्रीय समाज पार्टी ने जिलाध्यक्ष शत्रुजीत पाल को सिराथू विधान सभा से उम्मीदवार घोषित किया है। इसकी जानकारी होते ही पार्टी पदाधिकारियों एवं कार्यकताओं में खुशी की लहर दौड़ गई। उन्होंने शत्रुजीत पाल को बधाई दी है।

25 जनवरी को पाल मार्केट मंझनपुर में मनाई जाएगी राजू पाल की जयंती

कौशाम्बी। प्रयागराज शहरी पश्चिमी के विधायक रहे स्व. राजू पाल की पुण्यतिथि 25 जनवरी को मनाई जाएगी। यह जानकारी देते हुए राष्ट्रीय समाज पार्टी के जिलाध्यक्ष शत्रुजीत पाल ने दी। उन्होंने बताया कि जयंती पाल मार्केट मंझनपुर में मनाई जाएगी। उन्होंने पाल समाज के लोगों से जयंती समारोह में शामिल होने की बात कही है।

किसानों का उत्पीडन करने वालों से किसान लेंगे बदला : राधेश्याम चौधरी

जनसंपर्क के दौरान पार्टी नेता

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। समर्थ किसान पार्टी मंझनपुर विधानसभा के प्रत्याशी राधेश्याम चौधरी ने शनिवार को मंझनपुर विधानसभा के ग्राम परौआ, सवरों, बंधुरी, म्योहर आदि गांवों का दौरा किया और लोगों से मुलाकात की। इस अवसर पर उन्होंने लोगों से विधानसभा चुनाव में समर्थन करने एवं चुनाव जीताने की अपील की। लोगो ने भी उन्हें समर्थन करने एवं चुनाव जीताने का भरोसा दिलाया। इस अवसर पर लोगों से वार्ता करते हुए राधेश्याम चौधरी ने कहा कि किसानों के साथ उत्पीड़न करने वालों से चुनाव में किसान जरूर बदला लेंगे। जिस तरह से किसानों को छला गया है और उनके साथ अन्याय किया गया उसे किसान भाई भूले नहीं हैं इस। इस बार किसान समर्थ किसान पार्टी के प्रत्याशियों को वोट करेगा। इस अवसर पर उनके साथ अजय सोनी, फूलचंद्र लोधी, शिव शंकर दुबे, हरिश्चंद्र चौधरी, शफीक अहमद आदि मौजूद रहे।

नाबालिग बालिका को ले उड़ा युवक पुलिस मौन

चायल कौशाम्बी। पिपरी थाना क्षेत्र के लोधौर गांव की एक बालिका को युवक ले उड़ा है मामले में सूचना दिए जाने के बाद भी पुलिस मौन है बताया जाता है कि लोधौर गांव निवासी राम प्रसाद पुत्र तेजवा की पुत्री पुष्पा उम्र लगभग 15 वर्ष को गांव का ही विद्या सागर पुत्र राम सुरेमन बहला फुसलाकर उसके साथ गलत काम किया और पीड़ित ने जब उसके घरवालों से उलाहना दिया तो विद्यासागर अपने पिता राम सुरेमन के साथ मिलकर पीड़ित की पुत्री को जबरन घर से उठा ले गया और अपने घर में रख लिये पीड़ित ने तत्काल चौकी लोधौर में सूचना दिया तो उपरोक्त लोग पीड़ित की पुत्री को लेकर कही बाहर भाग गये पीड़ित को शक है कि उसकी पुत्री को उपरोक्त लोग या तो बेच देगें या मार डालेगें। पीड़ित ने उपरोक्त घटना की सूचना थाना व चौकी में दिया लेकिन कई दिन बीत जाने के बाद कोई कार्यवाही नहीं हुई तो पीड़ित ने शनिवार को उच्च अधिकारियों से शिकायत किया अब सवाल यह उठता है की जब डिजिटल इण्डिया कहे जाने वाले देश में बहन बेटियों सुरक्षित नहीं है बहन बेटियों को घर से उठा लिया जाता है और पुलिस तमाशा देखती हैं और पीड़ित को पुलिस यहां वहा टहलती रहती है। क्या पीड़ित की लड़की को जल्द पुलिस खोज कर पीड़ित के हवाले करेगी या वह अपनी पुत्री के लिए दर दर की ठोकरें खाता रहेगा।

कैम्प लगाकर बनाये वाहनों के फिटनेस प्रमाण पत्र : डीएम

जिला निर्वाचन अधिकारी ने प्रभारी अधिकारी वाहन एआरटीओ के साथ कि बैठक

अखंड भारत संदेश

वाहन स्वामियों के साथ बैठक करते जिलाधिकारी

कौशाम्बी। जिला निर्वाचन अधिकारी सुजीत कुमार ने विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 को सकुशल सम्पन्न कराने हेतु वाहनों की व्यवस्था अधिग्रहण किये जाने के सम्बन्ध में प्रभारी अधिकारी वाहन, एआरटीओ स्कूल संचालकों एवं अध्यक्ष दोआबा बस एसोसिएशन के साथ सम्राट उदयन सभागार मे बैठक की बैठक में जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि जनपद में 27 फरवरी 2022 को मतदान होना है। पोलिंग पार्टियों की रवानगी आदि कार्यों हेतु वाहनों की आवश्यकता पड़ती है उन्होंने सभी स्कूल संचालकों एवं अध्यक्ष दोआबा बस एसोसिएशन से कहा कि अपने-अपने ड्राइवरों एवं कन्डक्टरों के मोबाइल नम्बरों सहित सूची उपलब्ध कराने के साथ ही ड्राइवरों एवं कन्डक्टरों को कोविड-19 टीकाकरण के दोनों डोज लग गया हो, सुनिश्चित कर लिया जाय उन्होंने एआरटीओ को निर्देश दिये कि स्कूल संचालको से समन्वय बनाकर 24 एवं 28 जनवरी 2022 को विशेष कैम्प लगाकर जिन वाहनों के फिटनेस प्रमाण पत्र न बनें हों, उन सभी के फिटनेस प्रमाण पत्र बनाने तथा अन्य कमी पाये जाने पर ठीक करवाये जाने के निर्देश दिये उन्होंने स्कूल संचालकों से कहा कि एक जिम्मेदार व्यक्ति को नोडल अधिकारी बनाकर नाम व मोबाइल नम्बर उपलब्ध करा दिया जाय।

चरवा चौराहे पर अवैध तरीके से चल रही कई क्लीनिक

अवैध नर्सिंग होम और क्लीनिक के संचालक पर जांच कराकर कार्रवाई की जनता ने की मांग, कथित झोलाछाप चिकित्सक लेते हैं गंभीर मरीज के इलाज का ठेका

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। चरवा क्षेत्र में अवैध तरीके से कई क्लीनिक और अस्पताल चल रही है जहां मरीजों को इलाज के नाम पर कथित डॉक्टर लूट रहे हैं। स्वास्थ्य विभाग अवैध क्लीनिक अस्पताल से बेखबर बना हुआ है झोलाछाप डॉक्टरों के फर्जी क्लीनिक अस्पताल की बाढ़ का नजारा इस क्षेत्र में नजर आ रहा है जनपद के लगभग हर गली मोहल्लों में एक न एक झोलाछाप डॉक्टर अपनी क्लीनिक की दुकाने खोलकर बैठे हैं जहाँ पर गरीब भोले भाले मरीजों का इलाज के नाम पर लूट कर अपनी जेबे भरने का काम कथित चिकित्सको द्वारा किया जा रहा है ऐसे फर्जी कथित चिकित्सकों के हौसले बुलंद हैं कि इन्हें जनपद के स्वास्थ्य अधिकारी का इन्हें कोई खौफ नही है इस बात से कहीं ना कहीं यह भी उजागर हो रहा है कि संबंधित अधिकारियों के जिम्मेदारो की मिली भगत और कमीशन खोरी के चलते ऐसे झोलाछाप कथित डॉक्टर खुल्लेआम अपनी दुकान चला रहे हैं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र चरवा के अंतर्गत आने वाले चरवा चौराहे से मनौरी रोड पर एक कथित चिकित्सक अपनी क्लीनिक की दुकान खोलकर यहाँ के स्थानीय मरीजों को नीली पीली दवाइयां बेच कर लूट रहा है इसी क्षेत्र में एक और क्लीनिक बबुरा मोड़ चौराहे पर अवैध तरीके से लम्बे समय से चल रही हैं। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार लोगों का कहना है कि उक्ता कथित डॉक्टर अपनी क्लीनिक में हर तरह के इलाज और ऑपरेशन करने का ठेका लेते हैं और गरीब अनपढ़ मरीजों से इलाज के नाम पर मोटी रकम वसूलते हैं क्लीनिक पूरी तरह से नर्सिंग एक्ट के मानकों के विपरीत संचालित हो रही हैं। जो जनपद के स्वास्थ्य विभाग को संदेह के घेरे में खड़ा कर रहा है आखिर किसकी शह पर ऐसे फर्जी झोलाछाप कथित डॉक्टर हॉस्पिटल क्लीनिक संचालक खुलेआम कर रहे है। स्वास्थ्य विभाग का वह कौन कर्मचारी हैं जो ऐसे फर्जी क्लीनिक संचालकों से बराबर कमीशन खोरी करता है और इनके गुनाहों पर पर्दा डालने का काम करता है। अवैध क्लीनिक संचालकों के कारनामों की जांच कराकर कार्रवाई की मांग आम जनता ने योगी सरकार से की है।

मंझनपुर में फ्लैग मार्च करते जिलाधिकारी

अर्धसैनिक बलों के साथ डीएम ने किया फ्लैग मार्च

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। विधानसभा 2022 चुनाव की घोषणा होते ही निर्वाचन क्षेत्रों को अर्धसैनिक बलों के हवाले कर दिया गया है जिले की तीनों विधानसभा सीटें सिराथू मंझनपुर चायल की स्थितियों की जांच पड़ताल और लोकेशन अर्ध सैनिक बल के जवान फ्लैगमार्च कर के ले रहे हैं। उसी परिप्रेक्ष्य में मंझनपुर विधानसभा क्षेत्र के मंझनपुर कस्बे के बिभिन्न मोहल्लों सहित कई गांव में डीएम के नेतृत्व में अर्धसैनिक बल के जवान और स्थानीय कोतवाली पुलिस के जवानों ने क्षेत्र में पैदल मार्च कर शांतिपूर्ण और सकुशल विधानसभा चुनाव संपन्न करवाने हेतु भ्रमण किया इस दौरान डीएम ने आम जनमानस से शांति व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग देने की अपील की साथ ही आगामी चुनाव में निडर होकर बढ़-चढ़कर मतदान करने की बात उन्होंने कही उन्होंने चुनाव में जनता को सुरक्षा का एहसास दिलाया है साथ ही अपराधी प्रवृत्ति वाले लोगों को चेतावनी देते हुए उन्होंने कहा कि चुनाव के दरम्यान यदि किसी प्रकार की असंवैधानिक गतिविधियो का कार्य करने की कोशिश की गई तो उसके खिलाफ कठोर से कठोर कार्रवाई की जाएगी।

संपादक की कलम से

कुछ नहीं बदला है...अमीर और अमीर होता जा रहा है, गरीब और गरीब होता जा रहा है

गरीबी-अमीरी के असंतुलन को कम करने की दिशा में काम करने वाली वैश्विक संस्था ऑक्सफैम ने अपनी ताजा आर्थिक असमानता रिपोर्ट में समृद्धि के नाम पर पनप रहे नये नजरिया, विसंगतिपूर्ण आर्थिक संरचना एवं अमीरी गरीबी के बीच बढ़ते फासले की तथ्यपरक प्रभावी प्रस्तुति देते हुए इसे घातक बताया है। आज देश एवं दुनिया की समृद्धि कुछ लोगों तक केन्द्रित हो गयी है, भारत में भी ऐसी तस्वीर दुनिया की तुलना में अधिक तीव्रता से देखने को मिल रही है। देश में मानवीय मूल्यों और आर्थिक समानता को हाशिये पर डाल दिया गया है और येन-केन-प्रकारेण धन कमाना ही सबसे बड़ा लक्ष्य बनता जा रहा है। आखिर ऐसा क्यों हुआ? क्या इस प्रवृत्ति के बीज हमारी परंपराओं में रहे हैं या यह बाजार के दबाव का नतीजा है? कहीं शासन-व्यवस्थाएं गरीबी दूर करने का नारा देकर अमीरों को प्रोत्साहन तो नहीं दे रही है? इस तरह की मानसिकता राष्ट्र को कहां ले जाएगी? ये कुछ प्रश्न ऑक्सफैम की आर्थिक असमानता रिपोर्ट के सन्दर्भ महत्त्वपूर्ण हैं, आम बजट से पूर्व इस रिपोर्ट का आना और उसके तथ्यों पर मंथन जरूरी है। ताजा रिपोर्ट के चौंकाने वाले तथ्य हैं कि कोरोना महामारी के बावजूद दुनिया भर में धनपतियों का खजाना तेजी से बढ़ा है। भारत में भले 84 फीसदी परिवारों की आमदनी महामारी की वजह से कम हो गई, लेकिन अरबपतियों की संख्या 102 से बढ़कर 142 हो गई है। इतना ही नहीं, मार्च 2020 से लेकर 30 नवंबर, 2021 के बीच अरबपतियों की आमदनी में करीब 30 लाख करोड़ रुपये का इजाफा हुआ है और वह 23.14 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर 53.16 लाख करोड़ रुपये हो गई है, जबकि 2020 में 4.6 करोड़ से अधिक नए भारतीय अति-गरीब बनने को विवश हुए। इस रिपोर्ट में साफ-साफ कहा गया है कि पूरे विश्व में आर्थिक असमानता बहुत तेजी से फैल रही है। अमीर बहुत तेजी से ज्यादा अमीर हो रहे हैं। साम्राज्यवाद की पीठ पर सवार पूंजीवाद ने जहां एक ओर अमीरी को बढ़ाया है तो वहीं दूसरी ओर गरीबी भी बढ़ती गई है। यह अमीरी और गरीबी का फासला कम होने की बजाय बढ़ता ही जा रहा है जिसके परिणामों के रूप में हम आतंकवाद को, नक्सलवाद को, सांप्रदायिकता को, प्रांतीयता को देख सकते हैं, जिनकी निष्पत्तियां समाज में हिंसा, नफरत, द्वेष, लोभ, गलाकाट प्रतिस्पर्धा, रिश्तों में दरारें आदि के रूप में देख सकते हैं। सर्वाधिक प्रभाव पर्यावरणीय असंतुलन एवं प्रदूषण के रूप में उभरा है। चंद हाथों में सिमटी समृद्धि की वजह से बड़े और तथाकथित संपन्न लोग ही नहीं बल्कि देश का एक बड़ा तबका मानवीयता से शून्य अपसंस्कृति का शिकार हो गया है। अमीर और गरीब के बीच बढ़ती खाई तब तक नहीं कम होगी, जब तक सरकार की तरफ से इसको लेकर ठोस कदम नहीं उठाए जाते हैं। असमानता दूर करने के लिए सरकार को गरीबों के लिए विशेष नीतियां अमल में लानी होगी। वर्ल्ड इकनॉमिक फोरम के सालाना सम्मेलन एवं भारत के आम बजट के आसपास ऑक्सफेम इस तरह की रिपोर्ट जारी कर बताना चाहता है कि भले वर्ल्ड इकनॉमिक फोरम पूंजीपतियों की वकालत करे, लेकिन उसका मुख्य उद्देश्य दुनिया में बढ़ आर्थिक असमानता को दूर करने का भी होना चाहिए। अमीरी और गरीबी की बढ़ती खाई को पाटना जरूरी इसलिये भी है कि पिछले दो वर्षों से हम महामारी से गुजर रहे हैं और यह उम्मीद थी कि कम से कम कोरोना काल में गरीबों को ज्यादा मदद दी जाएगी और उनकी आमदनी सुरक्षित रखी जाएगी। मगर ऐसा नहीं हुआ। आंकड़े यही बता रहे हैं कि महामारी में जिस वर्ग ने सबसे ज्यादा फायदा उठाया, वह धनाढ्य वर्ग है। उसकी संपत्ति और आमदनी बढ़ी है, जबकि गरीबों का जीना और दुश्वार हो गया है। इसके लिए सरकारों को निचले तबके की आमदनी में इजाफा करने और धनाढ्य तबके से जायज टैक्स वसूलने की कोशिश करनी होगी। आर्थिक असमानता घटाने का तरीका ही यही है कि मजदूरों को उनकी वाजिब मजदूरी मिले, खेती करने वालों को अपनी उपज का उचित दाम मिले, मजदूरों को खून-पसीने की कमाई मिले और कोई भी इंसान व्यवस्था का लाभ उठाकर जरूरत से ज्यादा अपनी तिजोरी न भर सके। ऐसा होने से समाज में एक विद्रोह पनपेगा, जो हिंसक क्रांति का कारण बनेगा। भारत में सरकार की नीतियां गरीब दूर करने का स्वांग करती है। असलियत में सरकार अमीरों को ही लाभ पहुंचाती है। वर्ष 2019 में केंद्र सरकार ने टैक्स में छूट देकर देश के पूंजीपति वर्ग को दो लाख करोड़ रुपये की माफी दे दी।

भारत आजादी के अमृत महोत्सव तक तो पहुँच गया पर अब तक देश भ्रष्टाचारमुक्त नहीं बन पाया है

-ललित गर्ग-

भ्रष्टाचार एक दीमक की तरह है जो देश को, उसकी अर्थव्यवस्था को और कुल मिलाकर नैतिकता एवं मूल्यों को खोखला कर रहा है। यह उन्नत एवं मूल्याधारित समाज के विकास में बड़ी बाधा है, वही शासन व्यवस्था की भ्रष्टता सशक्त भारत निर्माण का बड़ा अपरोध है। बड़े पदों पर आसीन अधिकारियों एवं मंत्रियों-राजनेताओं के भ्रष्टाचार ज्यादा बड़ी समस्या है क्योंकि उनके उजागर होने, उजागर हो जाने पर उन्हें दबा दिये जाने की त्रासद स्थितियां अधिक चुनौतीपूर्ण हैं, उन पर लगाम लगाना ज्यादा जटिल है। यह बात हाल ही में भ्रष्टाचार के आरोप में गैस अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड के मार्केटिंग निदेशक ईएस रंगनाथन की गिरफ्तारी बताती है। सरकार के तमाम दावों के बावजूद भ्रष्टाचार पर प्रभावी लगाम नहीं लग पा रही है।

सीबीआइ ने रंगनाथन के साथ पांच अन्य लोगों को भी गिरफ्तार किया है। इनमें कुछ कारोबारी भी हैं। इन दिनों भ्रष्टाचार का एक अन्य मामला भी चर्चा में है जिसमें नेशनल सिक्योरिटी गार्ड के डिप्टी कमांडेंट प्रवीण यादव को 131 करोड़ रुपये से अधिक की धोखाधड़ी के मामले में गिरफ्तार किया गया है। इस अधिकारी ने कितने बड़े पैमाने पर अपनी धोखाधड़ी का जाल फैला रखा था इसका पता इससे चलता है कि उसके करीब 45 खाते फ्रीज किए गए हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के ईमानदार एवं भ्रष्टाचारमुक्त शासन देने के संकल्प के साथ कहा गया वाक्य कि न खाऊंगा और न खाने दूंगा, का असर मंत्रियों, सांसदों पर तो ऊपरी तौर पर दिख रहा है, लेकिन विभिन्न सरकारी कम्पनियों में भ्रष्टाचार व्यापकता से आज भी पसरा है, गेल का ताजा भंडाफोड़ इसका उदाहरण है। सरकार को इसकी अनदेखी नहीं करनी चाहिए कि अधिकारियों और कारोबारियों, अधिकारियों एवं गैर सरकारी संगठनों के बीच साठगांठ के चलते बड़े पैमाने पर टैक्स चोरी भी हो रही है और सरकारी धन सेवा के नाम पर किन्हीं खास लोगों एवं संगठनों तक पहुंच रहा है। यह टैक्स चोरी या किन्हीं खास लोगों-संगठनों को स्व-लाभ की शर्तों पर लाभ पहुंचाना भी भ्रष्टाचार का ही रूप है। लिहाजा सरकार भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए नए उपायों पर विचार करे।

आसान शब्दों में कहें तो भ्रष्टाचार उन लोगों के द्वारा जिनमें पॉवर होती है एक प्रकार का बेईमान या धोखेबाज आचरण को दशार्ता है। यह समाज की बनावट को भी खराब एवं भ्रष्ट करता है। यह लोगों से उनकी आजादी, स्वास्थ्य, धन और कभी-कभी उनके जीवन को ही खत्म कर देता है। किसी ने सही कहा है कि भ्रष्टाचार एक मीठा जहर है। भारत में हर साल खरबों की राशि या तो रिश्वतखोरी या फिर भ्रष्ट तरीकों की भेंट चढ़ जाती है जिससे कानून के शासन की अहमियत तो कम होती ही है, साथ ही स्वस्थ शासन व्यवस्था का सपना चकनाचूर होता है। आज हमारे कंधे भी इसीलिये झुक गये कि भ्रष्टाचार का बोझ सहना हमारी आदत हो गयी है। भ्रष्टाचार के नशीले अहसास में रास्ते गलत पकड़ लिये और इसीलिये भ्रष्टाचार की भीड़ में हमारे साथ गलत साथी, संस्कार, सलाह, सहयोग जुड़ते गये। जब सभी कुछ गलत हो तो भला उसका जोड़, बाकी, गुणा या भाग का फल सही कैसे आएगा? तभी भ्रष्टाचार से एक नया भारत-सशक्त भारत बनाने के प्रयासों के रास्ते में भारी रुकावट पैदा हो रही है। प्रवीण यादव हो या रंगनाथन- ये शासन व्यवस्था पर बदनुमा दाग है। भ्रष्टाचार के ये दोनों मामले महज अपवाद के रूप में नहीं देखे जाने चाहिए, क्योंकि तथ्य यह है कि इस तरह के मामले रह-रहकर सामने आते ही रहते हैं। सीबीआई के भ्रष्टाचार विरोधी अभियान के तहत जब भी छापेमारी होती है तो भ्रष्टाचार के अनेक मामले सामने आते हैं। इनमें कुछ की गिरफ्तारी भी होती है, लेकिन इसके बाद भी यह मुश्किल से ही पता चलता है कि भ्रष्ट तत्वों के खिलाफ क्या कठोर कार्रवाई हुई। विडम्बना तो यह भी है कि भ्रष्टाचार के जितने मामले प्रकाश में आते हैं, उन्हें दबाने में भी एक नये तरीके का भ्रष्टाचार होता है। भ्रष्टाचार में कमी कैसे आए इस पर सरकार को गंभीरता से विचार करना होगा। आवश्यक केवल यह नहीं है कि भ्रष्टाचार में लिप्त अधिकारियों की निगरानी हो और उनके खिलाफ समय-समय पर छापेमारी भी की जाए। इसके साथ ही आवश्यक यह भी है कि उन कारणों का निवारण भी किया जाए जिनके चलते अधिकारी भ्रष्टाचार करने में सक्षम बने हुए हैं।

सपा को झटका

-सिद्धार्थ शंकर-

मुलायम सिंह यादव की छोटी बहू अपर्णा यादव अब भाजपा में शामिल हो चुकी हैं। विधानसभा चुनाव से पहले यादव परिवार की बहू का भाजपा में शामिल होना अखिलेश यादव के लिए बड़ा झटका माना जा रहा है। अपर्णा के भाजपा में जाने का सियासी लिहाज से भले ही सपा पर कोई बड़ा असर ना हो, लेकिन परिवार में इस टूट ने छवि की लड़ाई में अखिलेश को पीछे धकेल दिया है। हालांकि, अखिलेश ने अपर्णा के भाजपा में शामिल होने पर उन्हें बधाई दी। कुछ दिनों पहले भाजपा सरकार के मंत्रियों और विधायकों को तोडकर अखिलेश ने जो संदेश देने की कोशिश की थी, अब उससे बड़ा संदेश भाजपा ने यादव परिवार को तोड़ कर दे दिया है। अपर्णा के भाजपा में शामिल होने के बाद एक बार फिर परिवार की लड़ाई घर की दहलीज पार कर बाहर आ गई है। अखिलेश सरकार के कार्यकाल के अंतिम दिनों जिस तरह परिवार में कलह मची और परिवार बिखरा उसका असर चुनावी नतीजों में दिखाई दिया था। एक बार फिर 2022 विधानसभा चुनाव से पहले मुलायम परिवार में टूट के बाद उस समझौते की चर्चा हो रही है, जो परिवार को एक रखने के लिए करीब 16-17 साल पहले हुआ था। पिछले ही सप्ताह लखनऊ में आईपीएस अधिकारी असीम अरुण के साथ उनकी भारतीय जनता पार्टी में शामिल होने की खबरें आने लगी थीं, लेकिन तब अपर्णा यादव के नजदीकी लोगों ने इससे इनकार कर दिया था, लेकिन उनकी बातचीत भारतीय जनता पार्टी से चल रही है, इसमें किसी को शक नहीं था, क्योंकि अपर्णा यादव जिस लखनऊ कैंट सीट से टिकट की दावेदार हैं वहां की उम्मीदवार रहीं रीता बहुगुणा जोशी की नाराजगी की खबरें लगातार मीडिया में आ रही थीं। हालांकि अपर्णा यादव की भारतीय जनता पार्टी और योगी आदित्यनाथ की नजदीकी की चर्चा पहले भी होती रही है। दूसरी ओर अपर्णा यादव लखनऊ कैंट सीट को लेकर अपनी दावेदारी मजबूती से रखती रही हैं। इस सीट से अपर्णा यादव के लगाव का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि जब 2017 में अखिलेश यादव ने मुलायम सिंह यादव और शिवपाल सिंह यादव से अलग रास्ता लिया तो भी उन्होंने लखनऊ कैंट से अपर्णा यादव को उम्मीदवार बनाए रखा था। तब कहा जा रहा था कि मुलायम सिंह यादव ने उन्हें उम्मीदवार बनाने का फैसला लिया था और पिता के प्रति नरमी दिखाते हुए अखिलेश ने उनका टिकट बनाए रखा था। अखिलेश ने ना केवल उन्हें टिकट दिया बल्कि उनके क्षेत्र में चुनाव प्रचार किया, हालांकि इन सबके बाद भी अपर्णा यादव चुनाव लगभग 34 हजार मतों से हार गई थीं।

2022 के चुनाव को लेकर समाजवादी पार्टी के अंदर भी उनकी दावेदारी इस बार मजबूत नहीं मानी जा रही थी। 3.15 लाख मतदाताओं वाली इस सीट पर 60 हजार ब्राह्मण हैं, 50 हजार दलित, 40 हजार वैश्य और 30 हजार पिछड़े वर्ग के मतदाता। इस सीट से समाजवादी पार्टी ने कभी चुनाव भी नहीं जीता है और यह भाजपा की गढ़ माने जाने वाली सीट है। इस लिहाज से देखें तो अपर्णा यादव के भाजपा में आने से अपर्णा यादव को ज्यादा फायदा होता दिख रहा है।

मिग विमानों को ढ़ोते रहना क्यों है वायुसेना की मजबूरी?

-योगेश कुमार गोयल-

कुछ ही दिनों पहले राजस्थान के जैसलमेर जिले में सुदासरी नेशनल डेजर्ट पार्क के पास वायुसेना का एक लड़ाकू विमान ह्यमिग-21ह्ल गिर गया था, जिसमें पायलट विंग कमांडर हर्षित सिन्हा की मौत हो गई थी। दरअसल पायलट हर्षित सिन्हा ने अभ्यास के लिए उड़ान भरी ही थी कि तकनीकी खराबी के कारण हुई मिग विमान दुर्घटना का शिकार हो गया। हालांकि वायुसेना द्वारा इस मिग हादसे के मामले की जांच की जा रही है लेकिन चिंता की बात यही है कि मिग-21 के साथ हुआ यह हादसा कोई पहला हादसा नहीं है बल्कि एक के बाद लगातार इस तरह की घटनाएं सामने आ रही हैं। इससे पहले 25 अगस्त 2021 को भी प्रशिक्षण उड़ान के दौरान राजस्थान के बाड़मेर जिले के भूरटिया गांव में एक मिग-21 एक झोपड़ी पर जा गिरा था। विमान तो जल गया था लेकिन गनीमत थी कि पायलट बच गया था। 20 मई 2021 को भी पंजाब के मोगा जिले के लंगियाना खुर्द गांव के पास एक मिग-21 दुर्घटनाग्रस्त हुआ था लेकिन उस हादसे में उस मिग को उड़ा रहे स्क्वॉड्रन लीडर अभिनव चौधरी की मौत हो गई थी। वर्ष 2021 में दो और मिग-21 भी दुर्घटनाग्रस्त हुए थे, जिनमें एक पायलट बच गया था लेकिन दूसरे की मौत हो गई थी। विड़म्बनाजनक स्थिति यह है कि पिछले विगत पांच दशकों में पांच सौ से भी ज्यादा मिग विमान हादसों के शिकार हो चुके हैं और इन दर्दनाक हादसों में हम अपने दो सौ से भी ज्यादा जांबाज पायलटों को खो चुके हैं।

लगातार बढ़ रहे मिग हादसों को लेकर करीब ढाई-तीन साल पहले तत्कालीन वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल बीएस धनोआ ने इन विमानों के बारे में कहा था कि हमारी वायुसेना जितने पुराने मिग विमानों को उड़ा रही है, उतनी पुरानी तो कोई कार भी नहीं चलाता।

शाकाहार बन रहा विश्वव्यापी

-डॉ. वेदप्रताप वैदिक-

क्या आपको यह जानकर आनंद नहीं होगा कि दुनिया के सबसे ज्यादा शुद्ध शाकाहारी लोग भारत में ही रहते हैं। ऐसे लोगों की संख्या 40 करोड़ से ज्यादा है। ये लोग मांस, मछली और अंडा वगैरह बिल्कुल नहीं खाते। यूरोप, अमेरिका, चीन, जापान और मुस्लिम देशों में मुझे कई बार यह वाक्य सुनने को मिला कि 'हमने ऐसा आदमी जीवन में पहली बार देखा, जिसने कभी मांस खाया ही नहीं।' दुनिया के सभी देशों में लोग प्रायः मांसाहार और शाकाहार दोनों ही करते हैं। लेकिन एक ताजा खबर के अनुसार ब्रिटेन में इस साल 80 लाख लोग शुद्ध शाकाहारी बनने वाले हैं। वे अपने आप को 'वीगन' कहते हैं। अर्थात वे मांस, मछली, अंडे के अलावा दूध, दही, मक्खन, घी आदि का भी सेवन नहीं करते। वे सिर्फ अनाज, सब्जी और फल खाते हैं। इसका कारण यह नहीं है कि वे पशु-पक्षी की हिंसा में विश्वास नहीं करते। वे भारत के जैन, अग्रवाल, वैष्णव और कुछ ब्राह्मणों की तरह इसे अपना धार्मिक कर्तव्य मानकर नहीं अपनाए हुए हैं। इसे वे अपने स्वास्थ्य के खातिर मानने लगे हैं। न तो उनका परिवार और न ही उनका मजहब उन्हें मांसाहार से रोकता है लेकिन वे इसलिए शाकाहारी हो रहे हैं कि वे स्वस्थ और चुस्त-दुरुस्त दिखना चाहते हैं। मुंबई के कई ऐसे फिल्म अभिनेता मेरे परिचित हैं, जिन्होंने 'वीगन' बनकर अपना वजन 40-40 किलो तक कम किया है। वे अधिक स्वस्थ और अधिक युवा दिखाई पड़ते हैं। सच्चाई तो यह है कि शुद्ध शाकाहारी भोजन आपको मोटापे से ही नहीं, डायबिटीज, ब्लड प्रेशर और हृदय रोगों से भी बचाता है। इसे किसी धर्म-विशेष के आधार पर विधि-निषेध की श्रेणी में रखना भी जरा कठिन है, क्योंकि सब धर्मों के कई महानायक आपको मांसाहारी मिल सकते हैं। वैसे किसी भी मजहबी ग्रंथ में यह नहीं लिखा है कि जो मांस नहीं खाएगा, वह घटिया हिंदू या घटिया मुसलमान या घटिया ईसाई माना जाएगा। वास्तव में दुनिया में मांसाहार बंद हो जाए तो प्राकृतिक संसाधनों की भारी बचत हो जाएगी और प्रदूषण भी बहुत हद तक घट जाएगा। इन विषयों पर पश्चिमी देशों में कई नए शोध-कार्य हो रहे हैं और भारत में भी शाकाहार के विविध लाभों पर कई ग्रंथ लिखे गए हैं। दूध, दही, मक्खन और घी आदि के त्याग पर कई लोगों का मतभेद हो सकता है। यदि वे 'वीगन' न होना चाहें तो भी खुद शाकाहारी होकर और लाखों-करोड़ों लोगों को प्रेरित करके एक उच्चतर मानवीय जीवन-पद्धति का शुभारंभ कर सकते हैं।

मनुस्मृति लागू करना चाहता है संघ परिवार...!

-नईम कुरेशी-

डर, लालच, झूठ व मनुवाद का प्रचार कर दलितों व पिछड़ों, मुसलमानों को डराना आज का सियासी हथियार बनता दिखाई दे रहा है। मुस्लिम महिलाओं को नीलाम करने की हरकतें संघ परिवार से जुड़ी नफरतों के तहत की जा रही हैं। प्रधानमंत्री से लेकर केन्द्रीय गृह मंत्री तक मौन हैं। ये सब लोग मिलकर भारत की 85 फीसद जनता को डरा कर उन पर पुराना मनुवादी विचार थोपना चाहते हैं जिसे डॉ. भीमराव अम्बेडकर से लेकर सावित्री बाई फुले 1930-50 के दौरान मनुवाद को खत्म करा चुके हैं। भारतीय संविधाल लागू करा चुके हैं। आतंक फैलाकर संघ परिवार देश को

अस्थितर कर इसे विकास में बढ़ने से रोकने पर तुला हुआ है जिसका सीधा फायदा चीन व पाकिस्तान को होने जा रहा है। विदेशी मीडिया तक भारत सरकार के लोकतांत्रिक रवैये के विरोध व दंगा कराने में शामिल होने की हरिद्वारा, रायपुर, दिल्ली आदि की घटना पर भारत की सत्ता पार्टी को शर्मसार करने वाली रिपोर्ट छाप रही है। न्यूयार्क टाईम्स में अमेरिका में इन घटनाओं पर खूब छप रहा है।

भारत का सर्वोच्च न्यायालय से लेकर पूर्व 5 सेना प्रमुखों से लेकर सर्वोच्च न्यायालय के 71 बड़े वकीलों ने प्रधानमंत्री राष्ट्रपति से लेकर मुख्य न्यायाधीश तक से कानून का राज कायम करने व हत्यायें कराने वाली बातें करने वाले फर्जी साधू संतों पर कार्यवाही करने की पुरजोर अपीलें की हैं और प्रधानमंत्री से लेकर संघ परिवार चुप बना हुआ है कि आखिर न्यायालय क्या करता है। सियासी पंडित मान रहे हैं संघ परिवार व भारतीय जनता पार्टी यू.पी. के चुनावों के चलते ये हिंसक कार्ड खेल रही है। अटल बिहारी वाजपेयी के साथी पूर्व वित्तमंत्री साहब आज के दौर को 1947 जैसा दौर मान रहे हैं। इस दौर को हिंसक बनाकर संघ परिवार यू.पी. की सत्ता पर दोबारा काबिज होने की नाकाम कोशिशें करता दिखाई दे रहा है। 85 फीसद दबे कुचले पिछड़े अति पिछड़े लोग संघ परिवार के देश तोड़ने वाली चालों से आम जनता को अवगत कराते आ रहे हैं। यदि संघ से जुड़े चन्द हजार ऊँची जाति के मिश्रा, शर्मा, अवस्थी, तिवारी आदि लोग सत्ता के लिये दंगा कराने पर आमादा है गोदी मीडिया के सहयोग से तो लाखों इनकी बिरादरी के वाजपेयी, रवीश कुमार, इसरार शर्मा, हर्षिता मिश्रा आदि जाने माने पत्रकार देश तोड़ने वालों के इशारों पर पानी फेरते दिखाई दे रहे हैं जिससे उत्तर प्रदेश में संघ परिवार से सत्ता पीछे छूटती दिखाई दे रही है। सच्चर कमेटी की रिपोर्ट में 10-12 साल पहले बताया गया था कि मुस्लिम दलितों से भी पिछड़ गये हैं। ये सब कांग्रेस व संघ परिवार ने मिलकर किया है।

केन्द्र व सूबाई सरकारों ने सच्चर कमेटी की रिपोर्टों को लागू करना तो दूर इसको पढ़ना भी जरूरी नहीं समझा। संघ परिवार चाहता है कि 5-7 फीसद ऊँची जाति वालों के पास सत्ता की चाबी दे दी जाये, संविधान को खत्म कर पुरानी मनुवादी दौर शुरू कर दिया जाये। यू.पी., एम.पी., बिहार आदि में तो षड्यंत्र के तहत 50 प्रतिशत नौकरियों का रिजर्वेशन तो धीरे-धीरे खत्म कर 15-20 फीसद पर ला दिया गया है। शिवराज सिंह तक म.प्र. में पिछड़ों को न्याय नहीं दिला पा रहे हैं। संघ परिवार के दखल के चलते प्रशासन को संघ के लोग काम नहीं करने दे रहे हैं। पिछड़े व दलितों में यू.पी. जैसी बेचैनी बनी हुई है।

ग्वालियर चम्बल संभाग में कांग्रेस भी खास सक्रिय नहीं है। ग्वालियर शहर में महज कांग्रेसी नेता सुनील शर्मा व अशोक सिंह जरूर कुछ सक्रिय हैं व गुना शिवपुरी में दिग्विजय सिंह के पुत्र जयवर्धने जरूर खूब सक्रिय हैं पर कांग्रेसी गांधी को भी भूलते जा रहे हैं। कहीं हरिद्वार की घटना के लिये प्रदर्शन या धरना दिये जाने की खबरें नहीं देखी जा रही हैं। गांधीजी के विचारों पर चर्चा करना भी ये जरूरी नहीं समझ रहे हैं फिर भी कुछ कांग्रेसी व सद्भावप्रेमी गांधी विचारों पर चर्चा करने पर आमादा देखे जा रहे हैं। कांग्रेस नेता सुनील शर्मा व उनकी टीम जरूर पिछले दिनों उपनगर ग्वालियर के हाथ ठेले वालों के लिये सड़कों पर प्रशासन से जंग लड़ते देखे गये हैं।

उत्कट देशानुरागी और दुर्धर्ष स्वतंत्रता-सेनानी !

-गिरीश्वर मिश्र-

आज देश-सेवा के नाम पर राजनीति में दम-खम आजमाने वाले हर तरह की सौदेबाजी करने पर उतारू हैं। उन्हें सत्ता चाहिए क्योंकि सत्ता से इस लोक में सब सधता दिखता है।

अनेक जन सेवक हमारे बीच हैं जो जीवन में कभी बड़े कष्ट और संघर्ष के बीच जिए और एक साधारण जन की तरह कष्ट सहा पर सत्ता का स्वाद पाते ही काया-पलट होता गया। अब वे करोड़ों और शायद घोषित-अघोषित अरबों रुपये के स्वामी बन बैठे हैं। लोकैषणा कब वितैषणा में परिवर्तित हो गई पता ही नहीं चला। उसके बाद समाज और जन की भावना सिमटती गई और परिवार ही सीमा बनता गया। शर्म हया छोड़ बेटा-बेटी, नाती-पोते, भाई-भतीजे, बंधु-बांधव और जाति-बिरादर तक पहुँच कर उनका देश और समाज का दायरा सिमटता गया।

इस भारत-भूमि में उत्तरोत्तर बड़े प्रयोजन के लिए छोटे प्रयोजन या हित का त्याग करने की व्यवस्था थी। कुल के लिए निजी सुख, गाँव के लिए कुल, जनपद के लिए गाँव और देश के लिए सब कुछ न्योछावर करने की परम्परा थी। जब देश परतंत्र था तब राजनीति करने वाले को अपने प्राण तक देने के लिए तैयार रहना पड़ता था और कइयों को देना भी पड़ा था। इसके लिए कोई विषाद न होता था। देश के साथ संलग्नता का आधार मातृभूमि से निर्व्याज भावात्मक स्नेह होता था न कि लेन-देन का कोई अनुबंध। बिना शर्त वाले इस प्यार का बंधन क्या-क्या करा सकता है इसकी एक अनोखी मिसाल नेताजी सुभाष चन्द्र बोस हैं। उनके लिए देश की स्वाधीनता के लक्ष्य के आगे सब कुछ छोटा पड़ता गया और उसकी राह में आने वाली हर मुश्किल को पार किया, बिना इसकी परवाह के कि उसकी कीमत क्या है और क्या-क्या खोना पड़ सकता है।

आज से सवा सौ साल पहले ओडिशा के कटक में एक संभ्रांत वकील के भरे-पूरे परिवार में जन्मे और पले-बढे सुभाष बाबू एक मेधावी छात्र थे और कलकत्ता विश्वविद्यालय से दर्शन में स्नातक हुए। अध्ययन काल में कुछ उद्धत भी थे और गुलाम भारत की स्वतंत्रता का स्वप्न पालते हुए युवावस्था में प्रवेश किया। स्वामी विवेकानंद के विचारों से वे विशेष रूप से प्रभावित थे। फिर परिवार की आकांक्षाओं को आकार देते हुए 1920 में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय इंग्लैण्ड से पढ़ाई की और वहीं आईसीएस परीक्षा ससम्मान पास की। वे इसमें चौथे स्थान पर थे पर प्रशिक्षण के दौरान ही अमृतसर में जलियांवाला बाग नरसंहार से इतने विचलित और व्यथित हुए कि प्रशिक्षण को बीच में ही छोड़ भारत लौट आए और जीवन की दिशा ही बदल गई।

सबकुछ छोड़ कर उनके सामने एक ही ध्येय था कि देश को किस तरह अंग्रेजों से मुक्त करा कर स्वाधीन किया जाय। इसके लिए सर्वस्व लुटा देने को तैयार वह इस मुहिम में जो जुटे सो इसी के हो गए। उनके भाई शरतचन्द्र बोस, जो पेशे से वकील थे, सुभाष बाबू को हर तरह से समर्थन देते रहे। इंग्लैण्ड से लौटकर जब वे भारत पहुँचे तो यहाँ के राजनीतिक परिदृश्य में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की गतिविधियों ने आकर्षित किया और वे इससे जुड़े। महात्मा गांधी के विचारों, नीतियों और उनके अहिंसा और असहयोग के विचार से वे सहमत और प्रभावित थे। गांधीजी के सुझाव पर देशबंधु चित्तरंजन दास के साथ मिलकर राजनीति के क्षेत्र में काम शुरू किया।

1924 में कलकत्ता नगर कारपोरेशन के मुख्य कार्यकारी भी बने। उस दौरान सीआर दास वहां के मेयर थे। उनकी देशभक्ति को अंग्रेजी सरकार ने खतरनाक समझा और देश निकाला का आदेश दिया और बर्मा भेज दिया। वहां से वापस आने पर उनकी राजनैतिक गतिविधियाँ और प्रखर हुईं। वे बंगाल कांग्रेस के अध्यक्ष बने। कुछ समय बाद सुभाषचन्द्र बोस और जवाहर लाल नेहरू कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री बने। 1928 में नेता जी और नेहरू दोनों ने भारत के लिए डोमिनियन राज्य के दर्जा देने के प्रस्ताव का विरोध किया और पूर्ण स्वराज्य की आवाज बुलंद की। स्वाधीनता से कम कुछ भी उन्हें स्वीकार्य न था। उन्होंने इंडिपेडेंस लीग बनाई। बंगाल वालंटियर्स समूह बनाया जो छिपकर अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध कार्रवाई करता था।

सुभाष बाबू जेल में रहते हुए कलकत्ता के मेयर बने। 1930 के असहयोग आन्दोलन में उन्हें जेल हुई। 1931 में जेल से बाहर आए। गांधी-इरविन पैक्ट का विरोध किया। वे भगत सिंह और उनके साथियों की फांसी को लेकर भी बड़े व्यथित थे। अंग्रेज सरकार ने उनको गिरफ्तार किया और एक साल बाद बीमारी के कारण जेल से छूटे। फिर वे वे यूरोप गए और सांस्कृतिक-राजनीतिक सम्बन्ध विस्तृत करने के लिए विभिन्न यूरोपीय राजधानियों में केंद्र खोले। 'इन्डियन स्ट्रगिल' नामक उनकी एक पुस्तक भी आई जिसमें भारत की स्वाधीनता की लड़ाई का परिचय और चुनौतियों को बताया गया था। 1936 में वे यूरोप से लौटे और उन्हें फिर गिरफ्तार किया गया।

1937 के आम चुनाव में कांग्रेस जीती और उसके हरिपुर अधिवेशन में सुभाष बाबू को अध्यक्ष चुना गया। अध्यक्ष के रूप में भारत के बहुमुखी उत्थान की योजना पर बल दिया और व्यापक औद्योगिकीकरण की पहल का आह्वान किया। अगले राष्ट्रीय अधिवेशन में जो त्रिपुरी में 1939 में हुआ था उनको पट्टाभिसीतारमैया के विरुद्ध अध्यक्ष का चुनाव लड़ना पड़ा था, जिनको गांधी का समर्थन प्राप्त था।

लखनऊ फ्रेंचाइजी की तरफ से आईपीएल खेलेगा जोधपुर का रवि विश्नोई

जोधपुर। जिले के ग्रामीण परिवेश से संबंध रखने वाले रवि विश्नोई का चयन आईपीएल सीरिज 2022 में हुआ है। इस बात को लेकर उनके घर परिवार में इन दिनों खुशी का माहौल है। वे अपनी स्पिन बॉलिंग के पहचाने जाने लगे है। जोधपुर के साथ देश का भी उन्होंने नाम रोशन किया है। अपनी बेहतरीन लेग स्पिन से क्रिकेट प्रेमियों को अपना मुरीद बना चुके रवि विश्नोई के घर खुशी का माहौल है। आईपीएल 2022 में एंट्री कर रही लखनऊ फ्रेंचाइजी ने अपने पहले तीन खिलाडि?ों को अपने साथ जोड़ा है उनमें रवि का नाम भी शामिल है। रवि को चार करोड़ रुपये में टीम ने अपने साथ

जोड़ा है। लखनऊ फ्रेंचाइजी ने अपने कप्तान के रूप में केएल राहुल व ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर मार्कस स्टोइनिस के अलावा चौंकाने वाले नाम के रूप में रवि को अपनी टीम में शामिल किया है। मां के साथ बैठ खुशी से चहकते हुए रवि ने कहा कि मेरे लिए खुद को साबित करने का बेहतरीन अवसर है। उम्मीद है कि मैं अपने प्रदर्शन के दम पर टीम को आगे बढ? में मददगार साबित हो पाऊंगा। रवि ने कहा कि राहुल की कप्तानी में दो साल से खेल रहा हूं। ऐसे में टीम बदलने का ज्यादा असर नहीं पड़ेगा। सभी की अपनी स्टाइल होती है खेलने की।अपने लेग स्पिन में कई नए हथियार शामिल कर चुके रवि का कहना है कि गेंदबाजी में निरंतर प्रयोग चलते रहते है। लगातार अभ्यास का प्रतिफल हमेशा अच्छा मिलता है। रवि के शिक्षक पिता मांगीलाल का कहना है कि हमारे लिए बेहद खुशी की बात है कि रवि निरंतर नए मुकाम हासिल कर रहा है। साथ ही देश में अपनी पहचान बना रहा है। हमारी तो एक ही ख्वाहिश है कि वह देश का प्रतिनिधित्व करने मैदान में उतरे। हमें उस दिन की प्रतीक्षा है। पिछले दो सीजन में केएल राहुल की कप्तानी में पंजाब किंग्स के लिए खेलने वाले रवि ने आईपीएल में अब तक 23 मुकाबलों में 6.96 की इकोनॉमी के साथ 24 विकेट झटके हैं। अब केएल राहुल की कप्तानी में ही लखनऊ के लिए खेलते नजर आएंगे।

अंडर-19 वर्ल्ड कप से रवि को पहचान मिली। वर्ल्ड कप के 6 मैचों में रवि ने 10.35 के औसत से सबसे ज्यादा 17 विकेट लिए। इसके बाद उनकी लेग स्पिन ने सभी क्रिकेट पंडितों का ध्यान आकर्षित किया, फिर किंग्स इलेवन पंजाब ने उसे दो करोड़ रुपये में अपने साथ जोड़ा।

धीमी ओवर गति के कारण दक्षिण अफ्रीका पर मैच फीस का 20 प्रतिशत जुर्माना

दुबई। भारत के खिलाफ शुक्रवार को खेले गए दूसरे एकदिनी मैच के दौरान धीमी ओवर गति के कारण दक्षिण अफ्रीका पर मैच फीस का 20 प्रतिशत जुमार्ना लगाया गया है। एमिरेट्स आईसीसी एलीट पैनल के ऑफ मैच रेफरी एंड्रयू पाइक्रॉफ्ट ने तय समय में एक ओवर कम गेंदबाजी करने पर टेम्बा बावुमा के नेतृत्व वाली दक्षिण अफ्रीकी टीम पर जुमार्ना लगाया है।

आईसीसी की खिलाड़ियों और टीम के सहयोगी सदस्यों के लिए आचार संहिता के अनुच्छेद 2.22 (न्यूनतम ओवर-रेट से संबंधित) के तहत अगर टीम आवंटित समय में तय ओवर गेंदबाजी करने में विफल रहती है तो खिलाड़ियों पर हर ओवर के लिए उनकी मैच फीस का 20 प्रतिशत जुमार्ना लगाया जाता है।

इसके अलावा आईसीसी पुरुष विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के अनुच्छेद 16.11 के अनुसार टीम को तय समय में ओवर पूरा करने में विफल रहने पर प्रत्येक ओवर के लिए एक अंक का दंड दिया जाता है। कप्तान बावुना ने इस आरोप को स्वीकार कर लिया है, इसलिए इसकी औपचारिक सुनवाई की जरूरत नहीं पड़ी।

पीकेएल : प्ले ऑफ में अपनी दावेदारी ठोकने के लिए तैयार यूपी योद्धा

बेंगलुरू। पिछले 5 मैचों में से 4 में अजेय रहने वाली और एक मैच ड्रॉ खेलने वाली जीएमआर समूह की पीकेएल खेलने वाली फ्रेंचाइजी यूपी योद्धा 23 जनवरी, 2022 को हरियाणा स्टीलर्स के खिलाफ अपनी जीत की गति को जारी रखने का लक्ष्य लेकर मैट पे उतरेगी । अंक तालिका में चौथे स्थान पर काबिज योद्धा छठे स्थान पर मौजूद हरियाणा स्टीलर्स के खिलाफ भिड़ेंगे।

पिछली बार दोनों ने आपसी मुकाबले में रोमांचक ड्रॉ खेला था। सुरेंद्र गिल के 14 अंकों ने यूपी योद्धा को खेल में बने रहने और स्कोर को बराबर रखने में मदद की

थी। सांख्यिकीय रूप से अपनी पीकेएल यात्रा में, दोनों पक्षों ने एक-दूसरे को दो-दो बार हराया है और एक बार ड्रॉ किया है। योद्धा गत चैंपियन, बंगाल वारियर्स के खिलाफ 40-35 की जीत के बाद मैच में उतरेंगे वहीं हरियाणा स्टीलर्स पहले स्थान पर रहे दबंग दिल्ली के.सी. के खिलाफ 33-36 की जीत के साथ खेलेंगे। यह मैच के दिलचस्प होने की उम्मीद है क्योंकि दोनों टीमें अपनी जीत की गति को बनाए रखने और प्ले-ऑफ में जगह बनाने की अपनी संभावनाओं को बेहतर बनाने की कोशिश करेंगी।

मैच से पहले यूपी योद्धा के मुख्य कोच जसवीर सिंह ने कहा कि, ह्लमैं टीम के हालिया प्रदर्शन से खुश हूं लेकिन हमें इसे बनाए रखने के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी। आगे हमारे पास एक मजबूत प्रतिद्वंद्वी है और हमें अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की जरूरत है। प्ले-ऑफ में जगह बनाए रखने के लिए अब हर मैच महत्वपूर्ण है और लड़के इससे अच्छी तरह वाकिफ हैं। हम अपना सर्वश्रेष्ठ देंगे और उम्मीद करते हैं कि मैच का अंत हमारे पक्ष में 5 अंकों के साथ होगा।"

मनीष की शानदार गेंदबाजी, शाकुम्भरी ने जीता मैच

लखनऊ। श्रीरामचंद्र शर्मा मेमोरियल क्रिकेट प्रतियोगिता में आज शाकुम्भरी क्रिकेट क्लब और स्टैंडर्ड क्रिकेट क्लब के बीच मैच खेला गया। इसमें मनीष कश्यप के शानदार बल्लेबाजी से शाकुंभरी ने पांच विकेट से मैच को जीत लिया। शाकुंभरी ने टास जीतकर पहले क्षेत्ररक्षण का फैसला लिया। स्टैंडर्ड की टीम पहले बल्लेबाजी करते हुए 31वें ओवर में 127 रन बनाकर आल आउट हो गयी। इसमें सर्वाधिक 58 रन शिवम सिंह ने बनाये। वहीं ओपन सूर्यांश 14 बाल गवांकर शून्य पर ही पवेलियन वापस लौट गये। शाकुंभरी के गेंदबाज मनीष कश्यप ने चार मेडेन ओवर फेंकते हुए मात्र 20 रन देकर चार विकेट झटके।

आईपीएल नीलामी में नहीं होंगे गेल, स्टार्क, स्टोक्स, वोक्स, सैम कुरेन और आर्चर

नई दिल्ली। वेस्टइंडीज के सलामी बल्लेबाज क्रिस गेल, ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज मिशेल स्टार्क और इंग्लैंड के हरफनमौला खिलाड़ी बेन स्टोक्स ने आगामी इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2022 से पहले होने वाले खिलाड़ियों के मेगा ऑक्शन के लिए खुद को पंजीकृत नहीं किया है।

ईएसपीएनक्रिकइंफो की एक रिपोर्ट के अनुसार, जोफ्रा आर्चर, क्रिस वोक्स और सैम कुरेन भी नीलामी के लिए उपलब्ध नहीं हैं। वहीं, ऑस्ट्रेलिया के सलामी बल्लेबाज डेविड वार्नर, भारत के ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन, वेस्टइंडीज के पूर्व हरफनमौला खिलाड़ी ड्वेन ब्रावो ने अपना आधार मूल्य 2 करोड़ रुपये रखा है। ऑस्ट्रेलिया के हरफनमौला खिलाड़ी मिशेल मार्श, भारत के खिलाड़ी श्रेयस अय्यर, शिखर धवन, ईशान किशन, सुरेश रैना ने भी अपना आधार मूल्य 2 करोड़ रुपये रखा है।अन्य खिलाड़ी, जिन्होंने अपना आधार मूल्य दो

करोड़ रुपए रखा है, उनमें पैट कमिंस (ऑस्ट्रेलिया), शाकिब अल हसन (बांग्लादेश), ट्रेंट बोल्ट (न्यूजीलैंड), स्टीव स्मिथ (ऑस्ट्रेलिया), क्विंटन डी कॉक (दक्षिण अफ्रीका) और कैगिसो रबाडा (दक्षिण अफ्रीका) शामिल हैं। भारत के हरफनमौला खिलाड़ी शाहरुख खान, जिन्होंने घरेलू क्रिकेट में सभी को प्रभावित किया है, ने अपना आधार मूल्य 20 लाख रुपए रखा है, हालांकि नीलामी में उन्हें इससे ज्यादा राशि मिलने की उम्मीद है।

अमित मिश्रा, ईशांत शर्मा, एरोन फिंच, इयोन मॉर्गन, डेविड मालन, टिम साउथी, जेम्स नीशम , अजिंक्य रहाणे, कुलदीप यादव, टी नटराजन, वानिंदु हसरंगा, एडेन मार्कराम और तबरेज शम्सी ने अपना आधार मूल्य 1.5 करोड़ रुपये रखा है। आईपीएल की नीलामी 12 और 13 फरवरी को बेंगलुरु में होगी।

एशिया कप : भारतीय महिला हॉकी टीम ने मलेशिया को 9-0 से हराया

मस्कट। महिला हॉकी एशिया कप में अपने अभियान की शानदार शुरूआत करते हुए भारतीय टीम ने मलेशिया के खिलाफ 9-0 की शानदार जीत दर्ज की।

शुक्रवार रात खेले गए इस मुकाबले में भारत के लिए वंदना कटारिया (8', 34'), नवनीत कौर (15', 27') और शर्मिला (46', 59) ने दो-दो व दीप ग्रेस एक्का (10'), लालरेम्सियामी (38') और मोनिका (40') ने 1-1 गोल किए। सविता की अगुवाई में गत चैंपियन ने पहले क्वार्टर में तेज-तर्रार सेट-प्ले के साथ आक्रामक शुरूआत की। पहला गोल मैच के 8वें मिनट में अनुभवी फॉरवर्ड वंदना ने नेहा गोयल की स्मार्ट असिस्ट की बदौलत किया। भारत

के लिए दूसरा गोल 10वें मिनट में पेनल्टी के जरिए दीप ग्रेस एक्का ने किया। मैच के 15वें मिनट में नवनीत कौर ने भारत के लिए तीसरा गोल किया। इसके बाद 27वें मिनट में नवनीत ने एक और गोल कर भारत को 4-0 की बढ़त दिला दी। मध्यांतर तक भारतीय टीम 4-0 से आगे रही। मध्यांतर के बाद मैच के 34वें मिनट में वंदना ने मैच का अपना दूसरा गोल करते हुए भारत की बढ़त 5-0 कर दी। चार मिनट बाद ही 38वें मिनट में लालरेम्सियामी ने भारत के लिए छठां गोल किया, दो मिनट बाद ही मैच के 40वें मिनट में मोनिका ने भारत के लिए सातवां गोल किया। इसके बाद मैच के 46 वें और 59वें मिनट में शर्मिला ने दो गोल कर भारत को 9-0 से बढ़त दिला दी और यही स्कोर निर्णायक साबित हुआ।

महिला एशेज : बारिश के कारण इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के बीच दूसरा टी-20 रद्द

एडिलेड। महिला एशेज के तहत इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के बीच एडिलेड ओवल में आज खेला जा रहा दूसरा टी-20 मैच बारिश के कारण रद्द कर दिया गया। आज मैच में केवल 4.1 ओवर फेंके गए और इन ओवरों में इंग्लैंड ने बिना किसी नुकसान के 25 रन बनाए।

बता दें कि ताहलिया मैकग्रा के हरफनमौला प्रदर्शन और बल्ले से मेग लैनिंग के उत्साही प्रदर्शन ने ऑस्ट्रेलिया ने तीन मैचों की श्रृंखला के पहले टी 20 में गुरुवार को इंग्लैंड को नौ विकेट से हरा दिया था। पहले टी-20 मैच में टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी इंग्लैंड की टीम ने डेनियल व्याट के 70 रनों की बेहतरीन अर्धशतकीय पारी की बदौलत 4 विकेट खोकर 169 रन बनाए थे। जवाब में ऑस्ट्रेलिया ने महज 26 के योग पर अपना पहला विकेट गंवा दिया था।

एलिसे हेली 7 रन बनाकर पवेलियन लौट चुकी थीं। यहां से कप्तान मैग लेनिंग ने ताहिला मैकग्रा के साथ दूसरे विकेट के लिए अटूट 144 रन की साझेदारी कर टीम को जीत दिला दी।

आईपीएल 2022 : प्लेयर ऑक्शन के लिए 1,214 खिलाड़ियों ने कराया पंजीकरण

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2022 के लिए होने वाले खिलाड़ियों की नीलामी के लिए 1214 खिलाड़ियों ने पंजीकरण कराया है, जिसमें 896 भारतीय और 318 विदेशी खिलाड़ी शामिल हैं। आईपीएल 2022 के लिए मेगा ऑक्शन 12 और 13 फरवरी को बेंगलुरु में होगा। दो दिवसीय मेगा नीलामी में 10 टीमें विश्व क्रिकेट की कुछ बेहतरीन प्रतिभाओं के लिए बोली लगा रही हैं। खिलाड़ियों की सूची में 270 कैप्ड, 903 अनकैप्ड और 41 एसोसिएट खिलाड़ी शामिल हैं।

नीलामी में अफगानिस्तान के 20, ऑस्ट्रेलिया के 59, बांग्लादेश के 9, इंग्लैंड के 30, आयरलैंड के तीन, न्यूजीलैंड के 29, दक्षिण अफ्रीका के 48, श्रीलंका के 36, वेस्टइंडीज के 41,जिम्बाब्वे के 2, भूटान का 1, नामिबिया के 5,नेपाल के 15,नीदरलैंड्स का 1, ओमान के तीन अमेरिका के 14, स्कॉटलैंड और यूएई के 1-1 खिलाड़ी शामिल हैं।

खिलाड़ियों की नीलामी से पहले कुल 33 खिलाड़ियों को रिटेन/चुना गया है। मौजूदा 8 आईपीएल फ्रेंचाइजी ने कुल 27 खिलाड़ियों को रिटेन किया है जबकि 2 नई आईपीएल टीमों ने नीलामी से पहले 6 खिलाड़ियों को चुना है। जो इस प्रकार है-

चेन्नई सुपर किंग्स- रविन्द्र जडेजा, महेन्द्र सिंह धोनी, मोईन अली, ऋतुराज गायकवाड़।

दिल्ली कैपिटल्स- रिषभ पंत, अक्षर पटेल, पृथ्वी शॉ, एनरिक नॉर्टजे।

कोलकाता नाईट राइडर्स- आंद्रे रसल, वरूण चक्रवर्ती, वेंकटेश अय्यर, सुनील नरेन।

मुंबई इंडियंस- रोहित शर्मा, जसप्रीत बुमराह, सूर्यकूमार यादव, किरोन पोलार्ड।

पंजाब किंग्स- मयंक अग्रवाल, अर्शदीप सिंह।

राजस्थान रॉयल्स- संजू सैमसन, जोस बटलर,यशस्वी जायसवाल।

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू- विराट कोहली, ग्लेन मैक्सवेल, मोहम्मद सिराज।

सनराइजर्स हैदराबाद- केन विलियमसन, अब्दुल समद, उरमान मलिक।

टीम अहमदाबाद- हार्दिक पांड्या, राशिद खान, शुभमन गिल।

टीम लखनऊ- केएल राहुल, मार्कस स्टॉयनिस,रवि बिश्नोई।

केएल राहुल के नेतृत्व कौशल से बहुत प्रभावित हूं : संजीव गोयनका

मुंबई। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में लखनऊ फ्रेंचाइजी के मालिक संजीव गोयनका ने कहा है कि वह केएल राहुल के नेतृत्व कौशल से बहुत प्रभावित हैं। लखनऊ ने आईपीएल 2022 के लिए केएल राहुल (17 करोड़ रुपये), मार्कस स्टोइनिस (9.2 करोड़ रुपये) और रवि बिश्नोई (4 करोड़ रुपये) को चुना है। राहुल टीम की कप्तानी करेंगे। एंडी फ्लावर को पहले ही लखनऊ फ्रैंचाइजी का कोच बनाया जा चुका है, जबकि भारत के पूर्व बल्लेबाज गौतम गंभीर फ्रैंचाइजी के मेंटर के रूप में काम करेंगे।

स्टार स्पोर्ट्स के शो 'आईपीएल सिलेक्शन डे' पर गोयनका ने कहा, "हां, केएल कप्तान होगा। मैं केएल की न केवल बल्लेबाजी और विकेटकीपिंग क्षमताओं से बल्कि उसके नेतृत्व कौशल से बहुत प्रभावित हुआ हूं। वह विकसित हो रहा है, वह बढ़ रहा है, वह एक खिलाड़ी के रूप में परिपक्व हो रहा है, एक कप्तान के रूप में वह काफी सफल होगा।"

उन्होंने कहा, " मुझे पूरा विश्वास है कि वह एक अभूतपूर्व कप्तान के रूप में उभरेंगे, और उनके पास सफल होने के लिए सब कुछ है।"

आईपीएल 2022 के लिए तीन ड्राफ्ट पिक्स के बारे में बात करते हुए, गोयनका ने कहा, "कई चीजें थीं। हम न केवल एक या दो सीजन के लिए एक टीम बनाने पर विचार कर रहे थे, जैसा कि हमने पुणे के मामले में किया था, बल्कि वास्तव में, इसके लिए नींव का निर्माण कर रहे थे। एक टीम, जो कई वर्षों तक सफलतापूर्वक प्रतिस्पर्धा करेगी। हम एक से अधिक पहलुओं वाले खिलाड़ियों की भी तलाश कर रहे थे, जिस पर राहुल खरे उतरे, वह न केवल एक उत्कृष्ट बल्लेबाज हैं बल्कि एक महान विकेटकीपर भी हैं।"

उन्होंने आगे कहा, "मार्कस स्टॉयनिस एक महान फिनिशर, एक अच्छे गेंदबाज और एक अभूतपूर्व क्षेत्ररक्षक है। रवि स्पिन विभाग के लिए एक अद्वितीय आयाम लाता है और एक असाधारण क्षेत्ररक्षक है। इसलिए, हमने ऐसे खिलाड़ियों की तलाश की, जो एक से अधिक काम कर सकें; ऐसे खिलाड़ी जो कई वर्षों तक फ्रेंचाइजी के साथ रहें।" आईपीएल की दो नई टीमों - लखनऊ फ्रेंचाइजी के लिए संजीव गोयनका आरपीएसजी ग्रुप और सीवीसी कैपिटल की अहमदाबाद टीम को भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) से औपचारिक मंजूरी मिल गई थी। औपचारिक मंजूरी आईपीएल संचालन परिषद की बैठक के बाद दी गई।

कप्तान के रूप में हार्दिक पांड्या के साथ काम करने को लेकर उत्सुक हूं : गैरी कर्स्टन

मुंबई। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में अहमदाबाद फ्रेंचाइजी के बल्लेबाजी कोच और मेंटर गैरी कर्स्टन ने कहा है कि एक युवा और नए कप्तान के रूप में हार्दिक पांड्या के साथ काम करने को लेकर उत्सुक हूं। अहमदाबाद ने हार्दिक पांड्या (15 करोड़ रुपये), राशिद खान (15 करोड़ रुपये) और शुभमन गिल (8 करोड़ रुपये) को चुना है। विक्रम सोलंकी को अहमदाबाद के क्रिकेट निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया है, जबकि हार्दिक पांड्या फ्रेंचाइजी का नेतृत्व करेंगे। गैरी कर्स्टन अहमदाबाद फ्रेंचाइजी के बल्लेबाजी कोच और मेंटर के रूप में काम करेंगे जबकि आशीष नेहरा को मुख्य कोच के रूप में नियुक्त किया गया है।

कर्स्टन ने स्टार स्पोर्ट्स के शो 'आईपीएल सेलेक्शन डे पर कहा, "मैं एक युवा और नए कप्तान के रूप में हार्दिक के साथ काम करने के लिए उत्सुक हूं। मुझे लगता है कि वह वास्तव में आने और योजना बनाने और यह दिखाने के लिए प्रेरित होगा कि वह एक कप्तान के रूप में खेल के इस स्तर पर क्या करने में सक्षम है। वह एक महान खिलाड़ी है।"

उन्होंने कहा, "मुझे लगता है कि वह इस टूर्नामेंट के महत्व को समझता है। मैंने जो सुना है वह यह है कि वह नेतृत्व के दृष्टिकोण से टीम के साथ खेलने के लिए उतावला है। इसलिए, मुझे लगता है कि इस तरह के स्तर के एक बेहतरीन खिलाड़ी का होना हमारे लिए वास्तव में रोमांचक है।"

राशिद और गिल को चुनने के बारे में पूछे जाने पर, कर्स्टन ने कहा, "मैं वास्तव में उन दोनों से उत्साहित हूं। वे दोनों उच्च प्रदर्शन करने वाले हैं - राशिद खान दुनिया भर में गए हैं, उन्होंने हर कहीं खुद को साबित किया है, इसलिए यह हमारे लिए एक अविश्वसनीय करार है। मैं उनके साथ काम करने के लिए बहुत उत्साहित हूं।"

उन्होंने कहा, "गिल एक शानदार खिलाड़ी है, जिसे मेरे विचार में, भारत के लिए खेलना चाहिए। वह इसके लायक हैं। खेल के लिए महान स्वभाव और वृत्ति के साथ, वह अपने दम पर मैच विजेता हो सकते हैं। बल्लेबाजी के नजरिए से, मैं उसके साथ काम करने और उसे आईपीएल सीजन में सर्वश्रेष्ठ देने में मदद करने के लिए उत्सुक हूं।"

आईपीएल की दो नई टीमों - लखनऊ फ्रेंचाइजी के लिए संजीव गोयनका आरपीएसजी ग्रुप और सीवीसी कैपिटल की अहमदाबाद टीम को भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) से औपचारिक मंजूरी मिल गई थी।

विदेश संदेश

चीन पर मिल कर नकेल कसेंगे भारत, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और जापान

टोक्यो। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चीन को घेरने के लिए दुनिया के चार प्रमुख देशों अमेरिका, भारत, ऑस्ट्रेलिया और जापान संयुक्त मुहिम चलाएंगे। जापान की राजधानी टोक्यो में प्रस्तावित द क्वाडिलैटरल सिक्योरिटी डायलॉग (क्वाड) शिखर सम्मेलन में इन चारों देशों के नेता चीन पर मिलकर नकेल कसने की रणनीति बनाएंगे। जापान के प्रधानमंत्री किशिदा फुमियो ने इस वर्ष मई में क्वाड शिखर सम्मेलन आयोजन की उम्मीद जताई है। जापान के प्रधानमंत्री किशिदा फुमियो ने बताया कि इस बार की क्वाड सम्मेलन की बैठक ऑस्ट्रेलिया में होने वाले आम चुनाव के बाद होने की संभावना है। ऑस्ट्रेलिया में मई के तीसरे सप्ताह में आम चुनाव होने हैं, ऐसे में क्वाड की बैठक मई के अंतिम सप्ताह में होने की उम्मीद है। अधिकारियों ने बताया कि सभी के लिए सुविधाजनक तिथियों को अंतिम रूप दिए जाने के बाद ही जापान द्वारा औपचारिक आमंत्रण भेजे जाएंगे। इससे पहले क्वाड देशों के विदेश मंत्रियों और शेरपाओं की एक बैठक में भी शिखर सम्मेलन का एजेंडा तय होने की उम्मीद जताई जा रही है। इस बैठक में अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और भारत के नेता भाग लेंगे। बताया गया कि, इस बैठक में आर्थिक सुरक्षा के साथ चीन के बढ़ते आधिपत्य को लेकर चर्चा होना अवश्यंभावी है। इसके अलावा इस बैठक में स्वतंत्र इंडो-पैसिफिक, कोरोना और जलवायु परिवर्तन पर चर्चा होने की उम्मीद है। पिछला क्वाड शिखर सम्मेलन 24 सितंबर, 2021 को वाशिंगटन में आयोजित किया गया था। वर्ष 2007 में शुरू क्वाड में चार देश अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, भारत व जापान शामिल हैं।

अमेरिका के अलास्का में भूकंप के झटके, सुनामी का खतरा नहीं

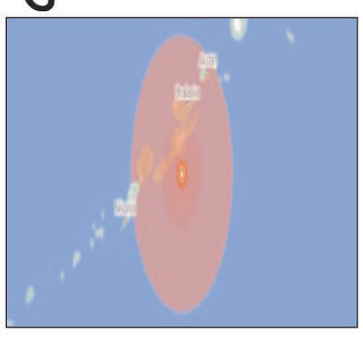

अलास्का। अमेरिकी राज्य अलास्का में तेज भूकंप के झटके आए हैं। रिक्टर स्केल पर 6.2 तीव्रता वाले झटकों से लोग डर गए, हालांकि मौसम विभाग ने सुनामी के खतरे से इनकार किया है। पश्चिमी अमेरिका के राज्य अलास्का में समुद्र तट के द्वीप अनालास्का में शनिवार को तेज भूकंप के झटके महसूस किये गए। यूनिवर्सिटी ऑफ अलास्का फेयरबैंक्स के अलास्का अर्थक्वेक सेंटर के वैज्ञानिकों ने बताया कि भूकंप के झटकों की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 6.2 मापी गयी है। इस तेज भूकंप का केंद्र अलास्का के एंड्रियानॉफ द्वीप समूह से 681 किलोमीटर दूर पूर्वोत्तर में था। स्थानीय समय के अनुसार रात 8 बजकर 17 मिनट पर भूकंप के ये झटके महसूस किये गए। यूनाइटेड स्टेट जियोलॉजिकल सर्वे (यूएसजीएस) की ओर से कहा गया कि अनालास्का से 74 किलोमीटर दक्षिण तक ये झटके महसूस किये गए। भूकंप के झटकों की गहराई का आंकलन तीन किलोमीटर किया गया है। झटके इतनी तेज थे कि लोगों को सुनामी का डर सताने लगा था। द यूनाइटेड स्टेट सुनामी वार्निंग सिस्टम ने कहा कि यह महज भूकंप के कारण उत्पन्न डर था। अधिकारियों ने सुनामी की संभावना से साफ इनकार किया है। इसीलिए सुनामी से संबंधित चेतावनी भी नहीं जारी की गयी है। समुद्रतटीय द्वीप अनालास्का में जिस स्थान पर भूकंप के झटके महसूस किये गए हैं, वह मछली पकड़ने का एक बड़ा केंद्र माना जाता है।

सीसीटीवी फुटेज में लाहौर विस्फोट के तीन संदिग्धों की हुई पहचान

लाहौर। पाकिस्तान के लाहौर स्थित बेहद व्यस्त बाजार में अनारकली बाजार में हुए बम विस्फोट मामले में सीसीटीवी फुटेज में तीन संदिग्धों की पहचान शुक्रवार को की गई है। यह जानकारी स्थानीय पुलिस ने दी। पुलिस को संदेह है कि इन्हीं लोगों ने शक्तिशाली बम विस्फोट की घटना को अंजाम दिया था। लाहौर स्थित अनारकली बाजार भारतीय उत्पादों की बिक्री के लिए है जहां गुरुवार को पान मंडी के पास गुरुवार दोपहर बाद 1:45 बजे हुए विस्फोट में तीन लोगों की मौत हो गई थी और 28 अन्य घायल हो गए थे। विस्फोट में कई मोटरसाइकिलें, वेंडर स्टाल क्षतिग्रस्त हो गए और दुकानों एवं भवनों की खिड़कियों के कांच भी टूट गए। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने शुक्रवार को बताया कि सीसीटीवी फुटेज में तीन संदिग्धों में से एक को विस्फोटकों से भरा बैग रखते देखा गया है। अन्य दो एक-दूसरे से तालमेल बनाए रख रहे थे। जल्दी ही पुलिस संदिग्धों तक पहुंच जाएगी। विस्फोट में घायल कराची निवासी नौ साल के बच्चे अबसार की जान चली गई। उसके चाचा ने कहा कि अस्पताल में उसे उचित इलाज मुहैया नहीं कराया जा सका।

प्रधानमंत्री इमरान खान ने वारदात की निंदा करते हुए, घायलों को बेहतर इलाज उपलब्ध कराने के निर्देश दिए थे। उन्होंने पंजाब सरकार से घटना के संबंध में रिपोर्ट भी मांगी है। बलूचिस्तान की आजादी की वकालत करने वाले एक नवगठित संगठन ने विस्फोट की जिम्मेदारी ली है।

लाहौर के उपायुक्त उमर शेर चत्था ने बताया कि विस्फोटक को एक बैंक क्षेत्र में मोटरसाइकिल में रखा गया था। पंजाब के मुख्यमंत्री उस्मान बुजदर ने पुलिस महानिरीक्षक को घटना की रिपोर्ट पेश करने के निर्देश दिए हैं।

यमन की जेल पर हमले से दुखी संयुक्त राष्ट्र महासचिव, वार्ता पर दिया जोर

न्यूयार्क। संयुक्त अरब अमीरात और सऊदी अरब के नेतृत्व वाली अरब गठबंधन सेना द्वारा हाउती विद्रोहियों के सफाये के लिए यमन की जेल पर किए गए हमले से संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुटेरेश दुखी हैं। उन्होंने घटना की निंदा करते हुए हिंसाग्रस्त पक्षों से वार्ता पर जोर दिया है।

यमन की जेल पर हमले के बाद संयुक्त राष्ट्र महासचिव के प्रवक्ता स्तेफान दुजैरिक ने महासचिव की ओर से एक बयान जारी किया, जिसमें शुक्रवार को हुई बमबारी पर क्षोभ जताया गया है। वक्तव्य में कहा गया है कि सऊदी अरब के नेतृत्व में गठबंधन सेना यमन में अंतरराष्ट्रीय मान्यता प्राप्त सरकार के समर्थन में, विद्रोही अन्सार अल्लाह गुट (हाउती लड़ाकों) से जूझ रही है। वर्ष 2015 से हाउती लड़ाकों का राजधानी सना सहित देश के अधिकतर इलाकों पर नियंत्रण है। इस सप्ताह सोमवार को हाउती लड़ाकों ने गठबंधन के साझीदार संयुक्त अरब अमीरात पर हमला किया था, जिसके बाद से हिंसक टकराव में तेजी आयी है। बताया गया है कि इस कार्रवाई में बच्चे भी हताहत हुए हैं। महासचिव ने सभी पक्षों को ध्यान दिलाया है कि अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून के अंतर्गत, आम नागरिकों एवं नागरिक प्रतिष्ठानों को निशाना बनाया जाना वर्जित है। महासचिव ने इन घटनाओं की तुरन्त, प्रभावी और पारदर्शी जांच कराए जाने का आग्रह किया है, ताकि जवाबदेही सुनिश्चित की जा सके। उन्होंने युद्धरत पक्षों से जल्द से जल्द हिंसा में कमी लाने को कहा है। महासचिव ने कहा है कि यह राजनैतिक प्रक्रिया को आगे बढ़ाने और हिंसक संघर्ष का, वार्ता के जरिये समाधान ढूंढने के लिए महत्वपूर्ण है।

चार भारतीयों की अमेरिका-कनाडा सीमा पर ठंड से मौत, विदेश मंत्री जयशंकर ने मांगी रिपोर्ट

टोरंटो। चार भारतीयों के अमेरिका-कनाडा सीमा पर ठंड से मौत हो गई है। जानकारी के अनुसार कनाडा क्षेत्र में इन लोगों की मौत ठंड के कारण बताया जा रहा है, मरने वालों में एक नवजात शिशु भी बताया जा रहा है। कनाडा इलाके में हुई यह घटना मानव तस्करी से भी जुड़ी हो सकती है। फिलहाल भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर ने मामले की जानकारी के लिए वहां के राजदूतों से रिपोर्ट मांगी है।

मैनटोबा रायल कैनेडियन माउंटेड पुलिस (आरसीएमपी) ने गुरुवार को बताया कि चार शवों में दो वयस्क, एक किशोर और एक नवजात का है। अमेरिका-कनाडा सीमा पर बुधवार को कनाडा की तरफ शव पाए गए। इधर, अमेरिकी अधिकारियों के अनुसार संभवत वे भारत से आए थे और अमेरिका में दाखिल होने का प्रयास कर रहे थे। आरसीएमपी सहायक आयुक्त जेन मैकलैची ने कहा कि मैं जो कुछ साझा करने जा रही हूं, वह कई लोगों के लिए असहनीय हो सकता है। यह दिल दहला देने वाली घटना है। प्रारंभिक जांच में जो सामने आया है उससे पता चलता है कि कड़ाके की सर्दी के चलते सभी की मौत हुई है। भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने ट्वीट कर कहा कि कनाडा-अमेरिका सीमा पर एक शिशु सहित 4 भारतीय नागरिकों की मौत होने की रिपोर्ट से हैरान हूं। अमेरिका और कनाडा में अपने राजदूतों से स्थिति पर तत्काल प्रतिक्रिया देने को कहा है। मामले का संज्ञान लेते हुए कनाडा में भारतीय राजदूत अमर बिसारिया ने कहा कि भारतीय कांसुलर की टीम घटनास्थल पर जा रही है। उन्होंने विदेश मंत्री एस जयशंकर के ट्वीट को कोट करते हुए लिखा कि यह एक दुखद त्रासदी है। सहयोग और मदद करने के लिए टोरंटो से एक भारतीय कांसुलर टीम मैनिटोबा जा रही है। हम इन परेशान करने वाली घटनाओं की जांच के लिए कनाडा के अधिकारियों के साथ काम करेंगे।

घाना में विस्फोट, 20 की मौत

अक्करा। घाना के पश्चिमी क्षेत्र के खनन पदार्थ में विस्फोट होने के कारण कम से कम 20 लोगों की मौत हो गयी है। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संगठन के उप महानिदेशक सेजी साजी ने बताया कि विस्फोट खनन विस्फोटक को ले जा रहे एक ट्रक की मोटरसाइकिल से टकराने के बाद हुआ। साजी ने कहा, "मोटरसाइकिल ट्रक के रास्ते में आ गयी और उससे टकरा गई, जिसके कारण चिंगारी निकली तथा विस्फोट हो गया।" अधिकारी ने कहा कि विस्फोट इतना जबरदस्त था कि उसके कारण करीब 500 आश्रय गृह नष्ट हो गए तथा आसपास के कई लोगों की मौत हो गयी। उन्होंने कहा कि शवों को पास के मुर्दाघर में रख दिया गया है और विस्थापित परिवार एक चर्च में अस्थायी आश्रय ले रहे हैं।

लावरोव से चर्चा करने के लिए जिनेवा पहुंचे ब्लिंकन

वाशिंगटन। अमेरिका के विदेश मंत्री एंटोनी ब्लिंकन पूर्वी यूरोप में सुरक्षा के मुद्दे पर रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव के साथ चर्चा करने के लिए जिनेवा पहुंच गए हैं। अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल के साथ यात्रा कर रहे सीएनएन न्यूज चैनल के संवाददाता ने यह जानकारी दी है। श्री ब्लिंकन और श्री लावरोव यूक्रेन और उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) की पूर्व की ओर विस्तार करने की योजना से संबंधित सुरक्षा मामलों पर चर्चा करेंगे, जिसे रूस अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा मानता है।

यमन में इंटरनेट सेवा ठप

साना। सऊदी के नेतृत्व वाले गठबंधन की ओर से बंदरगाह शहर अल हुदायदाह में किये गये हवाई हमले के बाद पूरे यमन में इंटरनेट सेवा ठप हो गयी है। नेटब्लॉक्स की यातायात निगरानी सेवा ने यह जानकारी दी है। नेटब्लॉक्स के मुताबिक हवाई हमला दूरसंचार कंपनी की इमारत पर हुआ। उधर, गठबंधन सेना ने पुष्टि की है कि उसने अल हुदायदाह में हवाई हमले किए है।

उल्लेखनीय है कि यमन में कई वर्षों से राष्ट्रपति अब्दराबुह मंसूर हादी के नेतृत्व में सरकारी बलों और हौती विद्रोहियों के बीच संघर्ष चल रहा है। वहीं मार्च 2015 से सऊदी के नेतृत्व वाला अरब गठबंधन, श्री हादी की सेनाओं के सहयोग से काम कर रहा है और विद्रोहियों के खिलाफ हवाई, जमीन और समुद्री अभियान चला रहा है।

यमन की जेल पर सऊदी गठबंधन सेना का हमला, 100 से अधिक जानें गयीं

सना। संयुक्त अरब अमीरात के अबू धाबी में बीते दिनों हाउदी विद्रोहियों के हमले और जवाबी कार्रवाई में हाउदी कमांडर के मारे जाने के बाद अब बड़ी हिंसा की घटना सामने आयी है। संयुक्त अरब अमीरात और सऊदी अरब के नेतृत्व वाली अरब गठबंधन सेना ने यमन की जेल पर जोरदार हमला किया, जिसमें सौ से अधिक लोगों की मौत हो गयी है। संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) की राजधानी अबू धाबी स्थित अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर बीते दिनों हाउदी विद्रोहियों ने हमला कर दिया था। इस ड्रोन हमले में दो भारतीयों सहित तीन लोगों की मौत हुई थी। इसके बाद संयुक्त अरब अमीरात और सऊदी अरब के नेतृत्व वाली अरब गठबंधन सेना ने यमन की राजधानी साना के उत्तरी इलाके पर जोरदार हवाई हमला किया था, जिसमें हाउदी कमांडर मेजर जनरल अब्दुल्लाह कासिम अल जुनैद की मौत हो गयी। अब यमन की जेल पर शुक्रवार को किए गए इस हमले के बाद सेना व विद्रोहियों के बीच तनाव बढ़ गया है। हमले के बाद विद्रोहियों ने वीडियो फुटेज भी जारी किए, जिसमें मलबे में दबे शव व हताहत पुलिस व सेना के जवान नजर आ रहे हैं। यह हवाई हमला यमन के मध्य शहर सादा में किया गया। हमले में जेल की इमारत तबाह हो गई। जिस वक्त मिसाइल से हमला किया गया तब जेल के समीप ही बच्चे खेल रहे थे। हमले में बच्चों के हताहत होने की खबर नहीं है। यमन में रेडक्रास की अंतरराष्ट्रीय समिति के प्रवक्ता बशीर उमर ने सौ से अधिक लोगों की मौत होने की बात कही। उन्होंने कहा कि तमाम लोग घायल हैं और यह संख्या लगातार बढ़ रही है।

सीसीटीवी फुटेज में लाहौर विस्फोट के तीन संदिग्धों की हुई पहचान

लाहौर। पाकिस्तान के लाहौर स्थित बेहद व्यस्त बाजार में अनारकली बाजार में हुए बम विस्फोट मामले में सीसीटीवी फुटेज में शुक्रवार को तीन संदिग्धों की पहचान की गई है। यह जानकारी स्थानीय पुलिस ने दी। पुलिस को संदेह है कि इन्हीं लोगों ने शक्तिशाली बम विस्फोट की घटना को अंजाम दिया था। लाहौर स्थित अनारकली बाजार भारतीय उत्पादों की बिक्री के लिए है जहां गुरूवार को पान मंडी के पास गुरुवार दोपहर बाद 1:45 बजे हुए विस्फोट में तीन लोगों की मौत हो गई थी और 28 अन्य घायल हो गए थे।

विस्फोट में कई मोटरसाइकिलें, वेंडर स्टाल क्षतिग्रस्त हो गए और दुकानों एवं भवनों की खिड़कियों के कांच भी टूट गए। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने शुक्रवार को बताया कि सीसीटीवी फुटेज में तीन संदिग्धों में से एक को विस्फोटकों से भरा बैग रखते देखा गया है। अन्य दो एक-दूसरे से तालमेल बनाए रख रहे थे। जल्दी ही पुलिस संदिग्धों तक पहुंच जाएगी। विस्फोट में घायल कराची निवासी नौ साल के बच्चे अबसार की जान चली गई। उसके चाचा ने कहा कि अस्पताल में उसे उचित इलाज मुहैया नहीं कराया जा सका। प्रधानमंत्री इमरान खान ने वारदात की निंदा करते हुए, घायलों को बेहतर इलाज उपलब्ध कराने के निर्देश दिए थे। उन्होंने पंजाब सरकार से घटना के संबंध में रिपोर्ट भी मांगी है। बलूचिस्तान की आजादी की वकालत करने वाले एक नवगठित संगठन ने विस्फोट की जिम्मेदारी ली है। लाहौर के उपायुक्त उमर शेर चत्था ने बताया कि विस्फोटक को एक बैंक क्षेत्र में मोटरसाइकिल में रखा गया था। पंजाब के मुख्यमंत्री उस्मान बुजदर ने पुलिस महानिरीक्षक को घटना की रिपोर्ट पेश करने के निर्देश दिए हैं।

..तो इंसान के शरीर में लग जाएगी सूअर की किडनी- ब्रेन डेड शरीर पर प्रयोग सफल, अब क्लीनिकल ट्रायल की तैयारी

वाशिंगटन। वह दिन दूर नहीं जब किसी महिला या पुरुष की किडनी खराब होने पर किसी इंसान की ही किडनी का इंतजार खत्म हो जाएगा। वैज्ञानिक इंसान के शरीर में सूअर की किडनी प्रत्यारोपित करने की परियोजना पर काम कर रहे हैं। अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ अलबामा के वैज्ञानिकों ने इंसान के ब्रेन डेड शरीर में सूअर की दो किडनी प्रत्यारोपित करने में कामयाबी हासिल की है। अब चिकित्सक क्लीनिकल ट्रायल की तैयारी कर रहे हैं।

57 वर्ष के जिम पार्सन्स पिछले साल सितंबर में सड़क हादसे का शिकार हुए थे। इलाज की तमाम कोशिशों के बाद उन्हें ब्रेन डेड घोषित कर दिया गया था। चिकित्सकों ने पार्सन्स परिवार से बात की तो वे इस प्रयोग के लिए तैयार हो गए। इसके बाद जिम पार्सन्स को आनुवांशिक रूप से संशोधित (जेनेटिकली मोडीफाइड) सूअर की दो किडनी लगाई गयीं। ब्रेन डेड इंसान में प्रत्यारोपण के बाद भी किडनी ने ठीक प्रकार से काम किया और यूरीन का प्रवाह बनाए रखा। मानव शरीर ने किडनी को रिजेक्ट नहीं किया।

अफगानिस्तान में लड़कियों के स्कूल-कॉलेज खोलने पर तालिबान राजी

काबुल। अफगानिस्तान में अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही छात्राओं के लिए एक सकारात्मक खबर सामने आयी है। अफगानिस्तान की सत्ता संभाल रहे तालिबान ने अगले सत्र से लड़कियों के लिए स्कूल-कॉलेज खोलने पर सहमति जताई है। पिछले वर्ष अगस्त में अफगानिस्तान पर तालिबान के कब्जे के बाद से वहां लड़कियों के स्कूल, कॉलेज बंद चल रहे हैं। लड़कियों के सभी विद्यालय तो बंद हैं ही, अफगानिस्तान के 150 विश्वविद्यालय भी बंद चल रहे हैं। इन विद्यालयों, विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राएं लंबे समय से अपने स्कूल, कॉलेज दोबारा खोलने की मांग कर रही थीं। अब तालिबान ने अगले शैक्षिक सत्र से इन संस्थानों को खोलने पर सहमति जताई है।

चार भारतीयों की अमेरिका-कनाडा सीमा पर ठंड से मौत, विदेश मंत्री जयशंकर ने मांगी रिपोर्ट

टोरंटो। चार भारतीयों के अमेरिका-कनाडा सीमा पर ठंड से मौत होने की सूचना है। जानकारी के अनुसार कनाडा क्षेत्र में इन लोगों की मौत ठंड के कारण बताया जा रहा है, मरने वालों में एक नवजात शिशु भी बताया जा रहा है। कनाडा इलाके में हुई यह घटना मानव तस्करी से भी जुड़ी हो सकती है। फिलहाल भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर ने मामले की जानकारी के लिए वहां के राजदूतों से रिपोर्ट मांगी है। मैनटोबा रायल कैनेडियन माउंटेड पुलिस (आरसीएमपी) के मुताबिक चार शवों में दो वयस्क, एक किशोर और एक नवजात का है। अमेरिका-कनाडा सीमा पर बुधवार को कनाडा की तरफ शव पाए गए। इधर, अमेरिकी अधिकारियों के अनुसार संभवत वे भारत से आए थे और अमेरिका में दाखिल होने का प्रयास कर रहे थे। आरसीएमपी सहायक आयुक्त जेन मैकलैची ने कहा कि मैं जो कुछ साझा करने जा रही हूं वह कई लोगों के लिए असहनीय हो सकता है। यह दिल दहला देने वाली घटना है। प्रारंभिक जांच में जो सामने आया है उससे पता चलता है कि कड़ाके की सर्दी के चलते सभी की मौत हुई है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने ट्वीट कर कहा कि कनाडा-अमेरिका सीमा पर एक शिशु सहित 4 भारतीय नागरिकों की मौत होने की रिपोर्ट से हैरान हूं। अमेरिका और कनाडा में अपने राजदूतों से स्थिति पर तत्काल प्रतिक्रिया देने को कहा है। मामले का संज्ञान लेते हुए कनाडा में भारतीय राजदूत अमर बिसारिया ने कहा कि भारतीय कांसुलर की टीम घटनास्थल पर जा रही है। उन्होंने विदेश मंत्री एस जयशंकर के ट्वीट को कोट करते हुए लिखा कि यह एक दुखद त्रासदी है। सहयोग और मदद करने के लिए टोरंटो से एक भारतीय कांसुलर टीम मैनिटोबा जा रही है। हम इन परेशान करने वाली घटनाओं की जांच के लिए कनाडा के अधिकारियों के साथ काम करेंगे।

अमेरिकी गायिका मिलबेन ने कश्मीरी पंडितों के पलायन के दर्द को किया साझा

वाशिंगटन। कश्मीर में तीन दशक पहले पाकिस्तान समर्थित आतंकियों द्वारा वहां के पंडितों के साथ हुए अमानवीय व्यवहार और पलायन के लिए मजबूर करने को अमेरिका की अभिनेत्री और गायिका मैरी मिलबेन ने साझा करता हुए इसे बेहद दुखद और अमानवीय बताया है।

दुनिया भर में कश्मीर घाटी से विस्थापित पंडितों के समर्थन आयोजित कार्यक्रम में मिलबेन ने कहा कि उनकी प्रार्थना कश्मीर पंडितों के साथ है और आज भी दुनियाभर में धार्मिक उत्पीड़न जारी है ।ज्ञातव्य है कि 1990 में घाटी से कश्मीरी पंडितों के पलायन पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादियों द्वारा धमकियां देने तथा हत्याएं करने के कारण कश्मीरी पंडित समुदाय के लोगों को अपना घर और परिजनों को खोना पड़ा था। 39 साल की मिलबेन ने एक ट्वीट कर 'पलायन दिवस' को चिह्नित किया और कहा कि उनकी प्रार्थना समुदाय के साथ हैं। मिलबेन ने कहा, 'दुनिया भर में धार्मिक उत्पीड़न जारी है। आज हम पलायन दिवस की भयावहता को याद करते हैं। जब इस्लामी आतंकवादियों कश्मीर में नरसंहार और जातीय सफाया के कारण कश्मीरी पंडितों को पलायन करना पड़ा था। मेरी प्रार्थनाएं कश्मीरी पंडित समुदाय के साथ हैं, क्योंकि अब भी कई लोग अपने प्रियजन, घरों और सांस्कृतिक उपस्थिति के खोने का शोक मना रहे हैं।'

उन्होंने कहा कि एक वैश्विक शख्सियत के रूप में, वह हमेशा उनका, धार्मिक स्वतंत्रता तथा वैश्विक नीति का समर्थन करती रहेंगी, जो किसी भी धर्म की रक्षा करने के लिए जरूरी है। उन्होंने कहा, 'ईसाइयों का उत्पीड़न, यहूदी विरोधी भावना, यहूदियों के प्रति घृणा, हिंदुओं और अन्य लोगों के खिलाफ नरसंहार आज भी जारी है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
211019 से प्रकाशित
स्वामी श्री योगी सत्यम एवम्
योग सत्संग समिति द्वारा
विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज
से मुद्रित एवम् क्रियायोग
आश्रम अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
Title UPHIN 29506